बोधोदय

शंकर

अनुवाद : दिनेश आचार्य

नाचीज़ को अनिर्थंरम चटर्जी कहते है !

अमेरिका के पेरु हवाई अड्डे के डिपार्चर लाऊँज में त्रिभंगी मुद्रा बनाए बैठा हूँ। फिलहाल मेरा चेहरा देखकर लोगो को निश्चितता का सा भाव दिखलाई देगा। किसी की समझ मे नहीं आएगा कि मेरे अन्दर कौन-सा गुबार उठ चुका है, अब भी उठ रहा है।

एअरपोर्ट का सोफा काफ़ी नर्म है—उसी पर काफी घुमाई की वदौलत थके बदन को आसीन कर दिया है। श्रीअग ठीक किसी आँकडे जैसा दिखलाई दे रहा है। ज़मीन से सीधे ऊपर उठकर घुटनों के पास एक मोड है और दूसरा मोड है 'फीमरबोन' के पास।

हड्डी पसलियो के नामों की जानकारी रखना मेरा काम नहीं है। लेकिन अपने देश मे रहते एकबार बाथरूम मे पैर फिसल जाने से फीमर बोन की नोक टूट गयी। हाँ तो सुबह के वक्त हड्डी टूटी और यार लोगो ने बड़ा दिया कि शराब के नशे मे पैर फिसला है। कभी-कभार थोडी बहुत पीकर आनन्द भोग करता रहा हूँ लेकिन इसीलिए सुबह सवा सात बजे तक कितनी ह्विस्की चढ़ाई जा सकती है कि जिसके मारे होश-हवास खोकर टाँग ही तोड लूँ! इसके अलावा अपने राम ठहरे पुराने लेटलतीफ। इस अखिल विश्व में ऐसा कोई आकर्पण दिखलाई नहीं देता जिसके लिए सुबह के सात बजे ही अपनी मीठी नीद तोडकर चारपाई छोड दूँ। सुबह जल्दी उठने के लिए पूज्य पिताश्री नेही ने क्या कम कोशिशें की।

इस म्लेच्छ देश मे ख्वामख्वाह ही क्यो बेकार पिताश्री की पावन पुण्य स्मृति को पकडे खीचातानी कर रहा हूँ। वे बेचारे तो कब के उन

सब बाधाओं को पारकर परमधाम के लिए रवाना हो चुके है। देखा किस तरह एक बात मे से एक के बाद दूसरी बाते निकली जा रही है। कहाँ अपनी टाग का टूटना और कहाँ पूज्य पिताश्री हरेनचन्द्र चट्टोपाध्याय के श्रीमुख का उपदेशामृत।

हा तो कह रहा था, उसी टूटी फीमर मे कलकत्ता मेडीकल कालेज के हाऊस-सर्जन ने एक खासी कील पैठा दी। अब उसी मरम्मत की हुई टाग के बूते पर किस तरह दुनिया भर की खाक छानता फिर रहा हूँ। किसकी हिम्मत है कहे, कि इस भारतीय आदमी के अन्दर एक-दो इंच लम्बी मेड इन 'अमेरिका' कील घुसी हुई है। असल मे अब यह कील 'मै' हो गया हूँ अनिर्वाण चटर्जी कहने पर जो बासठ किलो वजनी चीज समझ मे आती है, अब वह कुछ ग्राम वजनी कील उसी का एक हिस्सा है।

इसी तरह और भी कई अदृश्य कीलें मेरे मन के बीच बिधी हुई है। बीच-बीच मे दर्द भी होता है, लेकिन वे सब बातें किससे कहूँ ?

एअरपोर्ट-सा एअरपोर्ट है। एक जमाने मे जब कलकत्ते का दमदम एअरपोर्ट देखा था तो आँखें फटने लगी थी। अब वही मन होता तो आँखो की पुतलियाँ अपने कोटरो मे से निकलकर मील भर दूर तक जा पहुँचती। एअरपोर्ट क्या जैसे पूरा का पूरा शहर है। गाड़ी से उतरने पर, पूरे आठ गेट पार करने के बाद अभीप्ट साउथ-गेट पहुँचने मे काफ़ी मेहनत करनी पडी।

अपने दोनो बैग एअरवेज़ के काउन्टर पर जमा कर दिए। दुनिया की सबसे ज्यादा तजुर्बेकार एअर लाइन्स की छोकरी भी काफ़ी तजुर्बेकार लग रही थी। मेरा लगेज नियम मुताबिक बीस किलोग्राम से ज़रा ज्यादा होने की वजह से सरचार्ज की बात उठाने जा रही थी। मैंने देवीजी की मेकअप से पुती आँखों की ओर अपनी नजरों का तीर छोड़ा। युवती काफ़ी रसिक थी मुस्कराहट से जवाब दिया। देखा सीने के पास सफ़ेद यूनिफ़ार्म पर सेफ्टीपिन से नाम अटका था—एलिज़ाबेथ।

अमरीकन कुमारी से कहा, 'हे सुन्दरी, परियाँ भी तुम्हारे पाँवों की धूल है।'

बडाई सुनकर किसका मन नही पसीजता ? खुश होकर छोकरी ने धन्यवाद दिया। सरचार्जवाली बात वही रह गयी। साथ ही मेरी ओर इस तरह से देखा कि क्या कहूँ। भाग्य से आसपास कोई प्रतिद्वन्द्वी छोकरा मौजूद नहीं था। होता तो उसकी छाती फुँकने लगती। लेकिन मेरा तो सीधा-सा हिसाब है—छाती फुँकने लगे तो अपच की दवा खाओ। यही भ्रू-धनु पर चढ़ाकर जो नजर का तीर उस सुन्दरी को लक्ष्यकर छोडा था, उसमे चिरौरी के साथ वशीकरण की क्लोरोफ़ॉर्म भी मिली थी। बहुत कुछ रियाज और साधना करके यह विद्या हासिल हुई है।

इसी बीच बिल्ली जैसी आँखोवाली उस रूपसी ने चटसे बोर्डिंग कार्ड घसीट डाला। लगेज की दोनो टिकटे मेरी ओर बढाकर मुस्करायी। मुझे भी जवाबी कार्यवाही करनी पडी। यह बीस किलोवाला कानून जब तक आकाशचारी यात्रियों को सहना पड़ेगा तब तक इस तरह की खीसे निपोरने के अलावा चारा भी क्या है ?

एअरलाइन्स का बैग कंधो पर झुलाए मैं अब डिपार्चर लाऊँज मे आकर बैठा। मेरी टिकट पर दिये फ्लाइट नंबर के साथ गेट के आगे लिखा नम्बर मिलता है या नही देख लिया। घडी मे देखा अभी भी काफ़ी वक्त था।

ऐरोड्रोम के इंतजाम की बात ही कुछ और है—सुना है हर मिनट यहाँ से एक प्लेन उड़ान भरता है या आकर उतरता है। जरा गौर करने की कोशिश कीजिए। आसमान मे भी ट्रैफिक जाम—जैसा जाम कलकत्ते की सडको पर प्रायः ही होता है, अखबार में देखता रहता हूँ। लेकिन इतने लोग इतने सारे प्लेनों मे चढकर कहाँ जाते है या कहाँ से आते है, सोचकर दिमाग गडबडाने लगता है। इनमे से हर आदमी को मेरा कौन सा काम लगा रहता है ? इन लोगो के चेहरे अलग-अलग करके देखिए। कैसे आफत के मारे से लगते हैं, जैसे इनके इस प्लेन से जाने-न जाने

पर ही दुनिया का भविष्य टिका है।

मिजाज ठीक नहीं था। इसीमें वक्त का ख्याल न रहा और वक्त से काफी पहले ही ऐअरपोर्ट आ पहुंचा हूं। और जब आ ही पहुंचा हूं तो दोनों आंखें खोलकर आसपास जो प्राकृतिक सौंदर्य है उसी का मुआइना करके अपनी आंख नाम की इन्द्रिय को ठंडक पहुंचायी जाए। प्राकृतिक सौन्दर्य के माने मेरी समझ के मुताबिक अबला-अवलोकन है। इसमें पुरुष चरित्रकलों के लिए खतरे वाली कोई बात नहीं है। पुलिस में रिपोर्ट करके भी कोई कुछ नहीं कर पाएगा। लड़कियों की ओर ताकना किसी भी देश में (यहां तक कि इण्डिया में भी) गैरकानूनी नहीं है। परवरदिगार ने इतनी मेहनत करके जिस सौंदर्य की सृष्टि की है, लोग उसे न देखें तो शिल्पी के नाते उसके अफसोस का ठिकाना नहीं रहेगा।

अपने बदन को नर्म सोफ़े पर डालकर सामने की टेबल पर एक पेग ह्विस्की जमा ली। खालिस स्कॉच ह्विस्की के खिलाफ स्वदेशी आंदोलन के कोई माने नहीं होते। अमेरिकन काफ़ी कुछ कर चुकने के बाद इस बात को अच्छी तरह समझ गए हैं कि स्कॉटलैंड को छोड़ और कहीं ह्विस्की नहीं बन सकती—जिसका जो काम है उसी को फबता है। बात समझने की कोशिश कीजिए। माओभक्त चीनी, लेनिनभक्त रूसी, डॉलरभक्त साम चाचा, गांधीभक्त इंडियन, जिन्नाभक्त पाकिस्तानी, निर्यातभक्त जापानी हो या विप्लवभक्त क्यूबन, इस एक मामले में, दुनिया भर के लोगों की एक ही राय है कि स्कॉच स्काटलैंड की ही जमती है। यही एक मात्र प्रस्ताव है जो संयुक्त राष्ट्र संघ में सर्वसम्मति से पास हो सकता है। मैं जिस देश में लौट रहा हूं वहां चोर बाजारिए, विदेशी कूटनीतिज्ञ और उनके चमचे, कुछ विदेशी फर्मों में काम करनेवाले और उनके कुछ कृपापात्र मित्रों को छोड़ और किसी के लिए स्कॉच-सेवन स्वाद की भी

बात है । इसीलिए तेज़ी से ह्विस्की के पेग चढा रहा हूँ । जबकि कितने ही नौसिखिए छोकरो को ट्रेनिंग देते वक्त बार-बार रटा चुका हूँ कि बियर गट-गट पिओ, उसका मज़ा गले में है; और स्कॉच चुसकी ले-लेकर, अंग्रेजी मे जिसे 'सिप' करना कहते है, स्कॉच का मजा जीभ के सिरे पर है । अजी जीभ साहब जीभ, पचेन्द्रियों में की एक इंद्रिय जिह्वा ।

धत् तेरे की, यह इन्द्रियो की बात क्यों ले बैठा । फिर से मुझे अपने पिताजी की याद आ रही है । वे कहा करते थे, पचेन्द्रियो का सर्वदा दमन करना चाहिए । जो इन्द्रियो के दास है वे दुनिया का कुछ भी भला नही कर सकते ।

और याद आती है 'बोधोदय' की बात—पंडित ईश्वरचंद्र विद्यासागर रचित विद्यासागर के हस्ताक्षरो से युक्त और विद्यासागर समिति से प्रकाशित संस्करण 'बोधोदय', जिसमे बूँद भर भी मिलावट नही है । लाल रग की जिल्द, अखबारी कागज पर छपा और न जाने कहाँ-कहाँ के उपदेशों से भरा । यह इन्द्रिय वाली बात कैसी अश्लील-अश्लील सी लगती है न ! हे दया के सागर, बचपन में इस बेचारे को आपने काफी परेशान किया है । आज जबकि भारत से हजारों मील दूर विदेशी एअरपोर्ट मे बैठा शुद्ध निरामिष भाव से दो-एक कन्याओ का निरीक्षण कर रहा हूँ, ऐसे समय इस अबोध के मन मे उपस्थित होकर उसके 'बोधोदय' की चेष्टा क्यो कर रहे है ?

विद्यासागर की नीतिमाला को ताकपर रखकर मैं सामने की टेबल पर बैठी युवती कन्या को देखने लगा । मेरी नजर उस सुन्दरी के केश, आँखे, नाक, कान, होंठ, गर्दन और हाथो से रपटती नीचे तक आ पहुँची । अब अवरोह ! अहा, घुटनो से लेकर एड़ियों तक देखिए ! पतला नायलॉनी हॉस पहनकर लड़की ने भगवान के लिए अपने पावो के बारह नहीं बजाए है । निम्नांग के पहनावे के बारे मे नाचीज की अपनी एक खास राय है । मेरा कहना है, जब स्कर्ट की ऊँचाई घटते-घटते घुटनों से ऊपर तक उठ आयी है, ऐसी हालत मे फीगर ओन तक नायलोनी बुरका

चढ़ाने के कोई माने नहीं होते । कितनी ही बार कला के पारखी, अदालत के जज, पंडित और बड़े-बड़े मनीषियों का कहना है कि कोई भी वस्तु होने से ही अश्लील नहीं होती । अश्लील होती है निषिद्ध वस्तु को बेतरतीबी से फिजूल इस्तेमाल करने पर, या इस तरह से भी कहा जा सकता है कि साग में मछली ढंकने पर । युवती के पाँवों की गढ़न अपूर्व है, जैसे किसी ने बड़े यत्न से नर्म और सफेद पत्थर से तराशकर तैयार किए हों । साड़ी के गुणगान में पश्चिमी पुरुष लोग चाहे जितने मुखर हों, रसिक लोग समझते हैं कि स्कर्ट की मिसाल नहीं है ।

मैंने युवती के पैरों की दोनों गोलियों पर नजर टिकाई । उस सुन्दरी के सारे आत्मविश्वास की केन्द्रबिन्दु जैसी ये दोनों टाँगें-जाँघें थीं । लेकिन अच्छी तरह नहीं देख पाया । कैसे देखता ! युवती अपनी जगह से उठ खड़ी हुई और बार की ओर चल दी ।

धत्, अजीब खोपड़ी है । देश छोड़ने से पहले जहाँ कोई कड़ा-सा ड्रिंक लेना चाहिए—सो नहीं, कॉफी लेने पहुँची है । सो भी दूध और चीनी छोड़कर । गनीमत है कि भगवान ने मुझे अमेरिकन लड़की नहीं बनाया, इसीसे खाने-पीने के सुख से वंचित नहीं रहा । बाथरूम में वजन तौलने की मशीन हर अमेरिकन स्वस्थ महिला की ओर खीसें निकाले रहती है । और दर्जी का फ़ीता जैसे साँप हो । वक्ष, कटि, नितम्ब में से किसी का जरा-सा भी बैलेंस इधर-उधर होते ही गजब हो जाएगा । इस देश में खाने को इतना है लेकिन मनमाफिक भरपेट खा पाना मुश्किल है ।

दूर से जैसे इंद्राणी सेन को आते देखा । इसके माने ये भी हम लोगों के साथ चलेंगी । इस वज़न के मामले में इंद्राणी सेन की ही बात ले लीजिए न ? उससे कहा था "यहाँ के एक गिलास दूध माने एक गिलास दूध । याद रखिएगा यह इंडियन नहीं है ।"

इंद्राणी खिलखिलाकर बोली, "मैं इंडिया की लड़की हूँ – मैं यहाँ डट करने के लिए नहीं आयी हूँ । बियर लेकर क्या करना है ? मुझे तो अपने हसबैंड की याद आती है ।"

विरहिणी को समझाया "रोज़ लम्बी-लम्बी चिट्ठियाँ लिखिए न। वापस लौटने पर साढे आठ सौ पेज का पत्र-साहित्य संकलन प्रकाशित करिएगा। प्रकाशन के अधिकार मुझे दे दीजिएगा। 'एक अकेली नारी के पत्र' के नाम से पुस्तक प्रकाशित होगी—छ: महीने मे नौ सस्करण हो जाएँगे।"

"आप बडे शरीर है। अमरीका मे रहते-रहते एकदम रेड इंडियन हुए जा रहे है।" इंद्राणी सेन हँसते-हँसते दुहरी हुई जा रही थी।

उसी इंद्राणी सेन ने मेरे देखते-देखते मोटा होना शुरू किया। पहले चेहरे पर जो सब खाई-खंदके थीं, भरी। दोनो गाल कैसे भारी-भारी से हो गए, ऑल्टर कराने पर भी ब्लाउजें ठीक नही लग रही थी, बदन से चिपक गयी थी। गनीमत है कि साडी पहनती है, नही तो बेचारी इद्राणी को काफ़ी खर्च उठाना पडता। हर महीने इतने डॉलर जमा करना, निकल जाता।

एक अमेरिकी मित्र ने कहा था, 'इडियन हसबैड काफी भाग्यवान है—बीवी हाथी के साइज़ की हो जाने पर भी साडी के साइज़ मे फर्क नही पडता। पिछले साल मेरी बीवी की वाइटल स्टेटिस्टिक्स मे एक इच का फर्क पड़ा था—पूरे बाइस फ्रॉक एक साथ बरबाद हो गए।' इसी वजह इस देश मे सब लोग यौवन के साथ स्थायी अनुबध करना चाहते है। जैसी आयी हो ठीक रहो, और मौसमी पट्टे पर दस्तखत करो।

इंद्राणी किसी और के साथ बात कर रही थी। ये लोग शायद इद्राणी को पहुंचाने आए है। तबतक मैं एक पेग ह्विस्की ही पी डालूँ। जेब मे काफ़ी छुट्टे डॉलर पडे है। इन छुट्टे डॉलरो को डालर के देश मे ही छोड चलना बेहतर होगा।

फिर से ह्विस्की ले आया। कुछ देर बाद ही महाशून्य मे सुन्दरियां मदिरा सर्व करेंगी। कीमत भी काफ़ी कम। फ़र्स्ट क्लास मे जाने से तो पैसा ही नहीं लगता। ड्यूटी-फ्री दूकान मे दुनिया भर की चुनी शराबें पानी के मोल मिलती है। इंडिया मे एक बोतल लटकाए उतरने पर

कस्टम्स वाले कुछ भी नही कर पायेंगे। लेकिन इंडियावालों के मगज को तारीफ़ करनी पड़ती है। — जैसा कानून, वैसा ही उससे बचने का उपाय। क्योंकि एक बोतल फ्री ले जायी जा सकती है, अपने बेनान साहब उस दफा करीब एक आदमी जितनी ऊंची ह्विस्की की बोतल खरीदकर ले गए। सुना है, बेनान साहब के उस काम के बाद से कानून और टाइट हो गया है। बोतल के साथ बोतल का साइज भी निश्चित कर दिया गया है। यह आख-मिचौनी भी खूब चलती रहती है। कानून जितना टाइट होता है, लोग उतनी ही सेंध ढूंढ निकालते हैं, इस पर कानून और भी कड़ा किया जाता है, उधर सेंध भी उतनी ही निकलती रहती है।

अरे छोडिए भी, फालतू की बाते सोचते-सोचते सामनेवाली लड़की कब उठ खडी हुई इसका ध्यान ही नहीं रहा। टाइट स्कर्ट पहने लडकिया जब चलती है तो दूर से देखने मे बडा अच्छा लगता है। मै ही क्यो, बहुतो का दिल बाग-बाग हो उठता है, लेकिन वे लोग मुंह से स्वीकार नही करते। बाजार मे ऐसे लोग चरित्रवान के नाम से जाने जाते है। मिनि स्कर्ट देखकर कहते है इन लोगों को मिचली-सी आने लगती है। अन्दर डस्टबिन, ऊपर रामनाम।

जरा-सा आगे बढकर लडकी एक अमेरिकन मिलिटरी छोकरे की बगलगीर हो गई। छोकरा बेजा लम्बा था, चूमने के लिए बेचारे को झुकना पड रहा था। अरे राम-राम कहाँ आ फँसा। दिन दहाड़े सरे-आम इन लोगों की यह रासलीला देखकर मेरे पिताजी हरेनचंद्र शास्त्री पर क्या गुजरती वही सोच रहा था? मेरे पिताजी का कुछ भी ठीक नही है। हो सकता है इसी क्षण उनकी आत्मा अपने गुमराह होते पुत्र की चरित्र-रक्षा करने के लिए यहीं आ पहुँचे। हो सकता आकर कान में धीमे से कह बैठें "बेटे नजर हटाओ। गलती चीजों के रहते उधर ही क्यों देख रहे हो?"

इन लोगों के विरह की अवधि शायद काफ़ी लम्बी रही होगी।

चुम्बन की लम्बाई से मै यह अंदाज कर रहा था। अरे ओ नाग्बू, तेरी गर्दन दुहरी हुई जा रही है, एक कुर्सी पर खड़ी कर लेना उसे। यह कोई इंडिया तो है नहीं कि लोगों की भीड़ जमा हो जाएगी, पुलिस पकड़कर थाने मे चलता कर देगी।

नही साहब, ये लोग हद से बाहर जा रहे है। अरे बन्धु, बहुत परेशान न दिखाओ। जापान पहुँचते ही क्या करोगे अच्छी तरह मालूम है। हिसाब-किताब ज्यादा नही समझता, लेकिन तुम्हारी नाबुल प्राइज पाने-वाली लेखिका पर्ल बक ने ही लिखा है कि हर दम अमेरिकन के पीछे एक जारज संतान एशिया महाद्वीप में पड़ी रहती है। ये जारज ही तो प्राच्य और पाश्चात्य के बीच कड़ी का काम करेंगे। बिस्तर भाजने मे सांस्कृतिक संहति नही होती। इतिहास की ओर ताककर देखा, एक सभ्यता के साथ एक और सभ्यता का सबसे सख्त गठजोड़ बिस्तरे पर ही लगा है। बिस्तर ही सारे तीर्थों का सार है।

क्लोज सर्किट टेलिविजन का पर्दा झिलमिलाने लगा। उसी पर लिखा-वट उभर आयी—फ्लाइट वन-ओ-वन के यात्री अब एमिग्रेशन काउंटर पर जा सकते हैं। इस देश मे पाँव रखते वक्त कितने झंझटों का सामना करना पड़ता है। छाती का एक्सरे दिखलाओ, खून की रिपोर्ट जमा करो, पासपोर्ट निकालो, वीसा ठीक है न ? लेकिन क्या हुआ भाई। इतने सब फोटो-वोटो लेकर भी कुछ पकड़ मे नही आया। मेरे मन के भीतर का कुछ भी ढूँढ नही पाए। मेरे पिताजी, जन्मदात्री मां किसी की भी समझ मे नही आया, तुम लोग तो बच्चे हो।

जेब से पासपोर्ट निकालकर उस पर हाथ फिराने लगा। एक नहीं, तीन-तीन सिंह जिल्द के ऊपर से मेरी ओर आँखें चमका-चमकाकर देख रहे थे। पहले जब हम लोगों पर अंग्रेज महानुभावों का शासन था, तब एक सिंह हम लोगों पर अत्याचार किया करता था। उस एक सिंह को भगाने के लिए कितने लोग फाँसी पर चढ़े, गोलियाँ खायीं, जेलों में सड़-सड़कर मरे। इतिहास के पन्नों पर कितने लोगों का नाम लिखा

गया, कितनी अभागिनें विधवा हो गयी। कितनी मांओ की आँखो के आंसू अभी तक भी नही सूख पाये है। उस एक सिंह को भगाकर अब हमें तीन अच्छे सिंह मिले है।

पासपोर्ट के एक ओर सफे पर ईगल पक्षी की रबर स्टेम्प थी। वीसा की इस छाप के बगैर ये लोग मुझे इस देश मे घुसने ही नही देते। राजवल्लभ साहा सेकंड आई-लेन के अनिर्वाण चटर्जी की जिंदगी के लिए अमेरिका सरकार का यह रबर स्टैम्प बड़ा जरूरी था। इसी के लिए तो इतनी खुशामदें, इतनी गरगटक। आज जो मुझे यहाँ से जाना पड़ रहा है यह भी इस रबर स्टैम्प की वजह से। अगर यहाँ और ज्यादा दिनों की मियाद होती या बेनीमाधव राय अगर मुझे बचा पाते तो अनिर्वाण चटर्जी को आप लोग आज इस एअरपोर्ट पर बैठा नही देख पाते।

इन बातों के बारे में प्लेन में बैठने के बाद सोचा जायेगा। मिजाज ठीक नही है, इसी से सब बाते ठीक से सिलसिलेवार नही सोच पा रहा। यह न सोच बैठिएगा कि सब ह्विस्की का नतीजा है। दो पैग पेट मे पडते ही जो लोग बहकने लगते है, अनर्वाण चटर्जी उन लोगों मे से नही है।

फिलहाल आगे बढा जाए। बैग कंधे पर लटकाकर पहले जाकर कस्टम्स का झमेला निपटाऊँ।

टोपी चढाए कस्टम्स के लोगों को देखकर मुझे एक मिश्रित अनुभूति होती है। कभी-कभी जी चाहता है कि टोपी उतारकर खोपडी पर एक-आध धौल जमा दूँ, तो कभी लगता है कि पकड़कर प्यार करूँ, चूम लूँ। अभी जिस आदमी ने धीमे से मुस्कराकर मुझे अभिवादन किया, उसके बडी-सी मूँछें है नहीं तो थैंक्यू कहते वक्त मै उसका मुँह चूम लेता। जब अमेरिकी जमीन पर पाँव रखा तो तुम्हारे डाक्टरों को छाती का एक्सरे दिखलाना पड़ा था। आज वापस भेजते वक्त एक्सरे क्यों नही देखते ? देखना चाहिए था क्योकि फेफड़े पूरी तरह तबाह हो गए है।

अच्छा भाई अच्छा, फेफड़े लिए यहाँ पर नही आया जा सकता—लेकिन मेरे अच्छे-ख़ासे फेफडे अगर गल-गलकर बह जाये तो उसके लिए तुम्हारी कोई जिम्मेवारी नहीं है ?

कस्टम्स के आदमी ने पूछा, "डिक्लेयर करने लायक़ कोई वैल्युएबल है क्या ?"

आते वक्त भी यही बात पूछी गई थी। काफ़ी रोज पहले आस्कर वाइल्ड से भी इन लोगों ने यही सवाल किया था। साहित्यिक ठहरे, ऐसा जवाब दिया कि साम चाचा बेचारे का मुँह देखने लायक हो गया, "नथिंग टू डिक्लेयर एक्सेप्ट माई टेलेन्ट।" वैसे आस्कर वाइल्ड जितना मेरा नाम भले ही न हो लेकिन इसके माने यह नही है कि मुझमे टेलेंट की कोई कमी है। इसके अलावा अबकी वार, तुम्हारे इस देश से जो चीज ले जा रहा हूँ उसे तुम इलैक्ट्रिक मशीन लेकर सर्च करने पर भी नही ढूँढ सकते। जादूगर पी० सी० सरकार की तरह ओपनली कहे देता हूँ कि क्या लिए जा रहा हूँ लेकिन फिर भी पकड़ नही पाओगे। अनुभूति, माई डियर फ्रेंड अनुभूति! लेकिन जरा मेरे चेहरे की ओर ताककर देखो—कैसा छोटे से बच्चे जैसा मासूम चेहरा है। अरे यह चाँद जैसा चेहरा ही तो मुझे बचाए है। जिस गधे ने लिखा था कि चेहरा मन का दर्पण होता है, उसने हावडा के राजवल्लभ साहा सैकेंड बाईलेन के अनिर्वाण चटर्जी को नही देखा।

एमिग्रेशन काउन्टर पर के आदमी ने वीसा की मोहर पर एक और मोहर मारने से पहले मेरी ओर देखा। अरे भले आदमी मेरी ओर इस तरह क्यो ताक रहा है ? यह तो देख ही रहे हो कि आज तुम्हारे देश मे मेरी आखिरी रात है। आज रात के बारह बजने के बाद यहाँ रहने पर तुम लोग हाय-तौबा मचाने लगोगे। हो सकता है मजिस्ट्रेट की अदालत मे ठेल दो, या हो सकता है सरकारी खर्चे से जबर्दस्ती प्लेन की सीट पर बैठा दो।

अब मैं जरा चैन से बैठा हूँ । इस वक्त मैं न घर का हूं, न घाट का। वह जो रेलिंग दिखलाई दे रही है उसी के पीछे मैं युनाइटेड स्टेट्स ऑफ अमेरिका को छोड़ आया हूँ । पासपोर्ट पर रबर की मोहर लग चुकी है। अब मैं उस ओर नहीं जा सकता। और सामने—यानी दूर, बहुत दूर, पहाड़ों और पर्वतों से परे नदियाँ, समुद्र और महासागर के उस पार एक और देश है, जिसके तीन सिंहों को मैंने अपनी जेब में बन्द कर रखा है, जिसका नाम भारत है। लेकिन उस देश के बारे में मुझे जरा भी दिलचस्पी नहीं है ।

यह महज एक एक्सीडेंट ही है। प्रनिर्वाण चटर्जी, राजवल्लभ साहा संकेंड बार्डलेन में पैदा न होकर, दुनिया के किसी भी देश में पैदा हो सकता था । मैप की ओर देखिए न जरा । दुनिया के और भी कितने देश है। मेरे पैदा होनेवाले दिन दुनिया में मेरी माँ को छोड़ और भी तो कितनी महिलाओं के लेबर-पेन हुआ था । उन्हीं में से किसी में से अगर निकल आता, तब शायद मेरा नाम होता हुगकांग, या अकितो ताकादी या जॉन मार्क्स, गुर्गनेफ़, आरिस्ताईटिस या और कुछ । लेकिन उसमें मेरा कुछ भी आता-जाता नहीं—सिर्फ़ मेरे पासपोर्ट का रंग अलग होता ।

खैर, जो पासपोर्ट मिला है जरा उसी को पढ़कर देखा जाए। खासा मजा आ रहा है । मेरी मेष राशि है। यानि एक मेढ़े की जेब में तीन सिंह आ बैठे हैं।

पासपोर्ट निकालकर उस रोज पहली बार मन लगाकर पढ़ने लगा; पढ़ने पर खुद के एक जोरदार घूँसा जमाने की इच्छा होने लगी । पासपोर्ट को पहले क्यों नहीं देखा। भारत गणराज्य के राष्ट्रपति के नामपर आशा व्यक्त की जाती है कि इस पासपोर्ट के वाहक प्रनिर्वाण चटर्जी को बिना किसी रोक-टोक, आज़ादी से आने-जाने दें तथा उसे हर प्रकार की सहायता और सुरक्षा प्रदान करें जिसकी कि उसे आवश्यकता हो ।

अपनी उँगली खुद ही काट रहा हूँ । सारी जिंदगी मैंने यही तो चाहा। पिताजी को चाहिए था कि पैदा होते ही मेरे लिए एक पासपोर्ट

बनवा देते। बिना किसी रोक-टोक जहाँ जी चाहा घूमना, और घूमते-फिरते कोई झंझट उठ खड़ा होने पर 'सहायता और सुरक्षा'। मुझे प्रोफेसर निमाई मुकर्जी की याद आ गई। निमाई मुकर्जी ने क्या कहा था मालूम है ?

मुझे अपने फ्लैट मे, सोफे पर बैठाकर, हाथ में एक कप कॉफ़ी पकडाकर निमाई मुकर्जी ने उपदेश देना शुरू किया "मिस्टर चटर्जी, दुनिया मे हम सभी अपने-अपने कर्मों का फल भोग करेंगे। न कोई हमारी मदद करेगा न कोई रक्षा करेगा।"

उन दिनों नया-नया आया था। न्यूटन युनिवर्सिटी में फिजिओलॉजी के अध्यापक निमाई मुकर्जी का ऊपरी व्यवहार देखकर मुग्ध था। सोचा, जो कुछ कह रहे है मन लगाकर सुनूँ। अभी तक मै निमाई मुकर्जी को पहचानता नही था।

यह क्या; निमाई मुकर्जी है न ? हाँ वही तो है। उनके कधे पर भी एयरलाइन्स का बैग था। इसके माने आज निमाई मुकर्जी भी वापस जा रहे है। अरे टुलटुल तिलोत्तमा मित्र भी है। आखिर मामला क्या है। ओह न्युटन युनिवर्सिटी मे समर-वैकेशन शुरू हो गए है। अब कैम्पस खाली हो जाएगा।

मैं एक किताब लेकर उस पर चेहरा झुका लेता हूँ। अवकाश यात्रा शुरू होने से पहले निमाई मुकर्जी से सर खपाकर दिमाग खराब नही करना चाहता। इन लोगो के साथ काफी लम्बा सफर तय करना है। बोइग ७०७ चाहे जितनी कोशिश करे ६५० मील फ़ी घटे से ज्यादा तेजी से तो दौड नही पाएगा। हे, भगवान शक्ति दो।

"मास्टर साहब।" मै चौंक उठा।

मैं कितना ही पाखडी क्यों न होऊँ, मास्टर साहब का नाम आज भी हिला देता है। मै मास्टर नही हूँ, साहब भी नही हूँ। मुझे एक जने

को छोड कोई भी इस नाम से नही पुकारता।

नज़रें उठाकर ठीक से देखा। हां! जिसे इस वक्त देखने की जरा भी आशा नही थी वही छोकरा मेरी ओर एक छोटे बच्चे की तरह ताक रहा था। और मैं भी उसकी ओर देख रहा था। मायों के वुड-फौरेस्ट पिकनिक के लिए जाने पर एकदम कुछ 'रेड वुड' के दरख्त देखे थे। जैसे दुनिया की जमीन पर ये पेड़ आसमान को पकड़ने के लिए ही पैदा हुए हों। इतने ऊंचे, इतने विराट लेकिन जरा-सा भी दम नही। अपना यह लड़का भी कुछ इसी तरह का है। इसकी ऊँचाई देखिए। लम्बे आदमियों के इस देश में आम लोगों के बीच किस तरह माथा ऊंचा किए है।

"मास्टर साहब, मैं कुमार। ह्वाट ए प्लेजेंट सरप्राइज" कुमार की अनभ्यस्त मातृभाषा अटक जाती। अटकेगी नही बेचारे को अपनी मातृ-भाषा में बात करने का मौका ही कितना मिला है?

"हाय हाउ नाइस टू सी यू।" मैं किस तरह फटाफट अमरीकी अंग्रेजी बोल गया। मेरी अंग्रेजी नाक के रास्ते ही बाहर आयी। इस देश के बीस करोड़ लोगों की अंग्रेजी जहाँ से निकला करती है। इस बात पर खुद अंग्रेज लोग ही बेचारे कितने दुखी हे।

क़ायदे के मुताबिक़ बोलकर भी मुझे जैसे कुछ अटपटा-सा लग रहा था। अटपटा लगने की वजह भी थी। मेरे जैसे सीजन्ड काठ ने भी कुमार की सरल और निष्पाप दृष्टि की गरमाहट से जरा-जरा टेढा होना शुरू कर दिया।

कहे रखता हूँ, कुमार के शरीर में भारतीय और अमरीकी खून बह रहा है। कुमार बेचारे को क्या मालूम कि मुझे अमेरिका छोड़कर क्यों जाना पड़ रहा है?

कुमार कहने लगा, "मास्टर साहब, आपने हमारे यहाँ आना क्यों छोड़ दिया था।"

"मैं आपका इंतजार किया करता। पिताजी से पूछा, उन्होंने बतलाया

आप शायद अपना थीसिस लिखने में व्यस्त है।"

पिता, यानि प्रोफेसर वेणी माधव राय डी० एस-सी। सच कहता हूँ, मुझे अगर मालूम होता कि कुमार इस फ्लाइट से जा रहा है तो मै कोई दूसरी फ्लाइट पकडता।"

"मास्टर साहब !"

"कहो।"

"आप इतने गंभीर क्यो लग रहे है ?"

"किसी देश मे ज़्यादा दिनों रहने के बाद छोडकर जाते वक्त ऐसा ही होता है।"

कुमार ने कहा, "मै इंडिया जा रहा हूँ।"

मारे गए ! वेणीमाधव और उनकी पत्नी आईलीन भी तब जरूर एअरपोर्ट आये होगे।

"आते वक्त माँ-पिताजी से मिले होंगे, काफ़ी बाते हुई होगी", कुमार ने पूछा।

मैंने सफेद झूठ बोला, "हाँ, सो तो मिला ही। आते वक्त लेकिन मै उन लोगो से मिलने नहीं गया। वेणीमाधव राय को कम-से-कम मैंने समझ लिया है। क्यो खामख्वाह उन्हे तकलीफ़ देता।"

कुमार ने और भी कहा, "मास्टर साहब, मैंने आपको लाउन्ज में ही देखा था। माँ और मैं आपसे मिलने आ रहे थे, पिताजी ने मना कर दिया। आप तो जानते है वे कितने गभीर आदमी है, इतना भर कहा, "वह गहरी चिता में डूबा है उसे परेशान न करो, उसे अकेले रहने दो। इसके बाद हम लोग रेस्तराँ मे चले गए।"

कुमार की बाते सुन रहा था। उसने कहा, "मास्टर साहब, हम लोग जब कॉफ़ी पीकर निकल रहे थे तो देखा आप कस्टम्स एँक्लोजर में हैं।"

"पिताजी से पूछा, आपसे कुछ कहलाना है क्या ? पिताजी कितने

सीरियस आदमी है, जानते ही हैं। सिर्फ इतना ही कहा, उसे मेरा आशीर्वाद कहना।"

इसके बाद माँ की बात उठी। "माँ ने आपके लिए चिट्ठी लिख डाली।"

कुमार के हाथ से लेकर चिट्ठी पढ़ी। आईलीन ने लिखा था। "जाने से पहले तुमसे मुलाक़ात नहीं हो पायी। कुमार इंडिया जा रहा है— उसके पिता नहीं चाहते कि और देरी हो। रास्ते में उसका ख्याल रखना।" —आईलीन।

"तुम्हारे पिताजी ने और कुछ भी नहीं कहा ?" मैंने कुमार से सवाल किया।

"नहीं तो। आपको कुछ पूछना था क्या ?"

मैंने फिर झूठ बोला, "नहीं, ऐसे ही पूछ रहा था।"

मैं अपने आपको जरा लज्जित-सा महसूस करने लगा यह बात बहुत खराब है। मैंने अपने दिल को चुपके से एक डाट लगाई। अपने को सम्हालने के लिए मैंने नारी-चिंता प्रारम्भ कर दी, तभी कुमार किसी और से बात करने के लिए सौभाग्य से आगे बढ़ गया था।

मैं उसके बालों की ओर देख रहा था। इतने खूबसूरत बालों के साथ इतनी लापरवाही। अमरीकन महादेव की इन जटाओं से फँसकर कितनी विशालाक्षी सुन्दरी छटपटायेगी।

इस बार मन को अपने सुन्दर बालों के बारे में सोचने के लिए कहा। इन बालों की गिरफ्त में भी दो-एक न फँसी हों ऐसी बात नहीं है। मन की इच्छा नहीं हो रही थी इन सब बातों के बारे में सोचने की-- लेकिन मैंने करीब-क़रीब जबर्दस्ती हो बैटी नाम की स्वीडिश लड़की के बारे में सोचने का हुक्म दिया।

संयुक्त राष्ट्रसंघ में काम करने आयी मिस बैटी छुट्टियों में कार से अमेरिका भ्रमण करने निकली। उन दिनों नया-नया आया था। बैटी

की गाडी ठीक जंगल के पास खराब ही गयी। जहाँ बाघ का डर वही शाम हो गयी।

जंगल के बीच अकेली सालकारा युवती। और मै ठहरा यंगमैन ऑफ एक्टिव हैबिट्स ! अब आप समझ लीजिए, गाडी का बॉनेट खोलकर कलपुर्जो से खीचातानी कर उन्हे और भी खराब कर दिया। इतनी सुन्दर लडकी की गाडी अगर इसी वक्त ठीक हो गयी तो वह एक रूखा सा थक्यू मारकर अपनी राह पकडेगी। और अनिर्वाण चटर्जी की उनी से गदगद् होने वाली उम्र निकल चुकी है।

सौभाग्य से छोकरी को गाडी के कलपुर्जो के बारे मे जानकारी नही थी—इन मैम छोकरियो का कुछ भी ठीक नही है, मर्दो को मात देकर पता नही कब कौन-सा गुण हासिल करके रखले। मैने एक घटे तक ठोका-पीटी की। अपनी गाडी से औजार लाकर गाडी के नीचे लेट गया। तब जाकर बालिका का दिल पसीजा, बोली "मिस्टर चटर्जी, मेरी गाडी में सैंडविच है आइए दोनो खायेगे।"

रूमाल से हाथ पोछकर दोनो एक पेड के नीचे आ बैठे। पश्चिमी लड़कियो मे छुईमुई वाला भाव जरा कम होता है। कलकत्ते की एम० एस-सी०, पी-एच० डी० लडकी भी इस हालत मे नखरे दिखलाती कहती, बडा डर लग रह रहा है, दिल धक-धक कर रहा है, अब क्या होगा, कहाँ बैठा जाए—यह सोचते-सोचते ही साडी सम्हालती पाँच मिनट निकाल देती। उसके साथ-साथ ताल बैठाकर मुझे भी नखरेबाजी करनी पडती। यह लडकी फटाक से अपने साफ फ्राक की बिना परवाह किये घास के ऊपर बैठ गयी।

सेंडविच का बडा-सा टुकड़ा मुँह मे भरकर बोली, "मुझे बैटी कह-कर पुकारना। तुम्हारा यह इतना लम्बा-सा नाम मुझे याद नही रहेगा, मैं तुम्हे अनि कहूगी।"

जी मैं आए उसी नाम से पुकारो, सिर्फ थोडी कृपा दृष्टि बरसाओ।

गपागप सैंडविच खाए, ही-ही करके हँसे। इसके बाद फिर गाडी ठीक करने में जुट गया।

गाड़ी ठीक करके, हाथ मुँह पर कालिख पोते जब निकलकर बाहर आया तो बालिका के चेहरे से मीठी मुस्कान के मोती झरने लगे। मैंने कहा, "अभी से सारी मुस्कराहट खर्च मत कर डालो। पहले जरा चला-कर देखो ठीक हो गयी है या नही।"

बालिका समझदार थी। मुझसे बोली, "तब तो तुम्हे भी पास बैठना होगा।"

और मैं ठहरा एक शिक्षित, सभ्य और शालीन युवक; हम अपने मा-बाप का कहना न मानें, लेकिन सुन्दरी युवती के अनुरोध को नहीं ठुकरा सकते। गाडी में बैठा। आध मील का चक्कर लगाकर जंगल में और भी अन्दर घुस आए। यह बात नहीं कि मन में जरा भी धुक-धुक नही हो रही हो। मेरी अपनी गाडी लगातार पीछे छूट रही थी। मैंने कहा, "गाड़ी बहुत बढ़िया चल रही है। अब बैंक करो।"

उसने गाडी घुमा ली। ड्राइविंग इन लोगों का पैदाइशी हक है। और जैसे स्टियरिंग वैसे ही उसके नर्म-नर्म मक्खन जैसे हाथ। वो एक रेकार्ड है न जिसका एक जमाने में बडा शोर था, याद आ गया।

सोने के हाथ में सोने के कंगना,
कासे कहूँ हाथ और कासे कहूँ गहना।

सोने के हाथों ने स्टियरिंग छोड दी थी, गाडी रुक गयी थी। हम लोग फिर उसी पुरानी जगह आ बैठे—मेरी फ़ोक्स वैगन सती नारी की तरह मेरी ओर उदासीन भाव से ताकती रही। मैं गाड़ी से उतरा। बैटी भी उतरी। मेरा जी बैठ रहा था। बैटी के दिल के तारों को छेड़ने के लिए मेरा दिल एक के बाद दूसरा रेडियो-मैसेज भेजे जा रहा था। लेकिन काकस्य वेदना। शायद उसका मीटर ही पकड़ में नही आ रहा था।

बैटी ने मेरी ओर देखकर कहा, "समझ में नही आ रहा तुम्हें कैसे

धन्यवाद दूँ। तुम्हारे लिए कुछ कर सकती हूँ?"

"करोगी और क्या? वापस लौटकर अपने बॉय फ्रेंड को किस कर लेना", कितनी आसानी से बोल गया। स्वयं वाग्-देवी की कृपा बिना इतनी अच्छी साहित्यिक भाषा मेरी जीभ पर कैसे आ पायी?

इस पर बैटी हँस पडी—आईसबर्ग वाली हँसी, जिसका सिर्फ दशमाश दिखलायी देता है, और बाकी हँसी हँसनेवाले को जरा रंगीन कर देती है। बैटी अपनी गाडी का दरवाजा खोलते-खोलते मुड़कर खड़ी हो गयी। उसके बाद अपने गाल पर बाँया हाथ रखकर बोली, "यू नॉटी इंडियन, तुम्हारे बाल बडे खूबसूरत है।"

इसके बाद फिर मैंने देर नही की। अपनी गाड़ी का दरवाजा बन्द करके सधे कदमों से सीधा बैटी के खूब करीब—जितना करीब जाना मुमकिन हो सकता है, बढ़ गया।

उसके बाद? अपने मालिकों से बिछडी दो गाड़ियाँ काफ़ी देर तक सड़क पर अकेली पडी रही। हम लोग जगल के बीच, घने जंगल मे पहुँच गए थे। ···और उसके काफी देर बाद सूरज डूबा।

'मास्टर साहब', कुमार की आवाज सुनकर फिर चौक उठा। उसकी बोली मे अमेरिकन लहजा ही याद है, लेकिन बेचारा किस लगन से इडियन बनने की कोशिश कर रहा है।

"आप कुछ सोच रहे है? काफी अरसे बाद घर जा रहे है।" कहकर कुमार मेरे चेहरे की ओर ताकने लगा।

लेकिन मैं अपने मन मे तुम्हें किसी भी तरह घुसने देनेवाला नहीं हूँ। वहाँ इस वक्त तुम्हारे पिताजी को लेकर उधेड़-बुन चल रही है। तुम्हे बहकाने के लिए अपनी उस खास मुस्कराहट को काम मे लाऊँ। उस मुस्कराहट मे मै एक मासूम बच्चे जैसा लगता हूँ—लोगों को मैं इस तरह गुमराह कर देता हूँ कि फिर वह मेरा पता नहीं लगा पाता।

मैंने पूछा, "माँ की तबीयत ठीक है न ?"

"फाईन । बिल्कुल ठीक है।"

तुम्हारे उस लाल 'जवा' के पेड़ में आजकल फूल कैसे आ रहे हैं ?"

"कल तो ऐसे फूल खिले कि आपको क्या बतलाऊँ। यहाँ अगर गॉडेस काली का कोई मंदिर होता तो एक सौ आठ रेड आॅग्येटर ऑफर किए जाते ।"

अब क्या पूछूँ ? कुमार ने ही मुझे बताया। "आप मिर्च के पेड़ के जो बीज लाए थे याद है। पिताजी कितने खुश हुए थे। व्हाट डू यू कॉल दीज़ चिलीज ?" कुमार की पितृभाषा अटक गयी। उसके साथ यही मुश्किल है। अपनी पितृभाषा में सारे भाव-प्रदर्शन के लिए परेशान बेचारा अपनी तरफ़ से पूरी कोशिश भी करता है, लेकिन अटक जाता है। तब जैसे छटपटाने लगता है।

मैंने कहा, "धानी मिर्च !"

"व्हाट इज धानी मास्टर साहब ?"

कुमार ने अपनी नोटबुक निकालकर लिखना शुरू कर दिया। मैंने कहा, "ठीक धान की तरह छोटी। धान के खेतों में भी होती हैं। छोटी, लेकिन झाल में उतनी ही तीखी।"

"यानी झाल में प्रेसीडेंट !" प्रोफेसर निमाई मुकर्जी तक हमारी बातों में आ घुसे।

अपने उबाऊ मजाक पर ख़ुद ही हँसते-हँसते तिरछी नजरों से मेरी ओर ताक रहे हैं। न्युटन युनिवर्सिटी में फिज़ियोलॉजी विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर निमाई मुकर्जी। निमाई मुकर्जी सब-कुछ कंट्रोल करते हैं—खाना, वजन, मन की बात। जवानी को भी कंट्रोल करने की कोशिश कर रहे हैं, पैंतालीस की उमर को दाब-दूबकर चालीस बना रखा है। लेकिन उनका ख़याल है कि वे अभी भी बत्तीसवें साल में ही हैं।

हम लोगों की बात वहीं रुक गयी। प्लेन पर जाने का एनाउन्समेंट

हो गया था। हम बहुत से लोग झुंड बनाए खड़े थे।

टारमैक से होकर अपने बोइंग ७०७ की ओर बढ़ने लगा। सीढ़ी के पास ही एक आदमी ने मेरे बोर्डिंग कार्ड का थोड़ा-सा हिस्सा फाड़ लिया। मुझे लगा जैसे उसने मेरे मन में से भी कुछ फाड़कर रख लिया। जैसे मैं अपना कुछ अंश इस देश, इस अजीब देश में छोड़े जा रहा हूँ। जबकि तुम लोग चाहते तो इसमें का सब कुछ रख सकते थे। राजवल्लभ साहा मैकिन्ड बाईलेन के बारे में मुझे अभी भी कोई खास दिलचस्पी महसूस नहीं हो रही, सीढ़ी से सभी लोग एक बार पीछे मुड़कर उस ओर की बालकनी की ओर देखते है। उस ओर से कोई रूमाल हिला रहा है, कोई हाथ हिला रहा है। मुझे उस ओर देखने की कोई जरूरत नही है। फिर भी न जाने क्या हुआ बिना देखे नही रह पाया।

यह क्या देख रहा हूँ मै? यह क्या? उस ओर वेणीमाधव राय खड़े है। दिन ढलते के सूरज की रोशनी मे देखा वेणीमाधव राय अपने लड़के की ओर देखकर हाथ ऊँचा कर रहे है। कुमार ने इधर मे हाथ उठाया। वेणीमाधव राय ने शायद मुझ भी देख लिया है। नही देखते तो शायद अच्छा रहता।

वेणीमाधव राय आज बड़े खुश नजर आ रहे है। खुशी से उनकी दोनो आँखे भर आयी है यह मुझे लग रहा था। वेणीमाधव राय अपने लड़के को भारतीय तरीके से आशीर्वाद कर रहे है—खुश रहो बेटा, माँ-बाप का नाम रोशन करो।

मुझे क्या करना चाहिए? मुझे भी उनकी ओर देखकर हाथ हिलाना चाहिए। लेकिन वेणीमाधव राय अगर उसे स्वीकार न करें? जाते वक्त वेणीमाधव राय अगर मेरे अभिवादन को ठुकरा बैठें तब तो मुझे सचमुच बहुत खराब लगेगा। मेरे दिल के अन्दर बैठा जन्तु तब शायद कभी वेणीमाधव राय का बुरा सोचे। इतने में ही जन्तु ने कह

डाला, इतनी सी बात पर वेणीमाधव राय तुमसे इतने उदासीन हो गए है। अगर कही अनिर्वाण चटर्जी को कही पूरी जानकारी मिल जाती तब तो पता नही क्या होता ?

मै उनकी ओर हाथ नहीं हिला पाया। लेकिन मैंने कुमार को बाएं हाथ मे पकड लिया। कम से कम उसकी मां को पता लग जाए कि मैने उसके लड़के की देखभाल करने की जिम्मेदारी ले ली है। आईलीन को चिट्ठी का जवाब बाद मे दूंगा।

कुमार अभी भी मां-बाप की ओर हाथ हिला रहा था। हिलाए न, नुकसान क्या है ? मुझे अब वेणीमाधव राय का अभिवादन करने की इच्छा हो आयी। मैने इस तरह हाथ हिलाया जिससे कि वे समझ नहीं पाए।

सारे यात्री अन्दर आ चुके थे। लो अब हमारी बारी भी आ गयी।

दरवाजे के पास जापानी लडकी ने मीठी मुस्कराहट के साथ हमारा स्वागत किया। यह एक नयी तरकीब निकली है—यात्रियों के मनोरंजन के लिए जापानी लडकियां भिडा देना। जरा हालत देखिए। इस कंपनी के पास इतने प्लेन है, इतने रुपये है, इस पर भी और ज्यादा रुपयों के लिए अपनी लड़कियों के बदले जापानी लड़कियां भर्ती करती है। जब जो फैशन चल जाए। वह जो उस ओर खाली सीट पर अमेरिकन छोकरा दिखलायी दे रहा है, उसका नाम कार्ल लिगेट है। मुझसे खासी जान-पहचान है। बाप की ओर से टू पाइस हैज। लिखता-पढता है और ऐश भी करता है। मौका मिलते ही लड़कियां और खाना चखने देश-विदेश के चक्कर काटा करता है। इन जापानी लडकियों की सप्लाई के बारे में एक बार उससे पूछा था।

बडा मजेदार छोकरा है, उसी के पास देखता हूं मेरी सीट पड़ी थी। मेरी सीट खिड़की के पास थी, "हाय-कार्ल।"

"हाय अनि।" कहकर ही कार्ल ने अपनी खास तरकीब आज़माई। खालिस बँगला में बोला, "केमोन आछेन।"

मन ही मन कार्लको कोसने लगा। बच्चूराम गुरुमार-विद्या ग्राजमा रहे है। यह टिप मैने ही दी थी उसे। अगर लड़कियों को पटाना चाहते हो तो उनकी मातृभाषा के दो-एक सेंटेंस सीख लो। अमेरिकन है न, उस पर कम्प्यूटर का काम। दो वाक्य स्टैंडर्ड कर लिए थे। "केमोन ग्राछेन।" और फिर मौका मिलते ही "ग्रापनी बड सुन्दर।" यानी ग्राप बडी सुन्दर है। कार्ल ने उसे अपनी नोटबुक दिखलायी थी, अंग्रेजी शब्दो में दुनिया की जाने कितनी भापाओं के वाक्य लिख छोड़े है। मैने तो सर ही पकड लिया। "यह किया क्या है तुमने। बंगला से लेकर सोमाली तक कोई भापा नही छोडी।"

कार्ल ने कहा, "कब कौनमी भापा की जरूरत पड जाए! तो कैसे काम चलाऊँगा, तुम्हीं बतलाग्रो?"

कार्ल ने पाँव समेटकर मेरे लिए जगह वना दी। मैने कहा, "उस रोज जापानी लड़कियों के बारे मे थीसिस सुना रहे थे।"

"हाँ, दुनिया भर मे सिर्फ जापानी लडकियो ने ही पुरुप के मनो-रंजन को सीरियसली लिया है।"

"ग्रौर ग्रमरीकी लड़कियाँ?" कार्ल को उकसाने के लिए कह दिया।

"उन लोगो की बात छोडो ग्रनि। जी चाहता है सन्यासी होकर भाग जाऊँ। लम्बी मोटर कार की पिछली सीट पर इन लोगो से प्रेम किया जा सकता है। लेकिन शादी की कि मरे। जिन्दगी-भर जान ग्राफ़त मे किए रहेगी।" कॉर्ल ने दुखी होकर कहा, "खाना पकाना जैसी चीज को ग्राजकल की इन देविग्रो ने देश से निकाल ही फेंका है। जबकि हर ग्रौरत हजारो डालर सिर्फ किचेन यूटेन्सिलस पर फूँकती है।"

"तो इसका रास्ता क्या है? मैने पूछा।"

"रास्ता बिलकुल सीधा है—चीनियो का रास्ता ग्रपनाग्रो।"

"याद रखो कॉर्ल तुम ग्रमरीकी नागरिक हो, तुम्हारी जेब मे यू.एस. सर्टिफिकेट है," मैने कॉर्ल को सावधान कर दिया।

"सो व्हाट ? दुनिया की और किसी भी जाति ने खराब खाने को लेकर डाइवोर्स का ग्राउण्ड बनाने की हिम्मत की है ? चीनी लोग अपने में खोयी जाति है। खराब खाने पर डाईवोर्स देना बंद कर दिया है। इसीलिए तो यह जाति इतनी गरशिक हो गयी है।"

मैं इसके बाद खिड़की से बाहर की ओर देखने लगा। बॉलकनी के लोग और भी धुंधले हो गए हैं। फिर भी मैं वेणीमाधव राय को देख पा रहा था। लेकिन वे लोग शायद हम लोगों को नहीं देख पा रहे, इसीलिए पूरे बोइंग ७०७ प्लेन की ओर देख रहे थे।

अपने सिर के ऊपर लगी कॉलिंग बेल को दबा दिया। इस बेल के दबाते ही किसी होस्टेस को आना पड़ेगा। इन एअर-होस्टेसों को खूब नजदीक से अच्छी तरह देखना मुझे बड़ा अच्छा लगता है। ऐसा एक गुड़िया जैसा भाव रहता है इन लोगों के चेहरे पर। आप सोचते हैं यह देखना ही सब कुछ है तब तो आप कुछ नहीं जानते। इस तरह कितनी विमान-बालिकाएं आसमान के बीच यात्रियों से प्रेम करने लगती है. इसका कोई हिसाब नहीं है। महाशून्य में नजरें मिली और फिर जमीन पर आकर पक्का इतजाम हुआ--इस बात की कितनी नजीरें आप चाहते हैं ?

जब बैल दबायी है तो देखा जाय कौन-सी परी आती है।

लेकिन भाग्य शायद बहुत ही मंद रहा ? चार-चार छोकरियों में से जो सबसे बूढी थी वही मेरे पास आयी। बुरा न मानने की बात नही है मिस, अब तुम्हे एअर होस्टेस बनी रहना अच्छा नहीं लगता। अब आप बुआजी बन गयी है जाकर घर-गृहस्थी सम्हालिए, और नहीं तो जाकर सिटी बुकिंग काउण्टर पर टिकट ही बेचो।

फिर भी जब आकर खडी हो ही गयी तो धीमे निपोरनी पड़ी। आँखो को जरा शरारती स्पिन दिया। मैंने कहा "मिस, अब जान तुम्हारे ही हाथों में है। अगर इस गरीब की मृत्यु का कारण न बनना चाहो तो एक पैग ह्विस्की ले आओ।"

बुढिया कानून दिखलाने लगी। "सारी। प्लेन के शून्य मे पहुँचने

से पहले कोई भी ड्रिंक सर्व करने का क़ायदा नहीं है।"

आँखों की शरारत और बढ़ा दी। फिर बड़ी मायूसी से उसकी ओर देखा, इस बार जाकर डीप फ्रीज़ उस बुढिया में थोड़ी गर्माहट आयी। एक छोटी-सी बोतल छुपाकर रख गयी। बिना सोडा या पानी मिलाए थोड़ी-सी स्कॉच गले मे डालकर मैंने बोतल कॉर्ल की ओर बढ़ा दी।

कॉर्ल के पास बैठे कुमार पर भी नजर टिकी। उसकी ओर भी बोतल बढ़ानी चाहिए थी। जो भी हो छोकरा इंडो-अमेरिकन इटिग्रेशन का एक चलता-फिरता मान्यूमेंट तो है ही। आधा भारतीय आधा अमेरिकन। लेकिन इन सारी बातों में उसका ध्यान नहीं था। इस बीच वह कोई बुक खोलकर बैठ गया।

नजर तिरछी करके किताब की ओर देखा तो मिजाज ख़राब हो गया। अमाँ पढना है तो कामसूत्र पढ, या भारतीय मंदिरो की दीवारों पर बनी मिथुन-मूर्तियों के फोटो देख। सो तो नही, 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया'—जवाहर लाल नेहरू की 'भारत की खोज' धत् यह भी कोई अश्लील किताबे पढने का वक्त है। कब, कहाँ, किसने खोजते हुए ठोकरे खाई और फिर बाद मे काफ़ी कोशिशों के बाद मुसीबतों का सामना करते हुए भारत को खोज निकाला, इससे मुझे क्या? कभी-कभी हिस्ट्री मे कुछ लोग आकर खामख्वाह डिस्टर्ब कर जाते हैं। सब कुछ मजे से ठीक-ठाक चल रहा है, सूरज और चाँद उदय-अस्त हो रहे है, खेतो में फसले लहलहा रही है, गाये दूध देती है, घर-घर नियमित भाव से बाल-बच्चे हो रहे है,—ऐसे मे अपना घर न सँभाल कुछ लोगो को जंगल से भैंसे भगाने का फितूर सवार होता है। उनमें से कोई कन्या कुमारी के आख़िरी शिलाखंड पर बैठकर महामानव बनने की बात सोचना शुरू करता है, कोई परिव्राजक होकर निकल पडता है तो कोई सम्बुध अफ्रिका चला जाता है। कोई पाडिचेरी भागता है, तो कोई जेल पहुँचकर ही किताब लिखने बैठता है, और अशांति बढाता है। मैं पक्का ब्राह्मण हूँ, मेरे

पिताजी बुद्धू हो सकते है, मै पूरा गुरु घंटाल हूँ, मैं इस सबके बीच जरा भी नही हूँ।

इसी बीच सामने की लाइट ने हम लोगो को बैल्ट बाधने का निर्देश दिया। उसके बाद एअर होस्टेसों का वही पुराना राग 'अपनी कंपनी के बोईंग ७०७ मे आपका स्वागत है। हम लोग अब टोकियो के एअर-पोर्ट की ओर जा रहे है। आपके कैप्टन का नाम पीटर लॉग है। आप लोग धूम्रपान बन्द कर दे। हम लोग आसमान मे इतने फ़ुट की ऊंचाई से जायेंगे। यह प्लेन पूरी तरह 'प्रेशेराइज्ड' है। अगर किसी वजह से प्रेशर कम हो जाए, जिसकी कि कोई संभावना नही है—तो उसके साथ ही-साथ आप के सिर के पास ऊपर से एक ऑक्सीजन मास्क आ जाएगा। इस मास्क को किस तरह उपयोग मे लाया जाता है यह हमारी विमान सेविकाएं आपको दिखलाएँगी।'

इन चेहरों को देख-देखकर मैं ऊब चुका हूं। अब मैं जो मास्क दिखलानेवाली को देखता हूँ, यह जापानी छोकरी खराब नही है—कछुए के गोश्त से बनी मूरत, लगता ही नहीं कि अंदर हड्डी-पसली भी हो सकती है। मुझे बचपन से ही सिर्फ गोश्त अच्छा नहीं लगता इसी-लिए मा बोटियां मिलाकर दिया करती थीं। बोटियां तोड़ने में थोडी मशक्कत जरूर होती है लेकिन चबाने मे मजा खूब आता है।

मास्क उतारकर उस लड़की ने जैकेट पहन ली। माइक पर एनाउन्स हो रहा है 'चूँकि अब हम लोग कुछ देर के लिए महासागर के ऊपर से गुजरनेवाले है, इसलिए इंटरनेशनल सिक्योरिटी रूल के मुताबिक इस जैकेट का व्यवहार करने का तरीका बतलाया जा रहा है। यह जैकेट किस तरह फुलायी जाती है देखिए। विस्तृत विवरण के लिए अपने सामने रखी सचित्र पुस्तिका देखें।'

मैंने देखा वह लड़की कुछ दबा रही थी, और साथ-ही-साथ लाईफ़ जैकेट फूल उठी। एक वैसी ही जैकेट चटपट दे दे भाई। विपत्तियों के सागर में सिर्फ़ अपनी अप्राण कोशिशों की बदौलत तैर रहा हूँ। बिना

मेहनत तैर पाने की मशीन मिल जाने पर कोई तकलीफ़ नहीं रह जाएगी।

कमर में सेफ्टी बैल्ट बगैर बाँधे ही बैठा था। लेकिन एअर होस्टेस की नजर पड़ गयी। इस बालिका ने सोचा शायद यह मेरा पहला विमान-विहार है, झुककर मेरी कमर मे सेफ्टी बैल्ट बाँधने में मदद करने लगी। लड़की कुछ ज्यादा ही झुक आयी थी। आप अंदाजा लगा सकते है कि इस तरह लडकियो के झुकने पर भगवान के दिए कुछ 'एक्सक्लूसिव' अंग-प्रत्यॉंगो की क्या हालत होती है? मे चुपचाप बुद्धू की तरह बैठा रहा। सिर्फ फार्ममेलिटी के नाते एक मीठा थेंक्यू उछाल दिया। बालिका उसीसे खुश होकर खटखट करती चली गई। वह वेचारी कैसे समझती कि मेरे अदर किस तरह कीचड के गुब्बारे उठ रहे थे।

बोइंग ७०७ सौ से ज्यादा यात्रियो को लिए 'रनवे' पर रपटने लगा। अदर हम लोगो को कोई आवाज सुनाई नही दे रही थी। कैसे एक भले लड़के की तरह मोटर गाड़ी की रफ्तार से आगे बढ रहा है—और बाहर इस जेट के वायु निष्क्रमण के फलस्वरूप कैसी कान फाडनेवाली आवाज हो रही है, जरा अदाज करिए।

काफी दूर जाने के बाद प्लेन ने मोड लिया। इसके बाद जैसे रेस मे जीतने के लिए धोती घुटनो के ऊपर समेटकर दौड़ लगाई। क्षणभर के लिए वदन जैसे एकदम हलका हो गया—जैसे किसी ने इस बूढे बच्चे को अचानक गोद मे उठा लिया। हम लोग स्नेहमयी पृथ्वी की गोद छोड़कर ऊपर उठ आए। जमीन छोडते वक्त एअरपोर्ट के उस पारवाली बालकनी की ओर नजर गई। मुझे लगा वेणीमाधव राय का उजला श्याम बदन अभी भी हम लोगो की ओर देख रहा है। मेरा दिमाग फिर बहक गया। मै साफ़-साफ़ ही कह देना चाहता हूँ कि अपने पिता हरेन-चन्द्र शास्त्री, यह वेणीमाधव राय, मैं इनमे से किसी की भी, परवाह नही करता। मै इस दुनिया में आया हूँ और जहाँ तक होगा अपने बूते पर

चलता रहूंगा। हरेन बाबू, वेणीमाधव राय, आप लोग दया करके कहीं मेरा हिसाब न गड़बड़ा दें।

कमर में बेल्ट बांधे-आधे चलने-फिरने की शक्ति खोए पड़ा हूं और यही मौका पाकर यादों की चरखी उल्टी ओर घूम-घूमकर अतीत को मेरे सामने ला रही है।

अपने पिता हरेनचंद्र शास्त्री को देख रहा हूं, उनके हाथ में लाल जिल्दवाली एक पतली-सी पुस्तक है। अखबारी कागज पर छपी, विद्या-सागर महाशय की मोनोग्राम मार्का पुस्तक के ऊपर काली स्याही में लिखे चार अक्षर 'बोधोदय' जैसे मुझे निगलने आ रहे हैं।

पिताजी का रंग गोरा है। नंगे बदन से पसीने टपक रहे हैं, यज्ञो-पवीत भीगकर चिपचिपा गया है। मां बाँये हाथ से ताड़ का पंखा हिला रही है, और मैं सामने सिर नीचा किए अपराधी की तरह बैठा हूँ। पिताजी ने फिर सवाल किया "जिन सब वस्तुओं में जीव है, लेकिन जन्तुओं की तरह घूमने-फिरने की शक्ति नहीं है, उन्हें क्या कहते हैं?"

"क्या हुआ, चुप लगाए क्यों बैठा है? जवाब दे।"

पिताजी की रौद्रमूर्ति देखकर मां भागी-भागी आयी। "अरे छोटा बच्चा है, समझता नहीं है, बतला दो।"

पिताजी ने किताब मेरी ओर फेंक दी। किताब की ओर देखकर मैंने जवाब दिया, 'वनस्पतियाँ यानी पेड़-पौधे।

श्रद्धेय विद्यासागरजी, इस बोइंग ७०७ में चढ़ने के बाद आप से पूछने को जी चाह रहा है, मेरी ओर गौर से देखिए, मुझ में जीव है लेकिन घूमने-फिरने की शक्ति नहीं है। तब क्या मैं कोई वनस्पति हूँ।

ईश्वरचंद्र विद्यासागर के परम भक्त विख्यात पंडित हरेनचंद्र शास्त्री अपनी संतान को आदमी सा आदमी बनाने के लिए कमर कसकर जुट गए। रिपन कॉलेजिएट स्कूल के संस्कृत के मास्टर साहब कम शौकीन

नही थे। लडका पैदा होने की खबर मिलते ही शब्दकोश खोलकर बैठ गए नाम खोजने के लिए।

आप सब लोगो से करबद्ध होकर प्रार्थना करता हूँ कि बाल-बच्चा पैदा होते ही नाम खोजने के लिए शब्दकोश खोलकर न बैठे। खुद जो न बन पाए या जो बन पाने का बूता नहीं, उसके लिए अपने वंशधर से आशा कर उस बेचारे को मुसीबत में न डालें। मेरे ही पिताजी की बात ले लें, बहुत सोच-विचारकर नाम ढूँढा—अनिर्वाण—लेकिन क्या फ़ायदा हुआ है! इसके साथ जो बहुत से सपने जुड़े है, आशाएँ और आदर्श जुड़े, उनके बारे मे क्या मुझे ध्यान रहता है?

हे पूज्य पिताजी आप जहाँ पर भी रहें, आपसे मेरा एक विनम्र निवेदन है, यह 'अनिर्वाण' शब्द ही झूठा है। बुझेगी नही ऐसी किसी आग की कल्पना भी नही की जा सकती। और तो और एक रोज सूर्य तक को ठंडा होना पड़ेगा।

पिताजी, अपने ज्ञानचक्षुओ से आप के खड़ाऊँ पहने दोनो पाँव देख रहा हूँ, लेकिन मेरे मुँह मे ह्विस्की की बू है, मेरी जेब में रबड की बहुत-सी चीजें है—मै इस वक्त आप जैसे सात्विक महापुरुष का चरणस्पर्श नही कर सकता।

दुनियाभर के लोग मेरे पिताजी का आदर करते थे। उनके पांडित्य और उनकी निष्ठा से प्रभावित होकर दूर-दूर के लोग राजवल्लभ साहा सैकेंड बाई लेन की हमारी वेद पाठशाला मे आया करते। पंडित के माने ही गरीब होता है—आचार्य की पत्नी के लिए नए कपडे नही जुटते। लेकिन हम लोगों की हालत इतनी ख़राब नही थी। मेरी माँ का रंग गहरा लाल था। माँ चटक लाल किनारे की ताँसी साड़ी पहनतीं। और थे गहने, गहने भी बहुत थे, मेरी माँ के सुनहले शरीर पर फ़बते भी खूब थे। मेरे बाबा, दादाजी ने संस्कृत की एक उपक्रमणिका लिखकर 'टू पाईस' बना लिए थे। हम लोग उसके फलस्वरूप एक दो-मंज़िले मकान, कंपनी के कागजात और आमता में कई बीघे खेत के मालिक थे।

पिताजी कहा करते "घर में अगर कोई उस एक किताब को अच्छी तरह पढ़ ले तो समझ लो वह तर गया। तू मन लगाकर 'बोधोदय' पढ़ ले, नहीं तो बाद में पछताएगा। नींव खराब होने से बाद में घर ढह जाएगा। 'बोधोदय' नींव है।"

जरा मेरी हालत पर गौर कीजिए। आजकल के लड़कों का 'बोधोदय' से पिंड छूटा है या नहीं यह तो मुझे नहीं मालूम लेकिन इतना जरूर मालूम है कि मेरी नस-नस में 'बोधोदय' को घोटकर उसके अर्क का इंजेक्शन घुसा देने की कोशिश की गयी।

यकीन न मानें तो सुनाती पकड़िए। फटाफट बोल सकता हूं! 'इस संसार में हम जिन सब वस्तुओं को देखते हैं, उन वस्तुओं के समुदाय को जगत कहते हैं। पदार्थ दो प्रकार के हैं, सजीव और निर्जीव। जिन सारी वस्तुओं में जीव है, अर्थात जिनका जन्म, वृद्धि और मृत्यु होती है, वे हैं सजीव पदार्थ।'

पढ़ाते पढ़ाते पिताजी रुकते। और मेरे दिमाग में एक सवाल कौंध जाता। मैं पूछता "तब तो मैं सजीव पदार्थ हूँ पिताजी।"

"निश्चय ही हो। इसमें क्या गलत हो सकता है?"

इतनी सी बुद्धि होती तो पिताजी को मुश्किल में डाल देता। मैं सवाल कर बैठता "मैं पैदा हुआ, बड़ा हो रहा हूं (हर साल पैर का जूता छोटा हो जाता है) लेकिन मेरी मृत्यु कैसे होगी? मैं तो अनिर्वाण हूँ।

लेकिन उन दिनों उतनी बुद्धि नहीं थी, इसलिए मन लगाकर पिताजी की बात सुन जा रहा था। वे मुझे समझा रहे थे 'निर्जीव जड़ पदार्थ की मृत्यु नहीं होती।'

मृत्यु की बात तब समझ में आती थी! इसीलिए सोचा करता जड़-पदार्थ होने में ही फ़ायदा है—एक जगह से दूसरी जगह न जा पाए तो न सही, मेरी नानी भी तो अपने आखिरी दिनों में हिल-डुल नहीं पाती थी, चारपाई पर ही पड़ी रहती थी, फिर भी मर गयी।

पिताजी से यह सब नहीं कहा। मेरे मन की बात का जरा भी

अंदाज़ा करपाते तो फ़ौरन पंजे का हत्था पीठपर जमा देते।

पदार्थ के बाद ही पिताजी ने ईश्वरवाला परिच्छेद पढ़ाया था। आप लोगों से साफ़-साफ़ कहे दे रहा हूँ, ये ईश्वर महाराज मेरे दिमाग में ही बन रहे, उसके बारे मे सर खपाकर फालतू वक्त बरबाद करने को जी नही चाहता। ईश्वर के बारे मे बहुत कुछ कह सकता हूँ, सामनेवाली सीट पर बैठे निमाई मुकर्जी या और भी आगे बैठी मिसेज इंद्राणी सेन की तरह ईश्वर की भी बहुत-सी करतूतो का भंडाफोड कर सकता हूँ। लेकिन फ़िलहाल चूँकि हवा मे तैर रहा हूँ, ईश्वर को लेकर दिमाग ख़राब करने को जी नही चाह रहा।

इस ईश्वर को लेकर भी अजीब मुसीबत नही है। जन्तु नही है, मानव भी नही है—इस सबसे अलग वे सिर्फ़ ईश्वर है। 'ईश्वर को कोई देख नही पाता लेकिन वह हर जगह मौजूद है।' इसके मायने वे यहाँ भी बिना टिकट यात्रा कर रहे है। पिताजी ने लाल पैंसिल से मेरी पुस्तिका मे निशान लगा दिया था। 'हम जो कुछ करते है, वे उसे देखते है; हम जो कुछ भी सोचते है, वे उसे जान जाते है।'

तब तो ख़ास चिंता की बात नही है। श्रीमान अनिर्वाण चट्टोपाध्याय अपने छुटपन से जो-जो करते आए है वह सब अगर ईश्वर की नोट बुक में दर्ज हो गया हो तब तो मेरे सारे जुर्म ख़त्म। क्योंकि, पगडी बांधे मोटे पेटवाले बेईमान व्यापारियो की तरह मै हिसाब की दो बहियाँ रखता हूँ। देख नही रहे मेरा चेहरा कितना सपाट और मासूम है, जैसे कुछ समझता ही नहीं। जबकि मेरा एक और भी रूप है। और मेरे हिसाब की असली बही वही है।

अपने एक नम्बर के मुखौटे की बदौलत ही मैंने बेणीमाधव राय को जीता है। वेणीमाधव राय भी देखकर हैरान रह गए थे। पहले मोटे कांचवाले चश्मे के पीछे से और फिर चश्मा उतारकर काफी देर तक

मेरे चेहरे की ओर ताकते रहे। फिर बोले "ठीक जैसे हेरेनबाबू खुद आ बैठे हैं। बचपन में हमलोगों ने उन्हे ठीक तुम्हारी उम्र में ही देखा था।"

वेणीमाधव आज इतने रोज बाद भी हरेनचंद्र के बारे में कुछ भी नही भूले है। कहने लगे "वही चेहरा, वही बाल, वही नाक, वही आंखें।" मेरी पीठ पर जोर से थपथपाते हुए उन्होंने कहा "हरेनबाबू को एक बार फिर से देखने की बड़ी इच्छा थी, तुम्हें अमेरिका भेजकर ईश्वर ने मेरी वह इच्छा पूरी कर दी।"

इस पर मैंने कुछ भी नहीं कहा। इस तरह चुप्पी साध ली जैसे सचमुच हरेनचंद्र शास्त्री का दूसरा संस्करण इस अमेरिका में आ पहुँचा हूं। वैसे मन-ही-मन अच्छी तरह समझता था कि हरेनचंद्र शास्त्री का खोल छोड़कर मुझमें उनका और कुछ भी नहो है। जैसे मैं हरेनचंद्र जी को कहीं और बांधकर उनकी खाल पहने घूम रहा हूँ।

बचपन से ही वेणीमाधव राय का नाम सुनता आया हूँ। राजवल्लभ साहा सैकेण्ड बाई लेन से निकलकर बाजार में आते ही दाईं ओर चाहर-दीवारी से घिरा एक मकान है। पता नही उस बँगले में कब से रंगाई-पुताई नही हुई है—अंदर किसी ने एक प्रेस बैठा लिया है। सारे दिन खटपट करती ट्रेडल में रसीद बुक, हैंडबिल और फ़ार्मं वगैरह छपा करते। पिताजी प्रायः ही कहते कि इस टूटे-फटे मकान में ही वेणीमाधव राय जैसा प्रतिभाशाली लडका पैदा हुआ था।

राजवल्लभ साहा लेन के हम सब लड़के बैठकबाजी करते गोली खेलते, छुपाकर बीडी फूंकते और कहते, हम लोग कभी भी नाम नहीं कमा सकते। बिना अच्छे वातावरण के महान आत्मा का जन्म नही होता। पार्टी वर्कर जितेनदा उस रोज कह गए न "यह प्रतिभा वतिभा सब फालतू चीज है। सब एक जैसी प्रतिभा लिए पैदा होते हैं—समाज का काम है सबका विकास करना। समाज वैसा नहीं करता, वह सिर्फ़ अपने प्यारे और क़रीब के लोगों के अंडे सेहता है। सारे अंडे फूट पड़ें तो समाज के ठेकेदारों की हालत खराब नही हो जाएगी? बड़े

आदमियों के यहाँ कौन जाकर बेगार खटेगा ? गरीब न रहें तो बड़े लोगों के लिए एक रोज काटना भी मुश्किल हो जाएगा।'

तभी से स्कूल के मास्टर भी वेणीमाधव राय पर गर्व करते थे। कहते है 'जानते हो इसी घर में रहकर वेणीमाधव ने कितनी मुसीबतों का सामना करके पढाई-लिखाई की।' स्कूल की मैगजीन मे भी लेख छपा था। 'विश्वविजयी वैज्ञानिक वेणीमाधव राय—यह सूचित करते हुए हमे बडा हर्ष हो रहा है कि हमारे स्कूल के भूतपूर्व छात्र श्री वेणी-माधवराय को हाल ही में अमेरिका के वैज्ञानिकों ने विशेष रूप से सम्मानित किया है। न्यूटन विश्वविद्यालय में भी जीवकोष-रहस्य विषय पर अपने शोध से उन्होंने नई संभावनाओं का द्वार खोल दिया है।'

हमारे स्कूल मे निरापददा बडे भारी कवि थे। हम लोगों को आशा थी कि क्लास नाइन के विद्यार्थी निरापददा एक दिन रवीन्द्रनाथ ठाकुर को भी पीछे छोड जायेंगे। हमारी क्लास के दो लड़को ने तो दो-एक पाँडुलिपियाँ भी हथिया रखी थी। निरापददा के विख्यात होने पर इनसे अच्छी खासी रकम वसूल की जाएगी। इसके अलावा शारदीय विशेषाको में छपेगा 'कवि निरापद दास की अप्रकाशित रचना, श्री नीलरतन हाजरा के सौजन्य से'। वही निरापददा आजकल हावडा रेलवे गुड्स रोड के पासवाले प्रेस मे असिस्टेट प्रूफ रीडर है। निरापददा जिस मनोयोग से प्रूफ देखते है और ऑफिस के बारे मे सोचते है उसे देखकर लगता है कि रिटायर होने से एक-दो साल पहले कम-से-कम ढाई सौ रुपया ज़रूर पाने लगेंगे। इन्ही निरापददा ने ही उस बार की साहित्य सभा मे वेणीमाधव राय पर कविता पढी थी। एक लाइन मुझे आज भी याद है : बगाली अभी तक सिर्फ़ गाने के राजा रहे है। वेणीमाधव ने प्रमाणित किया कि अबसे बगाली ज्ञान मे भी राजा हैं, बंगाल कुछ कम नही है।

मै इस सबमें सर नही खपाता था। यहाँ का कौन-सा विद्यार्थी विख्यात हो गया है, उससे मेरा क्या आता-जाता है ? मुझे तो इस

बेकार की आफत को भैंसागाडी की तरह खींचते ठीक करना ही होगा। असल में शुरू से ही अपना सुख छोड़कर और किसी चीज के बारे मुझे दिलचस्पी नहीं थी।

लेकिन वेणीमाधव राय का जिक्र करते वक्त पिताजी की आँखें नम हो आती थीं। पिताजी मुझे लेकर पढ़ाने बैठते, और कहते 'भूलना नहीं कि, इस हमारे घर के बाद तीन घर छोड़कर ही वेणीमाधव जैसा विद्यार्थी रहता था। तुझमें बुद्धि है, अगर तू मन लगाकर पढ़े, तुझमें बोधोदय हो जाए, तो तू भी उसी तरह विख्यात होगा। तुम लोगों के कारण ही यह राजवल्लभ साहा सैकेंड बाई लेन भी विख्यात हो जाएगी।'

पिताजी की उन सब बातों को सोचकर आज हँसी आती है। अनिर्वाण चटर्जी के कारनामों की बदौलत राजवल्लभ साहा लेन की बदनामी फैल सकती थी। लेकिन पिताजी का ही ख्याल करके किसी लड़की के सामने राजवल्लभ साहा सैकेंड बाई लेन का नाम नहीं लिया। उस बार जब लक्ष्मीरानी नाम की एक लड़की के चंगुल में फँसा था। बिस्तरे पर लेटे-लेटे रजाई को छाती तक ओढ़कर मुस्कराकर उसने पूछा "कहाँ रहते हो?" बिस्तरे पर पड़े-पड़े झूठ बोलने की मुझे जरा भी इच्छा नहीं होती। फिर भी मजबूर होकर मुझे कहना पड़ा था 'टन-टन में' राजवल्लभ साहा लेन को नीचा नहीं दिखलाऊँगा।

हम लोग जब छोटे थे तो सब लोग जरूरत बेजरूरत नसीहत देने की कोशिश किया करते। घर में, रास्ते में, किताबों के हर पेज पर, स्कूल की दीवारों पर, हर जगह सिर्फ उपदेश और ज्ञान। पिताजी बोधोदय से पढ़ाया करते 'मनुष्य शैशवावस्था में अति अज्ञ होता है। क्रमशः जैसे-जैसे बड़ा होता है, उपदेश ग्रहणकर, विभिन्न विषयों में पारंगत होना आरम्भ करता है।'

अब समझिए मेरे जैसे आदमी की जिंदगी ठीक उससे उलटी रही है। शायद सिर्फ शैशवावस्था में ही बिलकुल विशुद्ध रहा होऊँगा। उसके बाद जैसे-जैसे बड़ा हुआ, वैसे-वैसे उपदेश और ज्ञान पी-पीकर पक्का

होता गया—यहाँ तक की सड़ गया ।

लोगों को ज्ञान वघारने का ऐसा मर्ज है कि क्या कहूँ । इधर किताब मे लिखा है, 'जो विद्याभ्यास मे ग्रालस्य ग्रौर ग्रवहेलना करता है, सिर्फ खेलता-फिरता है, वो मूर्ख रह जाता है ग्रौर जीवनभर कष्ट प्राप्त करता है।' ग्रगर ऐसा ही होता तो ग्रपनी गली का सोनाभाड इतना सुखी कैसे है ? सोनाभाड किसी तरह दस्तखत कर पाता है, सोना का लडका भी पढाई-लिखाई को ताक पर रखकर गले मे सोने की चेन पहने घूमता है ।

जो लोग बाल्यकाल में मनोयोग से विद्याभ्यास करते है, वे लोग किस तरह सुखी जिदगी जीते है यह तो मै ग्रपने नेपूदा को देखकर ही समभ गया हूँ । नेपूदा को मैट्रिक मे वजीफ़ा मिला था, ग्रब कबूतर की तरह छाती फुलाए हमारे स्कूल मे लडकों को बुद्धू बना रहे है । घर में पानी नहीं है, नेपूदा को रोज सडक के नल पर लाइन लगानी पड़ती है ।

पिताजी दिन-रात भगवान को भजते, ग्राध घंटा ग्राँखें बद किए सध्या करते है । ग्रौर उधर हमारे मोहल्ले से जरा ग्रागे रहनेवाले महा-प्राण हिमाशु शर्मा ने 'दमाहरण' ग्रौर 'नारी सखा' बेचकर तिमंजिली इमारत खडी करली है ।

महाप्राण हिमाशु शर्मा के पिता ज्ञानांशु शर्मा को स्वप्न मे दमाहरण का नुस्खा मिला था । जीव के मंगल के लिए वह दवा मुफ्त मे बाँटते है, किसी तरह की कीमत लेना महापाप मानते है । सिर्फ देवी-पूजा ग्रौर धर्मार्थ के लिए दस रुपए दस ग्राने वसूल करते है । इसके बाद हिमाशु शर्मा ने यह सोचकर कि सिर्फ़ एक दमाहरण के भरोसे रहना ठीक नही है, नारी सखा तैयार की । हर बिजली के खंभे, हैडबिलों ग्रौर ग्रखबारों मे विज्ञापन निकलवा दिए । एक रोज सडक पर खडा था कि एक-ग्राठ साल का लड़का नारी-सखा का हैंडबिल दे गया । हैंडबिल पढकर कुछ

भी समझ में नही आया। पिताजी से पूछने पहुँचा 'पिताजी ऋतुबध माने क्या होते है ?'

पिताजी का चेहरा सुनकर गंभीर हो उठा। उन्होने पूछा "क्यों पूछ रहे हो ?"

डरते-डरते कागज दिखलाया। पिताजी मेरे हाथ से कागज लेकर उसे टुकडे-टुकडे करके फेंकने के बाद बोले "जाओ जाकर अपनी पढाई मे मन लगाओ।"

अगले रोज हिमाशु शर्मा के लड़के, अपने सहपाठी मंटू को सब बतलाया। मंटू तो सर पकड़कर बैठ गया "तूने यह किया क्या ? पण्डित जी से पूछने पहुँचा। बाल-बच्चा होने से जहाँ बावेला होना है वे ही 'नारी सखा' खरीदने आता है। सीधे-सीधे लिखने पर पुलिस पकड लेगी, इसी-लिए यह कोड बनाकर लिखना पड़ता है।"

"बच्चा होने मे शर्म की क्या बात है : मैंने बुद्धू की तरह पूछा।"

मंटू ने कहा "जरा और बडा होले, तब समझ जाएगा।"

मटू जरा भोदू-सा था। मै कहा करता "तेरे दादा और पिताजी को सपने मे कैसी अच्छी-अच्छी दवाएँ मिल गयी हैं जिनसे तुम लोग बडे आदमी हो गए। मै तो सपने मे इतनी कोशिश करता हूँ फिर भी कुछ पल्ले नही पड़ता। एक बार देखा, सूनसान रास्ते से गुजर रहा हूँ। चलते-चलते अचानक नजर पड़ी, सड़क पर कोई चीज पडी थी, ठीक गिन्नी की तरह। लेकिन भाई, झुककर देखा तो ताँबे का एक पैसा था। उसे भी जैसे ही उठाने के लिए झुका तो पता नही कहाँ गुम हो गया। साथ-ही-साथ नीद भी टूट गयी।"

मटू ने कहा "किसी को बतलाना मत, यह सपने-वपने सब झूठी बाते है। दादाजी और पिताजी ने सर खपाकर काफ़ी मेहनत में बाद ये दवाइयाँ तैयार की है। दादाजी उस रोज पिताजी से क्या कह रहे थे पता है। कह रहे थे, इंडिया मे चालीस करोड लोग हैं, उन सबको अगर दो आना भर भी ठग लो तो इतना रुपया हो जाएगा कि घर में

रखने की जगह नही बचेगी। और हाँ, सब खुद नहीं खाना। बिना नमक खाए लोग गुणगान कैसे करेंगे? इसके अलावा जिसके यहाँ जितना भजन-कीर्तन होता है लक्ष्मी उस पर उतनी ही कृपा करती है?

वही मंटू आज कंपनी का मैनेजिंग डॉयरेक्टर हो गया है। मुझे अमेरिका एक चिट्ठी लिखी थी कि अगर मैं वेणीमाधव राय से उसके नए तावीज के लिए एक सर्टिफ़िकेट लिखवाकर भिजवा सकूँ। तावीज एक्सपोर्ट करके फ़ौरन एक्सचेंज इकट्ठा करना चाह रहा था। मैं मदद कर दूँ तो काफी कमीशन देगा।

पिताजी मुझे जो कुछ भी सिखलाना चाहते, उसमे मेरे पल्ले कुछ भी नही पडता था। फिर भी पिताजी ने मुझे 'बोधोदय' रटाकर ही दम लिया। उसके सारे नीतिवाक्य मै एक साँस में दुहरा सकता हूं। उमंग बढने पर पिताजी ने और भी बहुत-सी पुस्तकें लाकर दी। लेकिन इनमें से कोई भी मुझे नर्म न कर पायी। पता नही क्यो मेरे दिमाग में 'बोधोदय' की वही एक बात हमेशा चक्कर काटा करती है, 'इन्द्रिय ज्ञान का द्वार स्वरूप है। इन्द्रिय न होने पर हम किसी भी विषय के बारे में कुछ भी नही जान सकते।'

पिताजी बार-बार 'पंचेन्द्रियों' की बात याद रखने को कहा करते। "चक्षुओ से जो ज्ञान प्राप्त होता है उसे दर्शन कहते है, कर्ण द्वारा प्राप्त ज्ञान को श्रवण कहते है, नासिका द्वारा जो ज्ञान प्राप्त होता है उसे घ्राण कहते है, जिह्वा द्वारा प्राप्त ज्ञान को आस्वादन कहते है, और त्वचा द्वारा प्राप्त ज्ञान को स्पर्श कहते है।"

आज मुझे हँसी आती है। पिताजी पूछा करते "अभिज्ञता कैसे होती है?"

मैने फौरन तपाक से जवाब दिया, "इन्द्रिय विनियोग से।"

मै सीधे-सादे बालक की तरह बैठा रहता। लड़के की सूरत देखकर जन्म देनेवाले पिता भी नही समझ पाते थे कि चिरंजीव के मन म क्या है।

जैसे-जैसे बडा होता गया, मेरी समझ में यह बात उतनी ही दृढ होती गई कि इन्द्रिय ही सब कुछ है। लेकिन इन्द्रियों की सारी ज्वाला एक न एक दिन फ्यूज हो जाएगी तब मोहल्ले के लडके मेरे इस तन को काठी पर लिटाकर घाट ले जायेंगे, पिताजी ने फिजूल ही अनिर्वाण नाम रखकर झमेला खडा किया।

बाद में यह सब नही सोचता था। नाम तो प्रॉपर नाउन होता है—काने को पद्मलोचन कहना व्याकरण की भूल नही होती।

आहिस्ता-आहिस्ता अपने इस बडे हो उठने, धीरे-धीरे दुनिया के रहस्यो की अनुभूतियों के बारे में कहना शुरू करूं तो एक और महाभारत तैयार हो जाएगी। दुनिया मे सब साले साधु बने बैठे है। अगर इस भेड को न पकड पाओ तो मरो। खुद का इतना बडा चरखा है, उसमें तेल लगाओ न। जितना दम हो समाज करके 'ऋणम् कृत्वा' करो।

मेरे साथ एक सुविधा थी। दैहिक सम्पर्क के बारे मे खास कुछ नही जानता था। मंटू के घर प्राय. जाया करता था। एक बार मंटू की एक मौसेरी बहन घूमने के लिए आयी थी। एक दिन उससे मुलाकात हो गयी। वह दार्जिलिंग के किसी कॉन्वेन्ट में पढती थी।

मंटू ही बोला, "शिप्रा, तेरी अंग्रेज़ी सुनवाने के लिए अपने इस दोस्त को लाया हूँ।"

शिप्रा कैशोर्य पूरा कर यौवन की ओर पांव बढा रही थी। साँवला रंग होते हुए भी काफी सुन्दर थी। दोनो आँखे हरिणी जैसी थी। मेरे लिए उन दिनों आँखें ही मुख्य आकर्षण थी—नेत्र ही तो नम्बर एक इन्द्रिय हैं। शिप्रा बोली, "क्या चिडियाखाने की बोलने वाली तोती हूँ कि मेरी अंग्रेजी सुनवाने इन्हे ले आए।"

मैंने शर्माकर कहा, "अंग्रेज़ी सुनना मुझे बडा अच्छा लगता है। हम लोग तो देसी स्कूलों में पढते है, हम लोग अंग्रेज़ी का ठीक उच्चारण नही कर पाते।"

तोती ने होंठ सिकोड़कर कहा, "मुझे तो बँगला अच्छी लगती है। आइए, आपके साथ रवीन्द्रनाथ की बँगला में बात की जाए। जानते है, दार्जिलिंग में बंगला न बोली जाने की वजह से मैं ऊब उठती हूँ।"

हम लोगों के लिए नाश्ता भेजने को कहने मंटो अपनी माँ के पास अन्दर गया। उसी वक्त मैं बुद्धू की तरह कह बैठा, "रवीन्द्रनाथ मुझे अच्छे लगते है। लेकिन उनसे भी अच्छे लगते हैं अंग्रेज लोग। रामकृष्ण घाट पर एक अंग्रेज मेम को गिटपिट अंग्रेजी बोलते सुना था, कह नहीं सकता कितना अच्छा लगा था।"

शिप्रा मेरे चेहरे पर अपनी आँखों की सर्च लाइट का फोकस डालकर ताकती रही। फिर हो-हो करके हँसने लगी। बोली, "अंग्रेजी सुनने का अगर इतना ही शौक है तो मेम से शादी करिएगा।"

और सुनो! अरे इसमें शादी-ब्याह की बात कहाँ से आ टपकी? शिप्रा के ऊपर गुस्सा चढ़ आया। अंग्रेजी जानती हो, नहीं सुनाना है तो वैसा कहो। रखो सब जमा करके दार्जिलिंग के लिए। मुझे इतना गुस्सा आ गया कि मंटू की राह देखे बगैर ही वहाँ से चला आया।

अगले रोज मंटू ने पूछा, "अरे क्या हुआ? बिना कहे-सुने भाग आया।"

मैं चुप रहा। मंटू ने कहा, "बड़ा भाग्यशाली है रे तू।"

"मतलब?"

"शिप्रा कह रही थी तू बहुत खूबसूरत है। तेरे बाल कितने घुंघराले हैं, तेरे बदन का रंग भी एकदम गोरे साहबों की तरह है।"

मंटू की रिपोर्ट सुनकर मेरे पूरे शरीर में एक नयी अनुभूति की लहर दौड़ गयी, जिसका अनुभव इससे पहले कभी नहीं हुआ था।

मंटू मेरे दिल की हालत नहीं समझ पाया। लेकिन मेरे अचानक चले आने से बेचारा काफी परेशान था। उसने कहा, "[illegible]

तुझसे क्या कह दिया ? जरूर अपमान किया होगा। मैं तो साफ-साफ़ कहे देता हूँ, दोस्त की प्रेस्टिज पहले है। मौसेरी बहन है तो क्या हुआ ?"

मैने कहा, "तूने उसीसे क्यो नही पूछा ?"

"पूछा था। कुछ भी नही बोली। सिर्फ इतना ही कहा कि लडको को अपनी खूबसूरती का इतना घमड होना अच्छी बात नही है। लेकिन यार तू इतना सुन्दर है, यह बात मेरे दिमाग मे तो कभी आयी ही नही। अब शिप्रा की बात सुनकर लगता है, बात ठीक ही है। उम्र थोड़ी और बढ़ने के बाद वाकई तुझे काफी मुश्किल मे पड़ना पड़ेगा।"

"मुश्किल कैसी ?" मैने डरकर पूछा।

मटू ने कहा, "अरे उस मुसीबत में भी मजा है। जब लड़कियों के जाल मे फॅसेगा तो सब समझ में आ जाएगा।"

इसके बाद शिप्रा से मिलने न जाने का सवाल ही पैदा नही होता।

मुझे देखकर शिप्रा ने कहा, 'अच्छा तो आए है। मुझे तो बड़ा डर लग रहा था, सोच रही थी, शायद अब मुलाक़ात ही न हो पाए। यहाँ हूँ ही कितने रोज ? स्कूल खुलने के दिन भी आ गये।"

मैंने कहा, "जी चाहेगा उससे ही शादी करूँगा।" इसके बाद दिमाग गड़बडा गया। कहते है न कि गुस्सा चाण्डाल की तरह होता है। अचानक मुँह से निकल गया, "मै मेम से शादी करूँ या तुमसे करूँ, इससे तुम्हे क्या ?"

कहने को तो कह गया लेकिन कहने के साथ ही चौक उठा। अपने होठो को दाँतो के बीच भीच लिया, लेकिन इससे पहले ही बात तो निकल चुकी थी। सोचा, बात बढ जाएगी। लेकिन ठीक तभी मंटू आ आ गया। मै घबड़ा गया, अभी शिप्रा गुस्से से लाल हो उठेगी, रो-धोकर भी मुझे झमेले मे फँसा सकती है।

लेकिन शिप्रा ने कम से कम मंटू के आगे मुझे बचा लिया। बिलकुल चुप रही। मैने मंटू से कहा, "मुझे एक काम है भाई अब चलता हूँ।"

उसके अगले रोज छुट्टी थी सो मंटू से मुलाकात नही हुई, उसके घर जाने की हिम्मत नही हुई। पता नही अब तक बात कहाँ से कहाँ पहुँच चुकी हो।

छुट्टी के अगले रोज मंटू को दूर से देखा लेकिन उसके पास जाने की हिम्मत नहीं हुई।

मंटू खुद ही मेरे पास आकर बोला, "क्यों रे क्या बात है, दो दिन से दिखलाई ही नही दिया। शिप्रा तेरे बारे मे पूछ रही थी।"

उसके बाद फिर न जाने क्या हुआ, मंटू के घर फिर से जाना शुरू कर दिया। शिप्रा जैसे उस घटना को बिलकुल भूल गयी थी। अचानक मुझे लगा कि शिप्रा इतनी सुन्दर है यह मुझे इससे पहले कभी महसूस नहीं हुआ। अबतक वह जैसे कली की तरह पत्तो के बीच छुपी थी और इस एक ही रोज मे अचानक खिल उठी।

शिप्रा बडी मीठी आवाज मे कहती, "जानते हो मंटू दा, मैं बड़ी हूँ। दौड़ने मे, पहाड़ पर चढ़ने मे, तैरने में और वॉलीबॉल मे कोई भी मेरा मुक़ाबला नही कर पाता।"

मटू कहता, "अच्छा, फ़ालतू की बकबक न कर।"

शिप्रा कहती, "हम लोगों को कोई फुटबॉल खेलने ही नही देता। एक रोज अपने बॉयेज स्पोर्टिंग क्लब मे चास दिला दो न, फिर देखना कैसे खेलती हूँ।"

मंटू ही हमारे बॉयेज स्पोर्टिंग का मुखिया था। मेरी हाथ की बात होती तो शिप्रा को एक चास जरूर देता। लेकिन अपने मुखिया मंटू का दिल नहीं पसीजा। उसका कहना था, "लड़कियाँ फ़ुटबॉल क्या जाने।"

जैसे-जैसे दिन गुजर रहे थे, जितना शिप्रा की ओर देखता वह उतनी ही सुन्दर लगती। मेरी घबड़ाहट भी उतनी ही बढ़ रही थी। बचपन से ही मेरा यह स्वभाव हो गया है। कोई भी सुन्दर चीज़ देखते ही मेरे हाथों मे खुजली मचने लगती है। सुन्दर खिलौना देखते ही झपट

कर उठा लेता और तोड़ताड़कर टुकड़े-टुकड़े करके फेंक देता।

इसके बाद की ही बात है। उस रोज छुट्टी के बाद स्कूल के बगीचे मे खड़ा था। एक बहुत ही खूबसूरत गुलाब का फूल खिल रहा था। मैंने हाथ बढ़ाया ही था तभी कान मे से आवाज आयी, "अनिर्वाण!"

चौंककर पीछे देखा, खुद पिताजी थे। कहने लगे, "फूल की शोभा पेड़ पर ही है। पेड़ पर फूल रहेगा तो कितने लोग उसे देखेंगे। जब तक जी चाहे दूर से देखो। फूल को पेड़ से विछिन्न करके नष्ट न करो।"

उस वक्त तो चला आया। लेकिन आंखें बन्द करते ही फूल दिखलाई देने लगा। पिताजी की बात से मन को समझाने की कोशिश की। अच्छी चीज को दूर से ही देखना चाहिए। मुझे छोड़ और लोग भी देखकर खुश हों। लेकिन मेरा मन भी एक ही अड़ियल है। मेरी कोई बात उसके कानों में नहीं गयी। जो किया ठीक किया, ऐसे ही करेंगे।

उस रोज रविवार था। घर से स्कूल की ओर निकल पड़ा। पंडितजी का लड़का होने की वजह से दरवान ने भी अन्दर जाने दिया, कुछ भी नही कहा। सीधे जाकर गुलाब के उस फूल को नोंचकर तोड़ लिया। बेचारा पौधा मूक वेदना से हिलने लगा। मैंने क्रूर आनन्द के साथ इतमीनान से फूल को नाक के पास ले जाकर गन्ध की सांस ली। वाह, कितनी मीठी खुशबू है।

गुलाब को फिर से सूंघा—लेकिन इस बार खुशबू उतनी मीठी नहीं लगी। बस थोड़ी खुशबू थी।

और एक बार सूँघने के लिए फूल को नाक के पास ले गया कि याद आया, फूल मे कीड़े होते हैं, नाक के ज्यादा पास ले जाकर सूंघना नही चाहिए, नाक में कीड़ा घुस आता है। इसके बाद सोचा फूल को जेब में रख लिया जाए।

लेकिन अगर दरवान पकड़ ले। जेब में फूल देखते ही सीधे पिताजी के पास शिकायत करेगा। उसके बाद क्या होगा वह भी जानता था। दो-एक थप्पड़ तो खाने ही पड़ेंगे। ऊपर से एक लम्बा-सा लेक्चर और

विद्यासागरजी की पुस्तक के कोटेशन हजम कर पाना बड़ा कष्टकर है। मामूली-सा गुलाब का एक फूल, उसके लिए इतनी आफत पुसाएगी! इससे तो फूल को गमले में तोड़कर फेंक दूँ और चलता बनूँ। गुलाब के फूल की पखुड़ियों से भी सुना है कभी-कभी कीड़ा निकल आता है।

वहीं से सीधा मंटू के पास जा पहुँचा। इतने बड़े मकान की छत के एक कोने में जाकर शिप्रा को पकड़ा। "मंटू कहाँ है ?"

दादा मौसीजी के साथ कपड़े खरीदने जी० टी० रोड० गए हैं, गाड़ी लेकर गए हैं, आते ही होंगे। बैठिए न।" शिप्रा ने कहा। मेरे दिमाग़ में रह-रहकर सिर्फ चटकदार गुलाब का वह फूल घूम रहा था। शिप्रा ने कहा, "इतनी देर से क्या सोच रहे हैं।"

"शिप्रा, हाल का खिला गुलाब का एक फूल देखा।"

"ऐसा, आपको फूल अच्छे लगते हैं क्या ?"

"मुझे सारी सुन्दर चीजों से प्रेम है, शिप्रा। जानती हो, गुलाब का फूल...।"

"क्या हुआ, रुक कैसे गए ?"

"फूल ठीक तुम्हारी तरह सुन्दर था, तुम्हारी तरह मधुर।"

"वाह, वाह। आप कविता लिखिए, खूब अच्छी होगी।"

"सोचता था, तुम्हें भेंट करने के लिए वह फूल लेता चलूँ।"

"तो लाए क्यों नहीं ? अच्छा ही रहता। दार्जिलिंग में, मैं रोज एक फूल अपने बालों में खोंसा करती हूँ।" गुलाब के फूल की तरह ही हँसकर शिप्रा ने कहा। अचानक लगा जैसे एक अजीब बात हो रही है। मेरी नजरों के सामने देखते-देखते शिप्रा खुद ही जैसे एक ताजे और ओस में भीगे गुलाब में बदली जा रही थी। मन की यह हालत जरा भी खतरे से खाली नहीं है। मुझको अपने आप पर यकीन नहीं हो रहा था। मैंने थूक निगलकर जैसे-तैसे कहा, "फूल लाने पर तुम शायद घर में कह देतीं।"

होंठ सिकोड़कर एक अर्थपूर्ण मुस्कान झलकाकर शिप्रा बोली, "कभी

नही, गुलाब के फूल की कीमत मै जानती हूँ।"

शिप्रा के चेहरे की सरलता मुझ पर हावी हो रही थी। मै शिप्रा से सब-कुछ कहने जा रहा था, "जानती हो शिप्रा, मै लेने गया था।" लेकिन तभी मेरी व्यावहारिक बुद्धि ने जोर मारा। मेरा मन अड गया, किसी भी तरह सच बात नहीं कहने दी। मै अचकचाकर खडा मन के आगे चिरौरी करने लगा, जो भी हो फूल जैसी एक सरल लडकी है। इससे झूठ न ही बोलूँ। लेकिन बदतमीज मन टस से मस नही हुआ।

इसलिए कहना पड़ा, "शिप्रा, गुलाब को तोडते-तोड़ते भी तोड़ नहीं पाया। बडी दया आने लगी। फूल पौधे पर ही अच्छा लगता है। देखा नही बॉटेनिकल गार्डन में लिखा है कृपया फूल न तोडें—"

शिप्रा मेरी ओर हैरानी से ताकती रही। उसे शायद मेरे कविमन पर श्रद्धा हो आयी थी। मैने कहा, "तुम्हे फूल देने को जी खूब हो रहा था लेकिन खाली हाथ ही चला आया, तुम्हारे सामने अपनी गलती स्वीकार करने।"

शिप्रा की बड़ी-बड़ी किशोरी आँखों में अनुराग छलछला रहा था। उसने कहा, "गलती की क्या बात है। आपने मेरे बारे मे सोचा इतना ही काफ़ी है।"

शिप्रा की बात सुनकर लगा जैसे उसका चेहरा फिर से गुलाब की शक्ल ले रहा है। इसके बाद अपने को और नहीं सम्हाल पाया। सयम की बेडी तोडकर मैने तेज़ी से आगे बढकर शिप्रा को अपनी बाहों में ले लिया। उसके बाद बिना कुछ सोचे-विचारे शिप्रा को चूम लिया।

अपनी जान मे जिदगी का यही पहला तप्त चुबन था। मुझे शिप्रा के होठो का स्वाद और स्पर्श दोनों की एक साथ अनुभूति हुई। फिर इसके बाद ही अचानक खयाल आ गया। मैने ज़ल्दी से मुँह हटा लिया। तभी मैने महसूस किया कि उत्तेजना से मेरा बदन पसीने-पसीने हो रहा है। मुझमें शिप्रा को ओर ताकने तक की हिम्मत नहीं हो रही थी। कौन जाने वह अब क्या कर बैठे ?

लेकिन शिप्रा ने उस रोज भी मुझे बचाया। स्नेहसिक्त आवाज मे मीठी-सी झिडकी लगायी, "कोई देख लेता तो।" इसके बाद मेरी ओर देखकर शिप्रा ने बडे इत्मीनान के साथ कहा, "आपने गुलाब का फूल तोड़ा नही, इससे मुझे बडी खुशी हुई। उसे तोड लेते तो मै शायद आपको इस तरह से नहीं चाह पाती।"

शिप्रा यह सब क्या कह रही है। इतनी देर जैसे ए० सी० करेन्ट मे हाथ दिए बैठा था। बिजली मुझे क्रमशः केंद्र-बिन्दु की ओर खीच रही थी। अचानक जैसे किसी ने ए० सी० को डी० सी० कर दिया। मै झटका खाकर आ गिरा। शिप्रा से काफी दूर आ गिरा था। उसकी बात सुनने के बाद मुझे वह ज़रा भी अच्छी नही लग रही थी।

मुमकिन होता तो उसी वक्त चला आता। लेकिन प्रेम के लैजर मे उसी रोज नाम लिखने पर भी दुनियादारी मे काफ़ी पक्का हो चुका था। इस तरह अचानक चले आने से मुश्किल होगी, यह मै जानता था, मैंने नाटक शुरू किया। निरीह गाय की तरह आँखे फाड़े उसकी ओर ताकने लगा। नाटक और आगे नही बढ पाया, मंटू और उसकी माँ वापस घर आ गए थे।

इसके बाद शिप्रा जब तक रही मटू के घर नही गया। मंटू ने बार-बार कहा, "शिप्रा जा रही है, तुझे घर आने के लिए बार-बार कहा है।"

लेकिन मैने फिर उस ओर पाँव नही बढाया। शिप्रा मे मेरी सारी दिलचस्पी खत्म हो गयी थी।

शिप्रा ने मुझे एक चिट्ठी लिखी थी, उसमे गुलाब के फूल वाली वह बात लिखी थी। मेरे सौन्दर्य के बारे मे भी लिखा था। अतएव समझ गया कि शिप्रा से सिर्फ लिया नही उसने भी मुझसे कुछ पाया था, इसलिए फिक्र करने की कोई बात नही है—मैने चिट्ठी टुकडे-टुकडे करके फेंक दी।

इसी तरह बडा होता गया। पिताजी अहर्निश, मुझ मे महापुरुष होने के स्वप्न देखते रहे। माँ चुपचाप रहतीं। बीच-बीच में मेरी ओर ताककर मुझे समझने की कोशिश किया करती। बड़े लाड़ से कभी-कभी

कहती, "मेरी देह पर हाथ रखकर कह अपने पिताजी का मन नही दुखाएगा।"

मैं बिना किसी हिचक के उनकी देह पर हाथ रखकर जो कहना होता कह देता। मै इन सब खोखली बातो को नही मानता। आखिर मे तो मेरी माँ मिसेज हरेनचद्र थी, इसलिए वे अपने पति की ओर ही झुकती।

मै झूठ बोल रहा हूँ यह शक होते ही, माँ मुझे पूजाघर मे ले जाती। कहती, "भगवान् के सामने सच-सच बोल।" मै बेधडक कह देता। झूठ बोलने से, पराई चीज बिना कहे लेने से, बडो का आदर न करने से कौन-सा अपराध होता है यह मेरी समझ मे नही आता था। आज भी नही समझ पाता हूँ।

भाग्य से बुद्धि खराब नही थी। पढने बैठने पर दिमाग मे बात बैठती थी। लेकिन हमारी इस थोडी-सी साधारण जिंदगी मे देखने, करने और भोगने को कितना कुछ है, उसके लिए वक्त चाहिए। इसी-लिए महज फ़र्ज के नाते पढायी-लिखाई करते रहना पडा।

पिताजी ने इतने पर भी उम्मीद नही छोडी थी। खुद अध्ययन मनन मे डूबे रहते, बाकी वक्त दूसरो का भला करने मे लगाते। मैट्रिक पास कर कॉलिज ज्वाइन किया था। पिताजी तब भी वही ज्ञान दिमाग मे बैठाने की कोशिश करते रहे, "देखो, सिर्फ पढाई में तेज होना ही शिक्षा नही है। शिक्षा वही है जो आदमी को आदमी बना सके।"

इसके बाद भी चुप रहना, पिताजी कोटेशन झाड़ते। 'प्राणी का दूसरा नाम जन्तु है।...समाज मे अच्छे-बुरे हर तरह के लोग रहते हैं। एक ओर ज्ञानी और धार्मिक लोग अच्छी शिक्षा और अच्छी सलाह द्वारा, सभी को सत् राह पर ले जाने की कोशिश करते है। दूसरी ओर चोर, डकैत, और बेईमान लोग पराया धन लूट-खसोटकर उनका सर्वनाश करने में जुटे रहते है।'

ये सब बाते मुझे बतलाने की जरूरत नही है, ये सब मुझे मुँह

जबानी याद है। पिताजी ने पूरा 'बोधोदय' घोलकर मेरे कानो मे डाल दिया था।

कॉलेज मे आकर देखा कि ऐसे बहुत से लोग है जो अपनी फिक्र छोडकर दूसरो के बारे मे सोचते है, देश के बारे मे चिंतित होते है। रैस्टोरेंट मे चॉप कटलेट उडाते-उड़ाते सोचकर मायूस होते है, कि गरीब वेचारो का क्या होगा।

लेकिन मुझे खुद को छोड़ और किसी के बारे मे सोचने की फ़ुरसत नही थी। रुपए के लिए पिताजी की श्रद्धा करनी पडती थी और बीच-बीच मे माँ को भी पटाए रखना पडता। पैर छूकर कहना पड़ता, "माँ, यकीन मानो, पढाई-लिखाई छोड़कर मुझे और किसी भी चीज की फ़िक्र नही है।"

यह सब कहे बिना सिगरेट-बीड़ी का खर्चा और वालिका वधु... को लेकर सिनेमा जाने के लिए पैसे माँ के पास से नही निकाले ... सकते थे। वैसे माँ से यही कहता, 'कॉलेज के पूअरफड मे कुछ चदा देना ही पडेगा माँ। पैसे के अभाव मे बहुत से लड़के किताबे नही खरीद पा रहे है।'

माँ की आँखे भर आती। कहती, 'अहा वेचारे बिना किताबो के इम्तहान मे कैसे बैठेगे?'

लड़के के बडे दिल का परिचय पाकर माँ अन्दर ही अन्दर छुपे गर्व का अनुभव कर रही है, यह भी समझता।

इसके बाद रुपये लेकर जरा मौज-मजा किया जाता। कुछ लडके मिलकर इसी तरह पहली बार शराब की दूकान पर गए। शुरू में जरा डर-सा लगा। कॉलेज के छोकरे समझकर अगर घुसने नही दिया! लेकिन मैटिनी टाइम मे छोकरो की सेवा करने के वे लोग आदी है।

आदत न होने की वजह से जरा-सी पीकर ही मुझ पर खासा रंग चढ़ गया। श्यामल सेन बोला, "क्यों अनिर्वाण, क्या सोच रहे हो ?"

सुन्दर मित्र ने जवाब दिया, "सोच रहा है कि पहले साल में ही बोतल खुल गयी, सिक्स्थ ईयर में क्या करेगा।"

श्यामल सेन घिसा लड़का था। उसने कहा, "फिक्र मत करो दोस्त, चौपट होने के लिए अभी बहुत-सी चीजें बाक़ी हैं। यह तो महज शुरुआत है।"

मैं अपने को और नहीं रोक पाया। मैंने कहा, "गांधीजी ने कहा है, उद्देश्य महत् होना ही काफ़ी नहीं है, पथ भी सत् होना चाहिए।"

श्यामल ने कहा, "ओ उन्होंने तो और भी बड़ी कीमती-क़ीमती बातें कही हैं। उससे क्या आता जाता है।"

शराब के नशे में एक लम्बी साँस लेकर मैंने कहा, "नहीं रे, सोच रहा हूँ, गरीब लड़कों के नाम पर माँ से रुपये लाया हूँ।"

"अच्छा, अब ज्यादा मत सोच, बहुत हो गया।" श्यामल ने कहा, "तुझे अभी भी भले-बुरे का ज्ञान नहीं हुआ। बेकार दिमाग खराब कर रहा है। अरे बुद्धू, गरीबों के नाम पर ही तो सहायता माँगी जाती है। चंदा इकट्ठा किया जाता है, टैक्स लगाए जाते हैं। बाद में उसी पैसे से कोई अपने नाम में, कोई सरकारी नाम में मकान बनाते हैं, गाड़ियों में घूमते हैं, फ़ैमिली के साथ विदेश में देश का प्रतिनिधित्व करते हैं, कॉकटेल पार्टियों में इंडिया के गरीबों के दु:ख का रोना रोते हैं।"

सुन्दर ने कहा, "नहीं भाई, मैं गरीबों के लिए जरूर कुछ करूँगा।"

नशा खासा जम चुका था। मैंने कहा, "कितने हाथी गए तल में, मच्छा कहे कितना जल !"

श्यामल बोला, "अरे कितने धर्मवीरों को देख लिया ! तू ही एक बाक़ी था।"

कोई कुछ भी क्यों न कहे, विद्यार्थी जीवन सिर्फ माँग और नशे पर

न्योछावर नही किया जा सकता। कुछ छोकरे हमारे वक्त मे देश-देश किया करते थे। मै भी थोडा-बहुत उस चक्कर मे फॅसा था, लेकिन देश के लिए नही अनिला के लिए। अनिला हमारी क्लास की सुदरियो मे से थी। चेहरे का कट अच्छा था, स्वास्थ्य अच्छा था और रग भी अच्छा था। इस सबके ऊपर बाप के पास पैसा था। दाहिने गाल पर होठो के पास एक काला ब्यूटी स्पॉट भी लगाना भगवान नही भूले थे। ऐसी लडकी युवको का भेजा गर्म कर दे तो इसमे आश्चर्य की क्या बात है।

अनिला आम तौर पर किसी से मिलती-जुलती नही थी। लेकिन राजनीतिक काम करने पर बात करती, एकसाथ चाय पीती। इसलिए नारी-नशे ने मुझे देश-प्रेमी बना दिया। शुरू-शुरू मे जरा अटपटा-सा लगता। जो भी हो, बकिमचद्र देश को जननी कहकर सबोधन कर गए है, वही मै सैक्स को घसीट रहा हूँ, मुझे महापाप लगेगा। मेरी सिर्फ एक ही इच्छा थी, अनिला के हाथ पर अपना हाथ रखना और भगवान अगर खुश हो गए तो शिप्रा से जो मिला वही अनिला से भी प्राप्त करना।

यार-दोस्तो की बातों से समझ गया कि काम कोई ज्यादा सख्त नही है। कहने का सार इतना ही है कि हर लडकी के एक स्वीच होता है। वह कहाँ है यह जान लेने भर से काम हो जाता है।

एक रोज कलैक्शन बॉक्स लिए हम दोनों एस्प्लेनेड जाने के लिए निकले। एस्प्लेनेड पहुँचने से पहले अनिला को लेकर एक रेस्टोरैंट मे चाय पीने गया। पैरो मे पहनी चप्पल उतारकर वैसे अनजाने में ही अनिला के पॉवो का स्पर्श किया। नर्म-नर्म पाँव थे। मेरी नाक गर्म होने लगी थी लेकिन अनिला जैसे बेखबर थी। वह देश के बारे मे सोच रही थी। करीब तीन साल से पार्टी मे है। हमारे नेता सुविनयदा एक ही उस्ताद थे—उन्हे पता था कि पालतू हाथी बिना रखे नये हाथी नहीं पकडे जा सकते। हर साल नये विद्यार्थी आते ही सबसे पहले एक लडकी को पकडते।

अनिला जब पॉवो के बारे मे न सोचकर पार्टी के बारे में बात करती रही तो मुझे संकोच हुआ। देश के बारे मे भी तो थोड़ा-बहुत सोचना चाहिए। देश की जनता के आगे अपनी समस्या रखने के लिए ही तो हम लोग बॉक्स लेकर चंदा इकट्ठा करने निकले है।

अनिला ने एक लाल किनारे की साडी और लाल रग का बॉहदार ब्लाउज पहन रखा था। किसी तरह का मेक-अप वगैरह नही किये थी। मै एक बुशशर्ट और पैंट चढाए था।

इडिया की जनता के बारे में मुझे उसी रोज ज्ञान हो गया। जिसके आगे बक्सा हिलाता वही मुझे देखता, और लॉर्ड की अदा से आगे बढ जाता। जबकि अनिला के बक्से में टनाटन पैसे गिर रहे थे।

दो-एक लोग लैक्चर झाडते। तुम्हारी पार्टी कौन-सी है।

अपनी पार्टी का नाम बतलाना।

"लेकिन पढाई-लिखाई न करके सडको पर क्यों घूम रहे हो ?"

"जी हम लोग पीपुल्स से मदद चाहते है। जनता ही तो सबसे बडी शक्ति है। आम आदमी अगर एक रुपया देता है तो वह हम लोगों के लिए लाख रुपये के समान है। जनता के जाग उठने पर हम फिर से अपनी क्लास मे जाकर पढ़ने लगेगे। जितना भी पढे इस स्पेशल ऑर्डर मे कुछ भी नही किया जा सकता—जनता के हाथ मे जब तक पावर नही आती तव तक सबके सब पडे-पडे मार खाते रहेंगे।"

लेकिन कोई फायदा नही होता। वह आदमी बडी बेकरारी-भरी नजर से देखकर आगे बढ गया। अनिला सामने खडी थी। मैंने कहा, "पकडो तो।"

अनिला ने आगे बढकर बक्से को खनखना कर सामने कर दिया, "हमारी पार्टी के लिए कुछ दीजिए।"

"इस पार्टी से कुछ भी नही होगा।" उस आदमी ने खीसें निपोरते हुए कहा।

अनिला भी कम नही थी। मुँह पर दयनीयता का भाव लाकर उस

आदमी की ओर देखकर बोली, "दीजिए न, कुछ तो दीजिए।"

पेनसिलीन ने अचूक काम किया। वह आदमी एक अठन्नी बक्से मे डालने लगा। अनिला जिद करने लगी, "उँह, एक रुपया देना पड़ेगा।" दाँत निकालकर उस आदमी ने एक रुपया बक्से मे डाल दिया। मै हैरान था।

अनिला ने कहा, "वापस कब चलना है? मेरा बक्सा तो भर गया। आपका?"

"मेरा बक्सा तो बिल्कुल खाली है।"

अनिला अपनी क्षमता जानती है। बोली, "सुविनयदा का हुक्म है बक्सा बिना भरे वापस नही लौटना है।"

आखिर अनिला ने बक्से बदले।

मै गोबर गणेश की तरह इतनी देर बक्से को खनखन हिलाता रहा, और अब वही बक्सा अनिला वसु के हाथ मे टनाटन रुपये वसूल कर रहा है। स्वामी विवेकानद क्या यो ही कह गए है कि बगैर नारी जाति की सहायता के भारत की मुक्ति नही होगी।

इंडिया के बारे मे उस रोज मुझे पूरा ज्ञान प्राप्त हो गया था। पब्लिक कहो, पीपुल्स कहो, जनता कहो, जाति कहो सब सालो के मन मे पाप भरा है, बदनाम होता है सिर्फ अनिर्वाण चटर्जी।

उस दिन मिजाज इतना खराब हो गया था कि सारा प्रोग्राम ही चौपट हो गया। सोचा था कि चंदा उगाहने के बाद अनिला को लेकर चिड़ियाघर जाऊँगा, दोपहर के वक्त जगह खासा निर्जन रहता है। लेकिन सारा प्रोग्राम धरा का धरा रह गया। मेरे बक्से को करीब-करीब भरकर अनिला ने वापस मेरे हाथ मे दे दिया। मेरा सारा बदन शर्म से घिना रहा था। दिमाग मे एक ही बात चक्कर काट रही थी कि मैं एक लडकी की असत् कमाई मे हिस्सा बँटाकर बचा हुआ हूँ।

इसके बाद क्रमश. मेरी अभिज्ञता बढती गयी। पढाई-लिखाई मे खास मन न लगने पर भी डिग्री का इम्तहान एक ही चास मे पार कर आया।

एम० ए० क्लास में भर्ती हो गया और तभी पूज्य पिताजी माँ को शोक सागर में निमग्न छोड़कर धरा-धाम से उस पार चले गए।

पिताजी के गुजरने पर सच माने में थोड़ी आजादी मिली। कम-से-कम हर रोज वाली चक्षुलज्जा से तो छुटकारा मिला। इसके अलावा माँ को अब घर-गृहस्थी में खास रुचि नहीं रह गयी थी इसलिए हाथ में नगद पैसा भी जरा ज्यादा रहता। नाम के लिए एक प्राइवेट ट्यूशन भी पकड़ ली थी। इस तरह घटा-बढ़ाकर जो भी हाथ में आता उससे दो-एक बालिका-वधुओं का मनोरंजन करने के बाद भी कभी दो एक मँझली एडवेंचरों का खर्चा बच ही रहता।

माँ पूछती, "पढ़ाई-लिखाई ठीक चल रही है न ?"

"पढ़ाई-लिखाई का तरीका अब बदल गया है। अब बैठकर किताब घोटनी नहीं पड़ती—अब हम लोगों को स्वाधीन चिंतन मनन करना पड़ता है।"

माँ ने यकीन कर लिया।

बुरी तरह ऐश-आराम का आदी होने की वजह से इस देश के बारे ऊब होने लगी। तय कर लिया, इस फालतू देश को छोड़ना ही पड़ेगा।

इंडिया में पैदा हुआ हूँ, बस इतना भर। इंडिया के साथ मेरा और कोई नाता नहीं है। सिर्फ़ एक ही तो जिंदगी है, जितना मजा लूट सकूँ, लूट लूँ। अगर मुझे इतना भी सुख न मिले तो बेचारी माँ इतनी तकलीफ उठाकर और अपनी जान विपत्ति में डालकर मुझे इस दुनिया में किसलिए लायीं ? भगवान ने भी मुझे एक नहीं पूरी पाँच-पाँच इंद्रियाँ क्यों दीं। भला आदमी बेदिल का है, यह बदनामी तो पल्ले नहीं पड़ेगी। अगर थोड़ा मजा भी वसूल न कर पाया तो कैसे पड़ता खा सकता है।

मैं काफी रोज से इंडिया से फूट निकलने का विचार कर रहा था लेकिन हम लोगों का विचार! विचार करते-करते ही साल निकल जाता है। इसी बीच विश्वविद्यालय छोड़कर एक अखबार में रिपोर्टर हो गया, और तरह-तरह की अनुभूतियों के बीच बेचारी इंद्रियों को

सुखी करने की कोशिश करने लगा।

हां तो कह रहा था कि इस उटिया से भाग निकलने की कोशिश में लग गया। मेरे दिमाग में कोई बात घुस जाए तो फिर मुझे धैर्य नहीं रहता। इस बारे में पूरा जिद्दी हूं। तो देख लीजिए, जो सोचा था वही निभाया। जरूर अमेरिका आया था, नहीं तो इस बोइंग ७०७ में बैठा अमेरिका से वापस कैसे लौट रहा हूँ।

'एक्सक्यूज मी' विमान बालिका मुझे सम्बोधित कर रही थी। भई, इस तरह से पुकारने के तो माने होते हैं, मुझे निर्देशित करना। मेरा मर्दन करो जरा अच्छी तरह से उच्चारण करके 'एक्सक्यूज मी' कहो सुन्दरी! याद रहे कि मनिर्वाण लड़की के साथ बात कर रही हो। लडकियाँ किसी बात के लिए अनुरोध करें तो यहां भारत के देवताओं की तरह मैं उसे पूरा किए बिना नही रह पाता।

क्या कहा? शैम्पेन! इकोनोमी क्लास में आज शैम्पेन फ्री सर्व की जाएगी! आज तुम्हारी एअरलाइन्स का जन्मदिन है। अरे जिओ प्यारे जिओ तुम्हारे मुँह में घी शक्कर। ओह् ठीक, वह सब लेकर क्या करोगी—उसके बदले तुम्हारे फ़ियाँसी का चुम्बन! लेकिन इसमें पूछने को क्या है? फ्री लिकर सर्व करनी ही है तो लाओ, शौक से लाओ।

बाहर की ओर देख रहा हूँ। नीचे, बहुत नीचे प्रशान्त महासागर है। बोइंग कंपनी ने प्रशान्त महासागर का सॉम—गर्जन-तर्जन, तहस-नहस कर दिया है। उनका बनाया बोइंग ७०७ महासागर की जैसे परवाह ही नहीं करता। अपनी मर्जी के मुताबिक ऊँचे बहुत ऊंचे उड़े जा रहा है। हालत का अदाज कर प्रशान्त महासागर कितना विनयी हो गया है। कौन कहेगा महासागर। ठीक जैसे नीचे एक बड़ा खाली मैदान पड़ा हो। सो भी बीच-बीच में दिखलाई ही नहीं देता। महासागर, मेघ, तूफान सबको काबू में कर लिया है हमारे इस विमान ने। ज्यादा दिमाग दिखलाते ही कैप्टन अपने कॉकपिट में लगे दो-चार स्विच दबा देगा- बोर्ड पर छोटी-छोटी दो-एक लाल बत्तियाँ जल उठेंगी, दो-एक भीतर

के काँटे सनसन काँपेंगे, और उसके बाद नाक ऊँची किए बोइंग ७०७ ऊपर उठना शुरू कर देगा। मेघो की सारी बहादुरी धरी-की-धरी रह जाएगी।

कमर में बँधी सेफ्टी-बैल्ट खोलकर अब जाकर जरा हलका हो आऊँ। पीछेवाला बाथरूम खाली ही है। नजरो के सामने इलैक्ट्रिक सिगनल रहने से बडी सुविधा हो गई है। इतनी दूर जाकर पाया कि बाथरूम। वागदत्त, (माने एंगेज्ड) है तो वडा कोफ्त होता है।

कॉरीडर पकड़े मैने आगे बढना शुरू किया।

वह निमाई मुकर्जी ही है न। ठीक ही सोचा था, ठीक टुलटुल के पासवाली सीट हथियाए बैठे थे हजरत। मैंने अपना चेहरा गंभीर बना लिया—जैसे यह सब दिखलायी ही नही पड रहा हो। मैं आगे बढने लगा। मिसेस इन्द्राणी सेन भी बडे आराम के साथ बैठी है। सॉरी, डॉक्टर मिसेस इन्द्राणी सेन कहना चाहिए। इस बार डाक्टरेट मैनेज कर ली है। इन्द्राणी सेन का सारा हाल मुझे मालूम है। बेचारी का सारा हिसाब गडबडा गया है—कुछ रोज और नही रुक पाई। सच कहता हूँ, तुम ईजीली यहाँ रुक सकती थी अगर अपने लैक्चर और सतीपने से तुमने इस अनिर्वाण चटर्जी को उकसाया न होता।

इन्द्राणी सेन ने मुझे वेव किया। "अनिर्वाण बाबू, आपको न देख पाकर सोच मे पड़ गई थी।"

"देखतीं कैसे ? यह कोई प्लेन तो है नही, पूरा सिनेमा हॉल है।"

"मै बिलकुल लास्ट मोमेंट पर एअरपोर्ट पहुँची। जिया की गाडी रास्ते मे खराब हो गई थी।"

"यह जिया काफ़ी मजेदार लड़का है", मैने चुटकी लेने के लिए कहा।

इन्द्राणी सेन ने मुँह का भाव ऐसा बनाया जैसे जिया-उर-रहमान भी दूसरे पाँच सवारो मे से एक ही है, मैं इसी वक्त सारा भंडाफोड़ कर सकता हूँ। लेकिन इस वक्त बात नहीं बढ़ाऊँगा, टेबुल पर शैम्पेन रखी

है। इन्द्राणी के साथ बाद मे बात की जाएगी। अभी काफ़ी रास्ता बाक़ी पडा है—टोकिओ, हाँगकाँग, बैंकाक और कलकत्ता।

अरे बाप रे, यहाँ तो देखता हूँ पूरे का पूरा प्लेन जान-पहचानवालों से भरा है। लिडा भी मौजूद है। लिंडा ने फ्रॉक छोडकर सलवार कमीज पहनना शुरू किया है। दिमाग का कोई स्क्रू जरा ढीला हो गया है, नही तो मिस कपूर कहकर इस तरह अपना परिचय देती।

और है सुविमल सेन। सुविमल बेबी नैपकिन मे लिपटे बेबी को गोद मे सम्हाले है। उसकी बीवी सानड्रा सिगरेट फूँक रही है।

जब विलायती मेम को बीवी बनाया है, बेबी भी हो गया है तो सम्हालो उसे। मेरी ओर इस तरह करुणा भाव से देखने से क्या होता है? मैं कर ही क्या सकता हूँ! सॉन्ड्रा से हर रात को एपॉयंटमेंट करते वक्त खयाल नही आया? वैसे तो इतनी स्टेटिस्टिक्स रखे फिरते हो, इतना नही जानते थे कि हर तरह के निरोधो की व्यवस्था होते हुए भी महज़ एक्सीडेंट से अमेरिका मे हर साल कितने बेबी पैदा हो रहे है, लेकिन तुम्हारी यह फ़ादरवाली भूमिका कुछ जम नहीं रही है। जरा मूँछें-वूँछे लगालो मिस्टर सुविमल सेन। सॉन्ड्रा की गुगली बॉलिंग के मुक़ाबले जरा होशियारी से बैटिंग करते तो तुम भी इतने रोज़ मे नाम के आगे डॉक्टर लिख लेते।

अरे वाह, सोमित्र भी बैठा है हाथ मे शैम्पेन का ग्लास थामे। यार, बड़े अकेले-अकेले से लग रहे हो? जिस चगुल मे फँसे थे कि ख़ैर मनाओ। बाप बेचारे ने शिप कंपनी में काम करके कितनी मुश्किलो मे तुम्हें पढ़ाया, और तुम लटके जा रहे थे। मै नही होता तो भगवान ही जाने तुम्हारा क्या होता। इसके एवज़ मे तुम्हारे पिताजी को चाहिए कि मुझे और टुलटल को खिलायें-पिलाये।

मै टॉयलेट के पास आ पहुँचा हूँ। हॉस्टेस दो ट्रॉलियों मे ड्रिंक्स लगा रही है।

इनमे जो सुन्दरवाली थी वह कहाँ गई? जरूर उसे फ़र्स्ट क्लास

मे भेज दिया है। फ़र्स्ट क्लास के लोग ही तो फर्स्ट क्लास की चीज़ भोग सकते है। उसके बाद भी अगर कुछ बच जाए तो हम लोगो को प्रसाद मिल जाएगा। देख लीजिए न, महाशून्य मे भी यह श्रेणी-भेद बदस्तूर कायम है। भगवान के पास न्याय के लिए पहुंचेंगे तो वहां भी भगवान पहले फ़र्स्ट क्लासवालों की फाइलें निबटायेंगे। लेकिन अपने नेपूदा की समझ मे यह बात नही आती थी। श्रेणी-हीन समाज की स्थापना के फितूर मे सब कुछ गँवा बैठे। कहां अच्छे क़ीमती कपड़े पहनकर, अच्छी नौकरी करके, अच्छी-सी एक लड़की से शादी करके देश की सारी समस्याओं को आनेवाले कल के लिए छोड़कर सुखभोग करते, सो तो नही, फटी कमीज पहने, चाय की दूकान पर चुक्कड़ मे चाय पीकर, जेल मे सडकर मरे। दुनिया मे इतने बच्चे चुरानेवाले घूम रहे है। कोई 'पकड़कर तुम्हे विकलांग करके तुमसे भीख मँगवाएगा, कोई रूप दिखलाकर आँखे नचाकर, ब्याह के मंत्र पढकर तुम्हे उल्लू बनाकर रखेगा, और कोई आदर्श की दुहाई देकर देश-सेवा की सीख देगा। बेवकूफी करके अगर जाल मे पाँव बढाया तो तुम ही मरोगे। देख लो न, इस अनिर्वाण चटर्जी को तो कोई काबू मे नही कर पाया।

टॉयलेट के अंदर जाकर अंदर से लॉक कर लिया। प्लेन की एक इसी जगह मे थोड़ी प्राईवेसी मिलती है। यहाँ आप अपने आप से मुकाबला कर सकते है।

गले की टाई को जरा ढीला करके टिशू पेपर से मुँह पोंछा। इतना उजला कागज मेरे स्पर्श से चीकट हो गया। चेहरे पर जरा-सा लोशन लगाया। इसके बाद आइने की ओर देखा। अहा कैसा सोने के चाँद जैसा चेहरा है। कौन कहेगा कि इस चेहरे के मालिक ने इतने पाप किए है। असल मे पाप को पाप समझना ही मुश्किल है। नही तो जो जी में आए सो करो।

मन चाहा करनेवाले इस वातावरण का ही नाम है आज़ादी। मुझे चंगुल मे फँसाने की कम लड़कियों ने तो कोशिश नही की। इस लिडा

कपूर को ही लीजिए। उसके बारे में मुझे क्या मालूम नहीं है ? उसके पेट पर के अपेन्डिसाइटिस के दाग तक का ब्यौरा मैं दे सकता हूँ।

'लवट्रैप' शब्द सुना है ? कविगुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुर, आपने प्रेम का जाल बिछाया है। भुवन-भुवन कहकर क्या माने निकाले थे, और अब उसके क्या माने है। अबके मायने सुनेंगे ?

लिंडा स्टुअर्ट तो हमारे ही कैम्पस की लड़की है। एक जमाने मे अच्छी-खासी थी, समझ ही रहे होंगे। उसके बाल कितने सुन्दर हैं। और आँखें शिकारी बिल्ली जैसी थी। लिंडा ने दो-तीन घाट का पानी पिया था—उसी लड़के फँसानेवाले मामले मे। मेरा खयाल था कि अपने देश मे ही शादी-ब्याह के मामले में लडकियों की खास परवाह नही की जाती है। देखा, अमेरिका मे भी लड़कियो की हालत खास अच्छी नही है। प्रेम और डेटिंग मे लडके खाना-खेलना चाहते है लेकिन पकडाई नहीं आना चाहते। आओ, कभी-कभी डेट के लिए जाया जाए, चलो ज़रा घूम-फिर लें, जरा चूमाचाटी हो जाए। पेड़ के नीचे पैटिंग भी चलेगी लेकिन इसीलिए आग जलाने को राज़ी नही होंगे। जोड़ी बनाकर चर्च जाने की बात न करो। प्रेम और शादी क्या एक बात है ? शादी मे बडे झंझट हैं। इम्तहान सिर पर है, उसके बारे मे सोच-सोचकर दिमाग खराब हो रहा है।

और लड़कियाँ प्रेम इसलिए करती है कि बिना किए शादी नही होगी। जैसे कोई भी युवक इंटरव्यू देना पसंद नही करता, लेकिन देना पडता है क्योंकि बिना इटरव्यू के नौकरी नहीं मिलती। लडकियाँ प्रेम के बाज़ार मे जाती हैं जीवनसाथी की तलाश मे। अजीब देश है। अजीब देश है—लडकी की शादी के लिए माँ-बाप हिलेंगे भी नहीं। यह क्या इंडिया है कि लड़के की खोज में लडकी के बाप, ताऊ, चाचा और मामा यहाँ से वहाँ मारे-मारे फिरते हैं, लड़की की माँ खुशी-खुशी अपने सारे गहने उतारकर दे देगी। लडकी का बाप प्रॉवीडेंट फ़ंड से आखिरी पैसा भी निकाल लेगा और लड़की का भाई कॉआपरेटिव क्रेडिट सोसायटी

के सेक्रेटरी के हाथ-पैर पकडेगा। यहाँ शादी तुम्हारा निजी अ्रफ़ेयर है, इसलिए लडका खोजने की जरूरी कार्यवाही लड़की को ही करनी पडेगी। बिलकुल कबड्डी के खेल की तरह। तुम्हारे पाले मे आकर लडका कित्-कित् कर रहा है अगर पकड सको तो पकड लो। नही तो तुम्हारे हाथो दाना चुगकर चिडिया उड जाएगी।

लिडा कई बार धोखा खाने की वजह से एकदम लापरवाह हो गई थी। आखिर समझ मे आया कि इस तरह काम नही चलने का, इतने लोगों के रहते मुझे फँसाने की कोशिश की। यानि मेरे साथ एक बिस्तरे पर सोकर मुझे शादी के लिए मजबूर करना, जिससे आनेवाली संतान समाज मे मुँह दिखला सके। लेकिन मै इतना बुद्धू नही हूँ। वक्त रहते छिटककर बाहर आ गया। बुद्धि के खेल मे लिडा की हार हो गई। तभी से लिडा बंगालियो के ऊपर आग बबूला हो गई। बाद मे देवीजी ने एक पंजाबी से प्रेम शुरू किया। वह लडका भी सटक गया लेकिन जाते-जाते लिडा को पूरी तरह पागल बना गया।

एरोप्लेन फिर हचकोले खाने लगा। सोच रहा था कमोड के ऊपर जमकर जरा एकाग्रता का आनन्द उठाऊँगा। लेकिन कोई रास्ता नही था। वह देखिए न, कैप्टेन के निर्देश पर लाल अक्षर चमकने लगे—रिटर्न ट सीट। अपनी सीट पर वापस जाकर फिर से कमर मे रस्सी बाँधकर जेल के कैदी की तरह बैठे रहो।

जापानी हास्टेस शायद नई है। अपने आपको सम्हाल नही पा रही। कॉरीडर में मेरे ऊपर ही हडबडाकर आ पडी। जितनी जोर से पकडना ज़रूरी था मै उसे उससे भी ज़ोर से कसकर पकडे रहा। उसके बाद मेरे आलिंगन से अपने को छुड़ाकर बोली "सॉरी।"

सॉरी की क्या बात है? जितनी बार जी चाहे मेरे ऊपर इसी तरह गिरो, मै पकडकर उठा लूंगा।

कमर मे बैल्ट बाँधकर शैम्पेन का गिलास लेकर बैठ गया। शैम्पेन के बारे मे लोग इतनी सरपच्ची क्यों करते है, मेरी समझ मे नही आता।

दुनिया मे मर्दों के लिए एक ही ड्रिंक बना है, उसका नाम है ह्विस्की ! ह्विस्की मुझे समझती है और मैं ह्विस्की को समझता हूँ।

शैम्पेन का गिलास खाली कर दिया। आखिर फोकट का नाम तो है ही। वह हॉस्टेस फिर से मुस्कराती आकर खड़ी हो गई। मैंने उसकी ओर कुछ इस तरह से देखा कि उसने गिलास को फिर से भर दिया।

शैम्पेन के साथ एअरलाइन्स का स्थापना-दिवस मनाया जा रहा था। लेकिन मुझे लग रहा था, इसमे भी कोई छुपा मजाक है। अनिर्वाण चटर्जी के हाथों से पिंड छुडाकर अमेरिका शैम्पेन की नदी बहा रहा है। आपकी बीवी डाईवोर्स के मुकदमे मे जीतकर जो पार्टी देती है, आप भी किसी तरह वहाँ पहुँच जाते है।

यही जो मैं इस देश मे आया हूँ, यह भी एक अजीब ही बात है। इंडिया मे कितने अच्छे-अच्छे लडके है जो एक बार विदेश जाने के लिए मरे जा रहे थे। जिन लोगो की हालत अच्छी थी वे अपने खर्चे से भी आने को राजी थे। लेकिन आया कौन ? अनिर्वाण चटर्जी। सो भी विद्यार्थी की हैसियत से नही।

उस बार शिप्रा के पति से मुलाकात न हो पाती तो शायद मै विद्यार्थी बना ही यहाँ चला आता। कॉलम्बस से डॉक्टरेट की है। शिप्रा के पति पार्थ चौधरी (जमाई बाबू) से परिचय कराने लिए। मटू ने मुझे चाय पर बुलाया था। अभी दो सप्ताह पहले ही शादी हुई है। शिप्रा अभी ठीक से सिंदूर तक नही लगा पाती थी, सारे माथे पर ललाई सी रह जाती है।

शिप्रा ने खुद ही परिचय कराया "दादा के खास मित्र अनिर्वाण चटर्जी," दक्ष गृहस्थिन की तरह शिप्रा ने पूछा "चाय पियेगे न ?"

मैंने बडप्पन दिखलाते हुए कहा "हम लोग तो घर के ही है पहले पार्थबाबू क देखभाल करो।"

शिप्रा ने अपनी मिल्कियत को इसीलिए अच्छी तरह से जान लिया

था। फ़ौरन बोली "ये चाय नही पीते । कॉफी पीते है, सो भी बिना दूध चीनी की।"

मैने पार्थ से पूछा "कितने रोज थे स्टेट्स मे ?"

"पूरे चार साल। एज स्टूडेट जाकर बडी भूल कर बैठा। मेरी जो क्वालीफिकेशन थी उसके अनुसार सीधे रिसर्च असिस्टेंट होकर जा सकता था। वहाँ पहुँचने पर पता चला। लेकिन फिर और कोई चारा नही था।

पार्थ ने ही मेरी आँखें खोली। उसने कहा "रिसर्च असिस्टेंट होने पर कुछ रुपए भी मिल जाते हे और चटपट थीसिस करके वापस आया जा सकता है।"

लेकिन फिर भी किताबो से तो सिर मारना पडेगा। यह किताबें चाटना मुझे जरा भी पसंद नहीं है।

कुछ रोज इधर उधर चक्कर मारने और कोशिश करने के बाद और भी बुद्धि आयी। उसी बुद्धि ने जोर मारा और मैने वेणीमाधव राय को चिट्ठी लिख दी। सच कह रहा हूँ, चिट्ठी लिखने पर भी मुझे जवाब की की जरा भी आशा नही थी। लेकिन इतने साल वहाँ रहकर वेणीमाधव राय मे भी पत्रोत्तर देने के बारे मे गोरे लोगों की बुरी छूत लग चुकी है, यह मै कैसे समझता ! मै खुद तो बिना अपनी जरूरत के किसी को चिट्ठी-विट्ठी नही लिखता, कितने ही लोग मुझे लिखते रहते है लेकिन मै इतना बुद्धू नही हूँ कि जवाब दिया करूँ। अपनी ओर से किसीको चिट्ठी लिखता हूँ तो खूबसूरत युवतियो को। कही खबर लग गयी, एकबार फिर देखने को जी मचलने लगा। यहाँ भी अगर फोन होता तो हरगिज चिट्ठी नही लिखता। लेकिन यह भी भाग्य की ही बात कहिए कि जो लड़की नजर चढती उसके पास फ़ोन नहीं होता। और जो फोनवाली लड़कियाँ मिलती उनमें से एक-एक चारित्रिक मामले में रिसर्च का विषय होती।

वेणीमाधव राय राजवल्लभ साहा सैकेंड बाई लेन को अभी तक नही

सा पत्र लिखा। मैने भी जवाब मे लिखा। और फिर पत्रो के इस सिले-सिले की बदौलत ही मुझे अमेरिका मे हाजिर होना पड़ा।

इंडियन शहरो की गन्दी सँकरी गलियाँ, खुले पाखाने, खुली और सड़ती नालियाँ सब भूलकर अब मै था मिस्टर ए० चटर्जी। न्यूटन युनिवर्सिटी के स्कूल ऑफ एशियन स्टडीज मे महत्त्वपूर्ण गवेषणा कर रहा हूँ : स्कॅलार्शिप के रूप मे जो डॉलर मिल रहे है उन्हे साढे सात से गुणा करने पर परश्रीकातर भारतीय भाइयो की आँखें फटने लगेंगी।

यहाँ आने के बाद से मेरी काया ने भी पलटना शुरू कर दिया। दिवा-निद्रा और जरूरत से ज्यादा कार्बोहाईड्रेट पेट मे ढालने की वजह से कमर के बढते हुए जिस दायरे से मै परेशान था, अमेरिका आने के बाद वह काबू मे आने लगी। किसी हमदर्द ने एकबार लिखा था मध्य-वय मे वय नही यह 'मध्यदेश' ही सारी परेशानियों की जड़ होता है। सुन्दरी युवतियो को इस तोद से इतनी घृणा क्यो है, इस विषय पर गवेषणा शुरू की जाय तो शायद बात कुछ की कुछ बन जाए। इस तौद के मामले मे हर देश, हर धर्म और हरश्रेणी की युवतियों मे मतैक्य है। अतएव मैं कमर के मामले में पूरी तरह सचेतन था। प्रोटीन और विटा-मिन युक्त लो-कैलॉरी फ्रूटों से मैने अपने अपार्टमेंट का फ्रिज ठसाठस भर रखा था।

मेरे ऑफ़िस-रूम का नबर ९०८ है। यानि ९वी मंजिल का ८वाँ कमरा। इस कमरे मे मैं अकेला बैठता हूँ। मेरे बाल इसी बीच विलायत-रिटर्नों की तरह तेलविहीन हो गए है। मेरे पास एक अटेची केस आ गया है जो हर समय भरा रहता है, ठीक जैसे नौ महीने का हो! मेरे पास छोटा-सा एक पोर्टेबल टाइप राइटर भी है। इसके अलावा मेरे आसपास हमेशा मोटी-मोटी पुस्तकें रहती है। कहने का मतलब यह है कि हर किसी पर यही छाप छोडता हूँ कि मै बहुत ही व्यस्त हूँ।

पहले दो महीने मुझे यहाँ काफी परेशानी हुई। गाडी न होने की वजह से कही आ-जा नही पाता था। कैम्पस में ही अपने पाँवो के भरोसे

चक्कर मारा करता । उसके बाद मैने मैनेज करली और एक सैकेंड हैंड फॉक्सवैगन का मालिक हो गया । फॉक्सवैगन गाडी छोटी-सी है लेकिन उसकी जान जर्मन है । कितना भी चलाओ कभी कोई शिकायत नही होगी । और खुराक के मामले मे एक दम ब्राह्मण के घर की विधवा जैसी-सिर्फ काम करेगी, तेल का खरचा नही के बराबर ही होना है ।

दो एक इण्डियन छोकरो ने मुझसे पूछा "आप किस युनिवर्सिटी के हैं...?"

"कैलकेटा !" जानते है न कि मरा हाथी भी लाख रुपए का होता है ।

ईर्षा के मारे छोकरो की छाती फटने लगती । ये लोग स्टुडेंट के रूप मे आए है, हर सप्ताह परीक्षा देते-देते पीछे की सीवन खुली जा रही है । और मैं आया हूँ फैलोशिप झडपकार । यह फैलोशिप क्या चीज होती है, कृपया मुझसे न पूछे । इनलोगो के चेहरे देखकर समझ लेता हूं, ये लोग जानना चाहते है कि मैने कौन-सी जादू की छडी घुमाकर इतनी जल्द इतनी इज्जत और आराम का काम हासिल किया है । पिताजी या काका, मामा--किसके बूते पर न्युटन युनिवर्सिटी मे ऐश कर रहा हूं । तुम लोग हिसाब लगाते रहो । चलो, मे तुम लोगो को वेणीमाधव का नाम क्यो बतलाने लगा ! भेजे मे अगर थोडी बुद्धि होती तो तुम भी वेणीमाधव राय को लिख सकते थे, वे कोई मेरी पर्सनल प्रॉपर्टी तो है नही ।

यहाँ आते ही अपने सामान का हिल्ला बैठाकर वेणीमाधव राय की खोज की । सच कहने मे क्या, मुझे जरा बुरा लगा था । मेरा खयाल था, वेणीमाधव मुझे रिसीव करने के लिए किसीको एअरपोर्ट भेजेगे । गाँव के आदमी अच्छे होते है, यह बात बिना गाँव से बाहर निकले पता नहीं चलती । (लेकिन इसके यह माने नहीं है कि मै भी गांव के लोगों के लिए कुछ करूँगा । मेरे अपने स्कूल मे पढे तीन लड़के चिट्ठी लिख-लिखकर थक गए । मैने हर चिट्ठी को फाड़कर फेंक दिया । हाँ, उस लिफाफे पर से टिकटें उखाडने के बाद । मेरी एक गर्ल फ्रेंड अपने जारज

लड़के के लिए स्टेम्पस् कलेक्शन करती है। लड़की मेरी ही बिल्डिंग की छठी मंज़िल पर रहती है। मै चिट्ठियाँ फाड़कर फेंक देता और बड़-बड़ाता...एक स्कूल मे पढे है इसलिए ठेका ले लिया है मैने···।)

खोज-खबर करने पर पता चला, वेणीमाधव इन दिनों न्युटन विश्व-विद्यालय से बाहर है। कुछ सप्ताह के लिए उन्हे कनॉडा के टारेंटो विश्वविद्यालय ने आमन्त्रित किया है, आजकल सपरिवार वही हैं।

मै हैरानी से सोचता, इसका नाम है तकदीर। कहाँ राजवल्लभ साहा सैकेंड बाई लेन और कहाँ यह न्युटन ! इतने ही से काम नही चल रहा, अब टोरेंटो गए है। ग्रहों का जोर है भाई, खाली मेहनत मे यह सब नही होता।

मै देखता हूँ, यहाँ सब लोग बिना किसी व्यस्तता के व्यस्त होने का दिखावा करते है। मुझसे व्यस्त नही रहा जाता, इतनी व्यस्तता दिखलाने पर मेरे शरीर के सारे नट-बोल्ट खुल जायेगे। मै यहाँ पर काम करने नही आया हूँ, आया हूँ, नाम करने। इसके अलावा मुझे इंडिया अच्छी नही लगती थी इसीलिए चला आया। इंडिया मे जिस रेट पर व्हिस्की के दाम बढ रहे है, उससे अगर मौका लगे तो सब लोग वहाँ से भाग आयेगे। कमबख्त राष्ट्र की उन्नति के नाम पर अपने उडाने के लिए शराब पर टैक्स लगाकर पैसा जमा करना चाहते है।

पहले सप्ताह मैं ज़रा सतर्क था। सम्हलने मे थोडा वक्त लगता है, पता नही कहाँ पैर फिसल पडे। मुझे इन लोगो ने एक केबिन दे रखा है— मेरा निजी ऑफिस, बाहर मेरे नाम की प्लेट भी लगी है। कमरे मे बहुत सी किताबें और मैगजीन जमा करली हैं। बिना किताब-विताब रखे केबिन कैसा खाली-खाली-सा लगता है। केबिन होने का एक फायदा है— मै क्या कर रहा हूँ कोई देख नही पाता। मै ज़रा आज़ादी से अपनी व्यक्तिगत समस्याओं के बारे में सोच सकता हूँ। नितान्त व्यक्तिगत टेलीफ़ोन कथोपकथन के लिए 'बेल' के आविष्कृत यंत्र का उपयोग कर सकता हूँ।

ऑफ़िस से निकलकर उस रोज अपना टाइप राइटर लिए सड़क पर आया ही था कि फ्रॉकों की भीड़ में साड़ी देखकर चित्र जरा चंचल हो उठा। अपने चश्मे के बीच से मैंने उस महिला की ओर देखा। बहुत कुछ हिन्दी सिनेमा के पहले दृश्य की तरह। मेरी भूमिका में जैसे देवानन्द अभिनय कर रहा हो। मैं एक मेधावी और यशस्वी छात्र, अपने यहाँ की सारी परीक्षाएँ फर्स्टक्लास फर्स्ट स्टैंड करके यहाँ रिसर्च करने आया हूँ। मेरा एक ही स्वप्न है, नया कुछ करके मानव जाति का कल्याण करना और मातृभूमि का मान बढाना। जन्मदात्री माँ को छोड़ और किसी रमणी के बारे में मुझे ज़रा भी दिलचस्पी नहीं है। सुन्दर रमणी से मैं सौ हाथ दूर रहता हूँ। और उस ओर जैसे वैजयन्तीमाला हो। वह भी फ़र्स्ट क्लास फर्स्ट है, वह भी काफी महत्त्वाकाक्षिणी है और किसी की परवाह नहीं करती। लेकिन आज से उसके महान होने के स्वप्न की बलि हो जाएगी, और अब वह सिर्फ देवानन्द को चाहेगी। इस एक ही कटाक्ष से देवानन्द को यानि फ़िलहाल मुझे एस्टेब्लिश करना पड़ेगा कि औरतों में मेरी कोई दिलचस्पी नहीं है, तुम वैजयन्तीमाला हो तो हुआ करो, मुझे तुम्हारी जरा भी परवाह नहीं है। मैंने कुछ उसी तरह देखा।

लेकिन महिला मुस्कराते हुए बोल उठी, "आप ही अनिर्वाण बाबू है न। मुझे इन्द्राणी सेन कहते है, मिसेज।"

यह लो! अरे मिसेज़ हो तो उसके लिए इतना ढोल पीटने की क्या जरूरत है। इसके मायने मिस्टर सेन भी कहीं आसपास मौजूद है, लेकिन इससे हिन्दी सिनेमा तो नहीं बना था, और इस डेढ़-मनी नायिका को लेकर फ्रांसीसी फ़िल्म भी बना पाना मुश्किल है।

महिला ने ख़ुद ही कॉफी पीने के लिए आह्वान किया। कैंटीन में हम दोनों दो कॉफ़ी लेकर बैठे। और भी दो लड़के आकर बैठे।

इन्द्राणी ने कहा, "डेट शुरू की ?"

"जी", सवाल का बाकी हिस्सा आँख के इशारे से पूरा किया।

"वीक-एंड मे गर्ल फ्रैंड्स के साथ तफ़रीह करना, हमारे यहाँ के

लडके यहाँ आते ही शुरू कर देते है। मेरा तो शर्म से सिर झुकने लगता है।"

"इसमे ऐसी क्या खराबी है इन्द्राणी जी ?" एक लडके ने कहा।

"खराबी नही है ? इंडियन ट्रेडीशन क्या है ? इडिया क्या इस जैसा करैक्टरलैस फक्कड देश है ?" इन्द्राणी ने जवाब मे कहा।

लगता है इन्द्राणी देवी मेरी भी गार्जियन होना चाहती है। नही बाबा, यहाँ विदेश मे मै ज़रा हाथ-पैर खुले ही रखना चाहता हूँ।

आपकी तो सीनियर फ़ैलाशिप है ? एक लडका पूछता है।

"जी हाँ," सवाल को टालने की कोशिश करता हूँ।

लेकिन रॉयटर की विशेष प्रतिनिधि इन्द्राणी सेन बैठी है, मेरी टालने की कोशिश बेकार होती है। कहती है, "ये तुम लोगों की तरह डॉक्टरेट की मोहर लगाने नही आए है। ये जो काम कर रहे है उससे देश का भला होगा। आप आए है, साम्प्रदायकि दंगो के ऊपर विस्तृत अध्ययन करने के लिए, इस समस्या पर नए सिरे से प्रकाश डालने।"

मै हैरान था। इन्द्राणी सेने को कैसे पता लगा ? एक लडके ने कहा "इन्द्राणी दी के लिए कुछ भी अनजाना नही रहता। सब खबर आप तक आ पहुँचती है। कौन-सा इडियन लड़का किस लड़की के साथ घूम रहा है, कौन पिछली परीक्षा मे नाकामयाब रहा और किस रिसर्च असिस्टेट ने घर पैसा भेजना बद कर दिया है, आपके पास हर बात का पता रहता है।"

दोनो लडकों ने घडी देखी, "अरे बाबा, लैब मे जाने का वक्त हो गया।" कहकर दोनो भागे। "डाक्टर स्वेट्ज़र ने उस रोज लेट होने के लिए कितना झाड़ा था। कहने लगे यंग एशियन तुम लोगों की सभ्यता पुरानी है, हजारो साल का इतिहास है। लेकिन इस देश को सब-कुछ दो-तीन सौ साल मे बनाना पडा है, हम लोगों के लिए हर सैकेन्ड क़ीमती है।"

इन्द्राणी देवी गरज उठीं, "लेट हुए तो हुए, लेकिन इसके लिए देश

का अपमान ! खुद तो हिटलर की खदेड के मारे १९३६ मे जर्मनी छोड-कर यहाँ आए है।"

"कहने से कुछ फ़ायदा नही है इन्द्राणी देवी, हमारी सारी रिपोर्ट वे ही लिखेंगे।"

इन्द्राणी ने कहा, "मेरे पति ने बार-बार कहा है कि कभी भी इण्डिया का अपमान सहन न करना। भले ही तुम्हारी थीसिस पूरी हो या न हो।"

इन्द्राणी के साथ क्रमश घनिष्टता. बढ रही थी। उसका यह सब दिखावा मुझे अच्छा नही लगता। तो हां, इसके मायने देवराज इन्द्र इंडिया मे ही विद्यमान है। "उन्हे तीन रोज से चिट्ठी नही लिखी, देखिए न कितनी बुरी बात है।" विरहणी ने तरस दिखलाया।

यह भली औरत क्या अपने पति को चिट्ठी लिखने के लिए ही यहाँ आयी हे।

वह कहने लगी, "हम लोगो ने तय किया था कि हर सप्ताह हम दोनो तीन-तीन चिट्ठियाँ लिखा करेगे। खुद तो नियम मुताबिक लिखे जा रहे है लेकिन देखिए न, मुझे आर्डर हुआ है कि थीसिस पूरी होने तक तुम्हे यह क़ायदा मानने की जरूरत नही है। फिर भी आखिर हिन्दू घर की बहू ठहरी, मन थोडे ही मानता है ?

"बिलकुल नहीं, बिलकुल नहीं, "मैने उनकी हाँ में हाँ मिलायी।

"चलिए मेरे कमरे मे चलिए, "इन्द्राणी सेन ने आमन्त्रित किया।

ऑपार्टमेंट मे आकर बोली, "पहले डरमेटरी मे थी। वे दिन गुजारे कि अब आप से क्या कहूँ। मेरी एक रूममेट थी। उसका फियाँसे दोपहर के वक्त "डरमे" मे आ पहुँचता। उन लोगो को अकेले छोडने के लिए मुझे जाकर कॉमन रूम में वैठना पडता था।"

मन-ही-मन सोचा, "तो क्या हुआ ?" लेकिन चेहरे पर आश्चर्य का भाव लाकर कहना पडा, "तब तो बडी मुश्किल मे पडी होगी।"

"मुझे तो बैड पर लेटते घिन आती थी—पाटंनर से कह भी नही

सकती थी कि बैड पर अपने दोस्त को मत बैठाना ।"

मैं उनके कमरे मे चेअर पर बैठा था, भाग्य की ही बात है कि उन्हें मेरे बारे मे पूरी जानकारी नही है । तब तक उन्होंने अपने पति के फोटो के सामने धूप जला दी ।

जब तक बैठा उनके सेबो पर हाथ साफ करता रहा और सुनता रहा, "इस देश मे चरित्र नाम की तो जैसे कोई चीज ही नहीं है । जरा-जरा-सी लडकियों की जो हालत है कि क्या कहूँ । हमारे यहाँ कुत्ते बिल्लियो मे जैसा सैक्स होता है वैसे ही ।"

मैने फिर जैसे अनजान बनकर कहा, "यह आप क्या कह रही है ?"

"यहाँ लडकियो की डरमेटरियों में जो नर्ककाड होता है कि आप से क्या कहा जाए । एक ही लडके को लिए तीन-चार लडकियां खसोटने मे लगी है । मैंने तो सोचा भाग जाऊँ । उन्हे तो ये सब बाते लिख नही सकती । हम लोगो की शिक्षा ही दूसरी तरह की है, पत्नी भी पति को ये सब बातें नही लिख सकती । उधर वे है कि लिखे जा रहे है तुम्हे मौक़ा मिला है, मुझे नही मिला । बिना डॉक्टरेट लिए किसी भी सूरत मे वापस नही लौटना है। देखिए न, मै कितनी कोशिश कर रही हूँ कि कोई हिसाब बैठाकर उन्हे भी यहाँ बुला लूँ । लेकिन वगैरा भी एम० ए० है न, यहाँ उनकी कोई डिमान्ड नही है । हाँ तो आप से—कह रही थी, डरमेटरी छोडकर इस अॅपार्टमेंट मे चली आयी । यहाँ आकर फिर भी जरा शाति है ।"

मै एक सुशील बालक की तरह सुने जा रहा था । नया-नया आया हूँ, फालतू के पचडे मे पडने से क्या फायदा ।

इन्द्राणी सेन ने कहा, "मेरा तो जी चाहता है कि यहाँ के सारे इंडियन लडकों के घरो पर उनके मां-बाप को एक-एक चिट्ठी लिख डालूँ । उनके सपूत गले की चेन खुलते ही यहाँ आकर क्या-क्या कर रहे है, माँ-बाप को भी मालूम हो ।"

मै उनके चेहरे की ओर ताकता रहा । वही कहती रही, "आपसे

कहती हूँ इस देश के लड़के-लडकियो को नैतिक शिक्षा के लिए इडिया भेजा जाना चाहिए। इंडिया मे भी आजकल प्रेम-प्रेम नहीं हो रहा हो ऐसी बात नही है लेकिन उस प्रेम और इस प्रेम मे जमीन-आसमान का फ़र्क है।"

थूक निगलकर मिसेज़ सेन बोली, "सच कहती हूँ जमीन-आसमान का फर्क है। मेरी ही एक सहेली छंदा कलकत्ते मे कॉलेज के एक युवक लैक्चरर से प्रेम करने लगी। लेकिन वह प्रेम कुछ और ही था। दोनो आँखे फाडे ताका करते, आर्ट, हिस्ट्री, साहित्य और सिनेमा किसी भी विषय पर बहसे करते, पेज के पेज चिट्ठियां लिखी जाती, और बहुत हुआ तो दो-एक बार बैण्डिल में गंगा किनारे एक फ़ीट की दूरी रखकर जा बैठते। सिर्फ उसी रोज जब कि सुशोभन ने छदा से प्रस्ताव किया उसने छदा का हाथ एक सैकिन्ड के लिए अपने हाथ मे लिया था। लेकिन उसे भी छदा ने साथ-ही-साथ खीच लिया।"

इसके बाद इन्द्राणी सेन ने मुझे गवाह बनाया। "आप प्रेम-व्रेम के चक्कर मे पडे है या नही, नही मालूम। आपकी शक्ल देखकर तो लगता है कि आप इस सब झमेले मे नही है। अगर आपने किसी से प्रेम किया भी है तो उस लडकी को 'किस' नही किया, यह बात मै लिखकर दे सकती हूँ।"

कहकर मुझसे अपनी बात की हामी भरवाने के लिए मिसेज़ सेन ने पूछा, "मैं ठीक कह रही हूँ न ?"

अच्छी मुसीबत मे फँस गया। झूठ बोलने मे मुझे आपत्ति नही है। लेकिन अभी तक निष्काम मिथ्याभाषाण के स्तर तक नही पहुँच पाया हूँ, महज़ झूठ के लिए झूठ बोलना अच्छा नही लगता, कुछ-न-कुछ फ़ायदा तो होना ही चाहिए। लेकिन आख़िर करता भी तो क्या। वकालती दाँव मार कर कहा, "सो तो है ही, हमारे समाज को नारियाँ ही तो समझ पायी है।"

"यहाँ आप को कितने रोज हुए हैं ?" मैं पूछता हूँ।

"आपसे ज्यादा सीनियर नही हूँ, यही कोई चार-पाँच महीने हुए है। लेकिन इतने मे ही लगता है जैसे एक युग बीत गया।" दीर्घ-निश्वास लेने से मिसेज़ सेन का वक्ष ऊपर-नीचे हो रहा था।

विरह मे ऐसा हो जाता है। अपने वैष्णव-शास्त्रों को उलट-पुलट करती रहिए।

विदा लेते वक्त भी उपदेश, "यहाँ की 'डेटिग' नाम की चीज से होशियार रहिएगा।"

वैसे शायद कुछ रोज डेटिग की बात दिमाग मे नही आती, लेकिन अब डेटिग के लिए मन नाच उठा। अपने ऑफिस मे बैठा-बैठा भी डेटिग के बारे में सोचा करता।

दो-एक लोगो से परिचय होना शुरू हुआ था। हमारे डिपार्टमेट के प्रोफेसर डा० स्मिथ से कुछ भी नही हो सकता। एकदम बेरसिक आदमी है।

प्रॉफेसर स्मिथ पुस्तको और काम मे डूबे रहते। घर-गृहस्थी नाम के लिए है। एशिया के बारे मे अध्ययन करने के लिए ही जैसे भगवान मे उन्हे पैदा किया है। उनकी कहानी सुनी थी। पच्चीस साल की उम्र मे एक योजना बनायी थी—कई खडो में एशिया के सांस्कृतिक वैशिष्ठ्य के बारे मे प्रामाणिक ग्रथ लिखेगे। शादी की अपनी ही एक छात्रा से। बीवी को कुछ रोज़ प्रतीक्षा करने के लिए राजी कर लिया। अपनी योजना का ज़रा हिसाब बैठाकर हनीमून करने जायेंगे। लेकिन इसी बीच दोनो साठ के हो चले हैं और प्रोजेक्ट है कि पूरे होने का नाम ही नही लेता। हनीमून भी रुका है। आशा है, अगले साल अतिम खड प्रकाशित होने के बाद दोनो मधुयामिनी मनाने निकलेगे।

ऐसे लोगो के साथ ज्यादा बातचीत नहीं की जाती। ये लोग सभी को अपने गढ़ में घसीटना चाहते है। मैं इतना बेवकूफ़ नहीं हूँ। जिनने

रोज जिन्दा हूँ (मेरी कुडली मे लिखा है कि किसी एक ग्रह के फेर-स्वरूप स्वल्पायु का योग हो सकता है) मै अपनी तमन्नाओं को पूरा कर लेना चाहता हूँ। कुछ भी कहे दस-पाँच नही, इकलौती संतान की तरह सिर्फ़ एक ही तो मन है। उस बेचारे का खयाल न करूँ, उसकी बात न रखूं ?

बूढे स्मिथ को इडिया के बारे मे काफी ज्ञान है। संस्कृत पढी है। अचानक एक श्लोक झाड़ बैठे, हमारे चार स्तर है—जड, प्राण, बुद्धि और बोध। सबसे पहले जड, फिर प्राण की उत्पत्ति, प्राणियों मे कुछ ही के बुद्धि है। इसके बाद बुद्धिमान मनुष्य की चरम साधना है 'बोधोदय' मे। बुद्ध, शकर, ईसा, मोहम्मद, रामानुज, रामकृष्ण, विवेकानन्द और अरविद सभी ने, कहते है इसी बोध के लिए तपस्या की। हमारे मन के बीच यह बोध सुप्तावस्था मे अथवा अर्ध-जाग्रत अवस्था मे है।

न बाबा, मुझे इन बातो मे कोई दिलचस्पी नही है। यह सब मेरे पिताजी और दादाजी सालों तक झाडते रहे है, तुम लोग इस लाइन मे नये हो, तुम्हारे अन्दर बूता भी ज्यादा है। मैं चाहता हूं, खूब पैसा कमाना, खूब नाम कमाना। लेकिन इसके लिए मुझे मेहनत न करनी पडे। यह मेहनत 'चीज' मुझे जरा भी पसन्द नही है। इसके अलावा मै चाहता हूँ सुदरी और सुरसिकाओं का मधुर सान्निध्य। इसके बाद भले ही इडिया भाड मे जाए, काम-काज की ऐसी की तैसी, जो लोग अर्ध-मुक्त पशुओ की तरह जीवनयापन कर रहे हैं उनकी और भी दुर्दशा हो, मुझे इससे कोई फ़र्क नही पडता।

कुछ रोज़ बाद ही लिफ्ट मे अपने अॅपार्टमेंट की ओर जाते हुए एक युवती से परिचय हो गया। हमारे ही डिपार्टमेंट में डॉक्टरेट कर रही है। मुझे विदा करके बोली, "मेरे लड़के को टिकिट-कलैक्शन का शौक है। पत्र-वत्र आने पर टिकटें दीजिएगा।"

इन डाक-टिकटों से ही परिचय हो गया। ओल्गा अपने लडके को लेकर मेरे कमरे मे आयी लेकिन लड़के के जनक के दर्शन नही हुए। अफवाह से मालूम हुआ कि इस बेचारे का रजिस्टर्ड कोई बाप नही है। लेकिन इन बातों मे यहाँ पर कोई सर नही खपाता, इस देश मे समय इतना सस्ता नही है।

एक रोज ओल्गा ने ही मजाक किया, "छुट्टी के दिन इस तरह मुँह लटकाए क्यो बैठे हो ? कोई डेट नही है ?"

"यहाँ परदेश में मेरे साथ डेट करने कौन आएगा ?" मैने बडी मायूसी से कहा।

"तुम भी कैसी बात करते हो जी ! मुझसे क्यों नही कहा ? कितनी ही सहेलियाँ है। ठीक है, कल ब्लाइंड-डेट करोगे ?"

यह क्या चीज होती है मेरी समझ मे नही आ रहा था। ओल्गा ने ही वह भी समझा दिया। आपस मे जान-पहचान नही, किसी कॉमन फ्रेंड की सलाह पर डेट करना। इन ब्लाइन्ड-डेटों से बहुत-सी शादियाँ हो जाती है।

ओल्गा ने मेरा टेलीफोन उठाकर डायल करना शुरू किया, "पहले विवियन को रिंग करती हूँ, बडी चार्मिंग लडकी है, फिगर भी गज़ब की है !"

"विवि, मै ओल्गा बोल रही हूँ। कैसी हो ? किसी के साथ स्टेडी तो नही हो ?...नहीं हो...वेरी गुड। सुनो यहाँ एक इंडियन इंटलेक्चुअल आए है। चटर्जी, सीनियर फैलोशिप मे काम कर रहे है। सोच रही थी, इस शनिवार को अगर तू इनके साथ ब्लाइंड-डेट ले सकती ?"

बात नही बनी। विवियन बेचारी अनुरोध नही रख पायी। अगले दो डेट उसके किसी बॉय फ्रेंड ने ले रखे थे।

ओल्गा हार माननेवाली नही थी। बोली, "ठहरो, क्रिश्चियन को देखती हूँ। उसकी दोनो आँखे देखकर तुम्हारा बोलना बन्द हो जाएगा।"

डायल घुमाकर ओल्गा ने फिर शुरू किया, "क्रिश्चियन, यहाँ एक इंडियन इटैलेक्युअल..."

क्रिश्चियन राजी हो गयी।

पहली डेट यही थी। ओल्गा का एक बॉय फ्रेंड आया था जूलियन। उसकी लम्बी-सी गाडी थी। पीछे-पीछे मेरी छुटकी सेकेन्डहैड फॉक्स-वैगन।

क्रिश्चियन हम लोगो के लिए रास्ते मे वेट कर रही थी। हम लोग गाडी रोककर उतर पडे। ओल्गा ने सहेली का हाथ पकडकर कहा, "क्रिश्चियन आज तो तुम इतनी खूबसूरत लग रही हो कि क्या कहूं—आजकल दूध से नहा रही हो क्या?"

ओल्गा ने यही पर हम लोगो का परिचय कराया। "हाय अनि, यही है दैट फेमस क्रिश्चियन—दि स्वीटेस्ट गर्ल लिविग।"

फिर मुझे दिखलाकर बोली, "दि बॉय! क्रिश्चियन, यानी हम लोगों की तरह ऐवरेज पर्सन नही है—यह देश और सभ्यता के लिए चिन्ता करता है। इसकी आँखे देख रही हो न—इडिया के पाँच हजार सालों का सुख-दु ख इनमे झिलमिल कर रहा है?"

"तुम कवि हो सकती थीं," मैने कह दिया।

"हो सकती थी माने? ओल्गा तो कवि है ही। गर्भवती होने पर बॉय फ्रेन्ड पर वह जो कविता लिखी थी—दि लास्ट राइड टु गैदर इन ए फोर्ड फॉलकल।"

क्रिश्चियन की ओर देखता उसकी बातें सुन रहा था। हमारी नजरें मिली। इसके बाद क्रिश्चियन आकर मेरी गाडी में बैठी।

ओल्गा ने मेरी ओर आँख मारकर कहा, "आचरण सहिता मालूम है न, उसका उल्लघन न हो।"

हम लोग क़रीब आठ मील दूर एक लेक के किनारे जा रहे थे। पहली डेटिग मे जरा नर्वसनेस सी लग रही थी। लेकिन क्रिश्चियन के

व्यवहार में कोई जडता नही थी। उसने कहा, "धन्यवाद, आपको, यह सुयोग देने के लिए।"

"धन्यवाद देने को क्या है! यहाँ आकर अकेला पड़ा रहता हूँ, आज आपके साथ डेटिग का सुयोग पाकर अपने-आपको धन्य महसूस कर रहा हूँ, उसपर भी इतने शॉर्ट नोटिस पर आप आयी।"

और भी कहा, "मुझसे अगर कोई भूल हो जाए तो बुरा न मानिएगा।"

"आप फ़िक्र न करे। आपके देश में क्या डेटिग नहीं है?"

"बिल्कुल नही।"

"कहते क्या है, तब आप लोगो के यहाँ युवक-युवतियाँ वीक-एण्ड कैसे गुजारते हैं?"

एक बार जी मे आया कि कह दूँ, हमारे देश मे युवक-युवतियाँ नही होते। बालक-बालिका और फिर बूढे-बूढ़ियाँ। हमारे यहाँ यौवन का प्रवेश वर्जित है। लेकिन पहले ही दिन इण्डिया को भला-बुरा कहना ठीक नही होगा। और कोई जवाब देना पडेगा।

लेकिन कहा क्या जाए? बड़ी मुसीबत मे फँसा दिया। छोकरे-छोकरियाँ शनि-रविवार के रोज घर में चुपचाप बैठे रहते है। जवान लडकियाँ छतो पर और लडके सडकों पर अड्डा जमाते हैं। अभिभावकों की नजरो की ओट मे ये लोग क्या किया करते है, मै नही कह सकता।

क्रिश्चियन पूछने जा रही थी, मुझे डेटिग कैसी लगती है। लेकिन मेरी पहली डेटिग उसी के साथ है जानकर हैरान हो गई। फिर बोली, "मैं अपने-आपको गौरवान्वित महसूस कर रही हूँ।"

ड्राइव करते-करते उसके बदन से प्रसाधन की मीठी खुशबू आ रही थी। उसका मिनी फ्रॉक घुटनो को ठीक से ढँक नही पा रहा था। मैंने कहा "मुझे जरा सिखा-पढ़ा देना।"

"फिक्र मत करो। डेटिंग और कुछ नही है—अविवाहित युवक-युवतियों के बीच जरा मेलजोल, बस इतना ही। वैसे डेटिग मे भी

सीढियाँ है। एक रोज मे सब कुछ नही मिल पाता। बिना-लिखा एक कानून है, पहली डेटिंग मे यहाँ तक, उसके बाद की डेटिंग मे जरा और भी आगे बढा जा सकता है, इसी तरह…।"

मै बुद्धू की तरह ् निग लिए जा रहा था, क्रिश्चियन ने कहा "लेकिन एक बात याद रहे, यह भी एक तरह का खेल है। खेल मे जीतने और हरा देने की होड हुआ करती है।"

आखिर मे हमलोग निर्जन वन के पासवाले उस रेस्टोरेंट मे जा पहुँचे। ओल्गा ने टेबल पर हम लोगो के लिए जगह बनाकर कहा "तुम लोगो को देरी होते देखकर मैंने तो सोचा, कि कही और चले गए क्या।"

मैंने कहा "तुम्हारी फ़ोर्ड का मुकाबला मेरी बेबी फ़ॉक्सवैगन कैसे कर सकती है?"

ओल्गा बोली "ये बात छोडो, सब कुछ भूलकर इस वक्त मौज करो। हाउ डू यू फील क्रिश्चियन?"

"ग्रेट!" क्रिश्चियन ने जवाब दिया।

"और तुम्हे?"

"आन टॉप ऑफ दि वर्ल्ड, लग रहा है पृथ्वी के सिरे पर आ बैठा हूँ।"

"यही होना भी चाहिए?" ओल्गा ने कहा।

लेकिन मेरी समझ में यह बात नही आ रही थी कि यहाँ हर कोई इतना खुश क्यो है। इस खुशी में जैसे कोई गभीरता नही है। यह खुशी सिर्फ़ चमडी के ऊपर गिटपिट कर रही है, दिल तक नही पहुँच पा रही। लेकिन अगर इतने से ही संतोष प्राप्त करना पड़ता है, कोलम्बस के ढूँढ़े इस महादेश के नागरिकों को। और कहना पड़ता है "ग्रेट, वंडरफूल, नेवर हैड इट सो गुड।"

इस बीच गपशप शुरू हो गयी। दूसरे टेबलो पर बैठे जोड़ों ने नाचना शुरू कर दिया।

जूलियन ने ओल्गा की कमर पर हाथ रख लिया है। बीच-बीच में

फ्रीज मे रखे ताजे मक्खन जैसे गोश्त के स्पर्श-सुख का आनन्द उठा रहा है। हर ओर से खुशी, हँसी के फव्वारो और तृप्ति की आवाज सुनायी दे रही है।

मुझे लगा, मैं भी बालिग हो ही गया हूँ। जो चाहूँ सो करने का अधिकार मुझे कानूनन मिल गया है।

मैंने क्रिश्चियन से पूछा "क्या खाओगी ?"

उसने एक शेरी ली, मैंने ली ह्विस्की। इसके बाद शुरू हुई गप्पें।

इंडिया से आकर बडा खराब काम किया है। प्रेम के झूले मे झकोले खाते-खाते भी प्रिया को इंडिया की समस्याओं के बारे मे अवगत कराओ, वहाँ अभी भी बाल-विवाह होते हैं या नही ? बाल-विवाह के देश से आए हो फिर भी अभी तक तुम्हारा विवाह क्यो नही हुआ ? या, टैगोर की उस 'नौका डूबी' कहानी की तरह "बहू को पहचान नही पाया ?"

ओलगा ने अपने बॉय फ्रेन्ड के साथ नाचना शुरू कर दिया। मुझे नाचना नही आता सो चुपचाप बैठा हूँ।

क्रिश्चियन ने कहा "नाच सीख लो। बिना इसके डेटिंग का पूरा मजा नही ले पाओगे।"

औरतों के करीब आने के माने इतने रोज तक एक अश्लील चित्र उभर आता था। वेश्यालय मे पतित हुए बगैर भी अविवाहित पुरुष नारी सान्निध्य प्राप्त कर सकता है, यह बात आज समझ मे आई।

ओलगा इस बीच काफ़ी रंग मे आ गई थी। क्रिश्चियन ने यह समझ कर कहा "इन लोगो को जरा अकेले छोड देना चाहिए। ये लोग डिनर के बाद शायद जोड़े से कहीं जाना चाहें। इन लोगों को अपने में मस्त रहने दो।"

डिनर का बिल चुकाकर ओल्गा से मैंने यही कहा। लेकिन वह आनाकानी करने लगे। जो भी हो हम लोगो से जैसे छुटकारा पाकर वह जूलियन के साथ मुक्त अभिसार के लिए चली गयी।

मै अब मुश्किल में पड़ गया। क्रिश्चियन को लेकर क्या किया जाए,

कुछ भी समझ मे नही आ रहा था। बातचीत के विषय भी करीब-करीब पूरे हो आए थे। कर्मयोग से लेकर कामसूत्र तक सारे भारतीय ज्ञान का निचोड इस बीच में क्रिश्चियन के मगज मे ढाल चुका था। वह इडिया के रहस्यो के बारे मे जानकारी हासिल करना चाहती थी। लेकिन हे बालिके, मै ठहरा भूखा परदेशी। मुझे अपने रहस्यो के बीच झाँकने का मौका दो !

क्रिश्चियन को पास बैठाकर गाडी स्टार्ट की। गाड़ी तेज़ी से भाग रही थी। मै एक बंगला गीत गुनगुनाने लगा।

क्रिश्चियन ने खुद-बखुद ही कहा "वाह, बड़ा अच्छा लग रहा है, तुम गाते रहो।"

बढावा मिलते ही मै और भी जोश के साथ गाने लगा, यहाँ मेरे गाने में गलती पकड़नेवाला तो कोई था ही नही। बगल से एक गाडी बड़ी तेजी से निकल गयी, मेरी नर्व्ज ने शॉक खाकर स्टियरिंग की ओर नजर रखने को कहा। हाईवे पर मस्ती की तो एकदम चटनी ही बन जाएगी।

गाना रोककर मैने कहा "हमारे पोएट टैगोर ने बहुत से गीत लिखे है।"

"हाऊ स्वीट, "क्रिश्चियन ने कहा।

मैंने कहा "स्वीट ! बूढ़ा मरकर भी जला रहा है। जब देखो तभी सिर्फ ऊपर उठने को ही कहता रहा है। उसकी बात मानकर ऊपर चढना शुरू कर दिया होता तो करोडो इंडियन कभी के सशरीर स्वर्ग जा पहुँचते।"

क्रिश्चयन बोली "अनि, वह गीत फिर गाओ।"

मैंने गाना शुरू किया। और इसके बाद ही गडबड हो गयी। क्रिश्चियन ने पूछा।

"अब इसके मायने बतलाओ ?"

मै बड़े संकोच मे फँस गया। मै जो गा रहा था उसके माने होते

है 'हे प्रिय, हे बन्धु, केवल अपनी वाणी ही नही, कभी-कभी प्राणो को अपने स्पर्श से भी सींच दिया करो।'

मैंने कहा "कवि ने कहा है सिर्फ स्वीट वर्ड नहीं, हार्ट को फ्रॉम टाइम टू टाइम जरा टच दिया करो।"

क्रिश्चियन खिलखिला पडी। "तुम्हारे कवि तो काफ़ी रसिक है।"

मैने कहा "स्कूल में पढा था, यह प्रेम भगवान के साथ है।"

"कम ऑन ! आर यू किडिंग ?" क्रिश्चियन और भी जोर से हँसने लगी। इसके बाद पता नहीं कब उसके घर के पास आ गए। मै दरवाजा खोलने जा रहा था। क्रिश्चियन ने रोका। मेरे काफी नजदीक आकर उसने कहा "मै ओल्गा की आभारी हूँ कि उसने तुम्हारे साथ परिचय कराया।"

जरा और भी आगे बढकर हम दोनो के बीच मे शुन्य को पूर्ण करने की कोशिश करते हुए मैने जवाब दिया "मैं भी उसका कम आभारी नही हूँ।"

क्रिश्चियन ने इसपर कहा "तुम्हारी पहली डेट जरा स्मरणीय होनी चाहिए। मैने कहा था न कि डेट में घनिष्ठता क्रमशः बढ़ती है।"

"मैने इस बात को ही याद रखा। आई होप, मेरी वजह से तुम्हे कोई असुविधा नही हुई होगी।"

"बिलकुल नही। मै तो तुमसे यही कहना चाहती हूँ कि क्रिश्चियन नामक युवती से तुमने एक बार चुंबन का अधिकार हासिल कर लिया है।"

कहने की जरूरत नहीं है, फ़ौरन मैं अपना हक़ हासिल करने में मशगूल हो गया और उसके बाद तेज़ी से गाड़ी चलाकर अपने फ्लैट चला आया।

वापस आकर भी बेवकूफ़ी की, क्रिश्चियन को टेलीफ़ोन पर पकड़ा।

'हैलो' उस ओर से क्रिश्चियन की आवाज़ सुनाई दी।

"सोचा तुम्हारे सो जाने के पहले तुम्हें एक बार धन्यवाद दे लूं।"

क्रिश्चियन जाल मे पाँव दे चुकी थी। बोली, "यू सेंटीमेंटल इडियन।"

टेलीफ़ोन रखकर मै काफ़ी देर तक हँसता रहा। सेटीमेटल ! राजवल्लभ साहा सैकेन्ड वाई लेन का अनिर्वाण चटर्जी सेंटीमेटल ! खूब पहचाना, लेकिन भाई मै कुछ भी नही कह रहा। मै इस दुनिया मे थोडे दिनो के लिए आया हूँ। जरा भोग करना चाहता हूँ, मेरी पचेन्द्रियाँ, अरे, विद्यासागरजी ने अपने 'बोधोदय' मे जिन पांच पुर्जो का नाम लिखा है न, उन्हे थोडा सुख, थोडा आराम देना चाहिए। मेरा दिल कहता है इसके लिए जो भी जरूरी हो सो करो।

खास लग रहा था। जैसे भेजा फूलो के बाग मे भौंरा बना फिर रहा था। और देखिए न, इसीबीच एरोप्लेन की सीटपर बंदी बना बैठा हूँ। इतना अच्छा सोने का सा देश छोड़कर वापस इडिया जा रहा हूँ जहाँ पचास करोड़ लोग है और इस पर भी प्रति डेढ़ सैकेन्ड मे एक बच्चा पैदा होता है; लेकिन वहाँ के पेडो मे फल नही है, बादल पानी नही बरसाते, गायों के थन सूखे है। तिसपर एक नही, तीन-तीन सिहों को हमने कितने सम्मान के साथ सर पर चढा रक्खा है।

बेचारे कुमार के पिता यह सब कैसे समझते। थोडी देर कुमार से ही गप्प लड़ाई जाए।

नही, कुमार सो रहा है। मैं उसके चेहरे की ओर ताक रहा हूँ, क्योकि उसके चेहरे मे ही उसके पिता की छवि है। उसके भारतीय बाप और अमेरिकन माँ ने जैसे संतान पर अपनी-अपनी छाप छोडने में होड़ लगा ली थी। कैसा ललाई लिए दूध-सा सफ़ेद रंग अमेरिकन मा का दान। और उसके चेहरे को जैसे उसके पिताजी ने ही बैठा दिया हो, सिर्फ़ नाक वैसे थोडी और भी नुकीली है। उसकी माँ की नाक मैने काफ़ी क़रीब से देखी है। और जब उसका नाम सुना तो खुद ही हैरान रह गया। वेणीमाधव ने मुझे बतलाया था, "इसका नाम ज़रा अलग है— भारत कुमार राय। इसके दोस्त लाड मे 'इंडिया राय' कहकर पुकारते

है। हम लोग कहते हैं—कुमार।"

"तुम इसे किस नाम से पुकारोगे?" वेणीमाधव राय ने मुझसे पूछा।

मन-ही-मन भगवान को पुकार रहा था। मै हर वक्त यह इंडिया इंडिया नही रट सकता, यह सब दिमाग से निकल जाए तो छुटकारा मिले। सीधे-साधे बालक की तरह चेहरा बनाकर कह दिया। "मै तो कुमार कहकर ही पुकारूँगा, इसकी बहन को कुमारी कहकर पुकारूँगा हालाँकि उसका नाम रंजावती है।

पागल ! नही तो वेणीमाधव राय इतने रोज परदेश मे रहने के बाद भी लड़की का नाम रंजावती रखते।

अच्छा मेरे साथ वेणीमाधव राय के परिचय होने की घटना सुनिए। न्युटन विश्वविद्यालय के कैम्पस मे वेणीमाधवराय की जै-जैकार है? प्रोफेसर राय का नाम लेते ही हर कोई श्रद्धा से गद्‌गद् हो जाता है। वैज्ञानिक गवेषण की दुनिया भर में जितने भी पुरस्कार हैं सब-के-सब वेणीमाधव राय के गले मे झूल चुके है। खुद अमेरिकन प्रेसीडेंट ने कोई-सा एक सम्मान मिलने पर उन्हें ह्वाइट हाउस में डिनर दिया था।

कैम्पस मे आने के कुछ रोज बाद ही वेणीमाधव राय ने मुझे खबर करा दी।

उस पहली मुलाक़ात वाला दिन ही मेरी आँखों के आगे तैर रहा है। पेट मे जरा ज्यादा शैम्पेन पडने पर भी उस रोज़वाली बात नही भूलती। कैम्पस के उत्तर में जिस ओर पहाड़ी के ऊँचे होते-होते फिर ढाल हो गयी है, नदी की छाती के बीच उसके एक टीले पर वेणीमाधव राय ने मकान बनवाया है। इस शहर के बहुत से सिरमौर लोगों ने यहाँ इस इलाक़े में मकान बनवाए है—अपने कलकत्ते के अलीपुर की तरह।

'भागीरथी'—मकान का नाम देखकर ही हैरान रह गया। दस

हजार मील दूर भी यहाँ भागीरथी की पब्लिसिटी कर रहे है। लेकिन इस भले आदमी को शायद यह नही मालूम कि भगीरथ ने जिस गगा का आह्वान करके शापित सगर पुत्रो का उधार किया था, वह भागीरथी अब करीब-करीब मर चुकी है। अब उसकी जगह सिर्फ़ कीचड़ है—प्राणहीन कीचड।

मकान के पास जाकर थोडी घबराहट नही हो रही थी सो बात नही है—आखिर मै दुनिया के एक मूर्धन्य वैज्ञानिक से मिलने जा रहा था।

मकान के नाम का बोर्ड जिस जगह लगा था, मकान वहाँ से काफ़ी दूर ही है। हर ओर तरह-तरह के पेड लगे है। बीच में एक लेन भी नजर आयी। हरी घास के कार्पेट से मढ़ी लेन।

मै दो-मञ्जिली इमारत के सामँने सहमा-सा रुका। पूरा मकान लकडी का वना हुआ था। अमेरिका में यही स्वाभाविक भी है। भगवान ने इन्हे जो अरण्य-सपत्ति दी है, उसे बराबर करने मे अभी भी कई सौ साल लग जायेंगे। इसीलिए ये लोग लकडी के मामले मे दरियादिल है।

मै उसी जगह खड़ा राजवल्लभ साहा सैकेण्ड बाई लेन के उस काई से ढँके मकान के बारे मे सोच रहा था। जिसके बाहर की ओर चाँसी का टूटा-फूटा दवाखाना है, और अन्दर प्रेस है, एक बूढ़ी ट्रैडल की छाती को घुटनो से दबाकर काम हासिल किया जाता है। इस टूटे घर में जिसमें आज भी खुला पखाना मौजूद है, आज के विख्यात प्राध्यापक वेणीमाधव सेन के।

मेरे कॉलिंग बेल बजाते ही जिस ऊँचे भारतीय ने दरवाजा खोला वही वेणीमाधव थे यह कहने की शायद जरूरत नही है। सर के बाल सफ़ेद हो आए थे।

पिताजी कहते थे, जो लोग प्रतिभावान होते है और जो इन्द्रियों की परवाह नहीं करते उनकी आँखों में चमक होती है। मैं देख रहा था, वेणीमाधवराय की दोनों आँखें शुद्ध एक सौ पावर के बल्ब की तरह ही

जल रही हैं। उनपर चढा है मोटे फ्रेम का चश्मा। एक ड्रेसिग गाउन मे अपने को लपेट रखा है, हाथ मे एक सिगार है।

अब जाकर हमारी चार आँखो का इन्टरव्यू शुरू हुआ। उन्होने कहा "तुम ही अनिर्वाण हो। आओ।"

वेणीमाधव ने स्नेह से भरकर कुछ इस तरह मेरा हाथ पकड लिया कि मेरी ओर से जरा दिखावा किए बिना ठीक नही लगता। इसीलिए मैने चटसे उनके पाँव छूकर प्रणाम किया।

मंत्र का-सा काम हुआ। उन्होंने मुझे स्नेह से अपनी ओर खींच लिया, जैसे मे उनका कितना सगा हूँ।

मैं अब उनके ड्राइग रूम मे घुस आया। ड्राइंग रूम की दीवारे पुस्तको से ढँकी थी। सिर्फ एक कोने मे एक विधवा की धुँधली-सी फोटो दिखलाई दी।

मेरी नजर फोटो पर है, वेणीमाधव समझ गए। मै उस ओर आगे बढकर देखने लगा। वेणीमाधव ने कहा, "माँ का कोई फ़ोटो नही था। उन दिनो हम लोगो के लिए दिन काटना मुश्किल था, फ़ोटो उतरवाने की बात कभी दिमाग ही मे नही आयी।"

वेणीमाधव ने बिना कोई इमोशन प्रकाश किए गंभीर होकर कहा, "यहाँ आने पर प्राय ही माँ के वारे मे सोचा करता। एक फोटो रहती तो कितना अच्छा होता। लेकिन फ़ोटो कहाँ से आती? आखिर खुद ही एक रोज़ कागज पैसिल लेकर बैठा। अपनी स्मृति से माँ का यह चित्र तैयार कर पाया।"

मै वेणीमाधवराय के पास आया था अमेरिका के बारे में जानने और वेणीमाधवराय ले बैठे राजवल्लभ साहा लेन और अपनी माँ की बात।

वेणीमाधव ने मुझे मोहल्ले का समझकर ही शायद पूछा, "चित्र में माँ का चेहरा देखकर तुम्हें कैसा लगता है?"

"लगता है, जैसे बुझा हुआ शक्तहीन चेहरा हो।"

वेणीमाधव राय ने कहा, "इसका मतलब मैं सफल हुआ हूँ। मेरी नज़रों के आगे आज भी माँ का अनिमिया से ग्रस्त चेहरा घूम जाता है।"

मैने और कुछ नही कहा। तुम्हारी माँ ने कागज के खोखे बनाकर और महाराजिन का काम करके तुम्हे पाला-पोसा यह बात राजवल्लभ साहा लेन के बच्चे-बच्चे को मालूम है। दुनिया मे और भी कितने ही लोगो की माँ बर्तन साफ कर या और कुछ करके अपने बच्चो को लायक बनाती है, लेकिन उनके बारे मे कोई चर्चा नही करता, क्योंकि उनके लड़के न्युटन विश्वविद्यालय मे प्रोफेसर वेणीमाधव राय नहीं हो पाए, बहुत हुआ तो क्लर्क बने।

चित्र की तरह सजा कमरा। एक बटन दबाते ही जादू की तरह सामने की दीवार का काफी हिस्सा सरक गया। हम कमरे से प्रकृति के काफी क़रीब आ गए। कमरे के एक कोने मे रंगीन टेलीविजन और दूसरी ओर स्टिरिओग्राम रखा है।

इतने रोज बाद मोहल्ले के किसी को पाकर वेणीमाधव ज़रा उतावले से होने लगे। किस तरह, कहाँ से बात शुरू करें, ठीक नही कर पा रहे थे।

मैने देखा, वेणीमाधव को ज़रा प्रभावित करने की जरूरत है। इसीलिए सीधे-सीधे कह दिया, "आपकी ही कृपा से मेरा यहाँ आना संभव हुआ।"

"अरे मै कृपा करने वाला कौन हूँ। तुम्हारे लिए पैसे दे रही है बेन-हिल फाउन्डेशन। उसके बदले मे तुम मानव जाति के लिए कुछ मंगल कारी करोगे, भारतवर्ष का मान बढाओगे। मै तो निमित्त मात्र हूँ।"

अमेरिका आकर दुनिया और मानवजाति की मंगल कामना करने को इंडिया मे जितने युवक-युवती उतावले बैठें है यह बात वेणीमाधव के आगे नही खोली। मुझे अपने काम से मतलब। वेणीमाधव राय अगर व्यक्तिगत रूप से इंटरेस्ट न] लेते तो बेनहिल फ़ाउन्शडेनवालो को राज-वल्लभ साहा सैकेन्ड बाई लेन के इस अनिर्वाण चटर्जी को ग्राट दिये बिना

जैसे नीद नही आ रही थी।

वेणीमाधव के टेबुल पर लकड़ी की एक ट्रे में कुछ सेब और अंगूर पड़े थे। मेरी ओर बड़े स्नेह से ट्रे को बढा दिया। "तब तक खाओ न, सीडलैस अगूर है, इनमें बीज नही होते।"

वेणीमाधव ने कहा "तुम्हारे घर पहली बार अंगूर खाए थे, मुझे अच्छी तरह याद है। सरस्वती पूजावाले रोज तुम्हारे पिताजी मुझे अपने घर ले गए। पुष्पाजली के बाद प्रसाद दिया। कहने लगे माँ से आशीर्वाद माँगो, उसके वरदपुत्र बनो।" कृतज्ञ वेणीमाधव बोले "तुम्हारे पिताजी की तरह परम धार्मिक और आदर्शवादी संसार मे विरले होते है। उन्होंने ही मुझे उत्साहित किया, मुझमे आशा का संचार किया। कहा था "लडे जाओ। एक रोज दुःख को तुम्हारे आगे हार माननी ही पडेगी।"

वेणीमाधव राय मेरे पिता हरेनचन्द्र के गुणगान करने लगे, और मै चुपचाप उसका आनन्द लेता रहा।

बाप के परिचय से लड़के के परिचय का यह भारतीय तरीका मुझे बड़ा अच्छा लगता है। बाप का मै कैसा लड़का हुआ हूँ यह तो फ़िलहाल पता लगने वाला नही है, लोग यही मानकर चलते है कि लँगड़े आम का बच्चा लँगडा आम ही होगा।

वेणीमाधव राय ने पूछा "राजवल्लभ साहा लेन के क्या हाल है?"

बात को टालते हुए मैने कहा "गाड़ी चल रही है, चलती रहेगी।"

वेणीमाधव इस वक्त नास्टॅलजिया से पीडित थे कहने लगे "हमारे घर के सामने एक चने वाले की दूकान थी। अभी तक है?"

"जी हाँ अभी तक है। सिर्फ पहले से जरा और भी गंदी हो गयी है। यह तो आप जानते ही है कि धूल झाड़ने, सफाई करने के लिए, अमेरिका या रशियन कोई भी गवर्नमेंट हम लोगों को एड नही देती। और बिना एड मिले हम अपना गमछा धोना भी जरूरी नही समझते!"

सोच रहा था वेणीमाधव मेरे इस व्यंग की तारीफ़ करेंगे, या हँस पड़ेंगे। लेकिन उनके चेहरे पर ऐसा कोई भाव नजर नही आया। अचा-

नक नोट बुक निकालकर बोले "कुमार को इस बारे में भी कुछ वतलाना पडेगा। युग-युग से नरक कुड मे रहने के बाद आदमी अपना स्वाभाविक सौदर्य-बोध भी खो बैठा है। परिच्छन्नता नाम की चीज उसके लिए मूल्यहीन हो गयी है। दोष इसान का नही है, वातावरण का है।"

वेणीमाधव ने कहा "और वह सूखे बिस्कुटों की दुकान थी उसका क्या हुआ? एक पैसे मे तीन बिस्कुट दिया करता था।"

"ठीक है। लेकिन अब तीन पैसे मे एक बिस्कुट मिलती है। जानते है स्वाधीन भारत के दो प्रधान कीर्तिस्तम्भ बने है, एक है जनस्फीति और दूसरा मुद्रास्फीति।

वेणीमाधव इससे विचलित नहीं हुए। बडी निश्चितता से उन्होने कहा "शरीर अस्वस्थ होने पर आदमी के हाथ, पाव, आख और नाक फूलते है, इसके लिए उसका इलाज कराना पडता है।" भारत वाकई अध. पतन की खाई मे जा रहा है, इस बात पर यकीन करने को वे राजी नही है।

वेणीमाधव आज काफी खुश है। काफी दिनों के वाद आज उन्हें एक ऐसा आदमी मिला है जो उन्हे उनके कैशोर्य और यौवन के दिनों की ओर वापस ले जा सकता है। मुझे ये सब सेंटीमेंटल बातें अच्छी लगती हो ऐसी बात नही है, लेकिन समझते ही है कि, वेणीमाधव की वजह से ही यह फ़ैलोशिप मिली है, नही तो अमेरिकन एअरपोर्ट के लोग मुझे इस देश की जमीन पर पाँव ही नही रखने देते।

तभी वेणीमाधव ने कहा "जरा रुको, मै तुम्हारे लिए कॉफ़ी बना लाऊँ।"

मैने देशी तहज़ीब दिखलायी "आप क्यो बेकार तकलीफ़ करते है।"

"यहाँ नौकर-चाकर तो है नही भाई। समाज के दरिद्र स्तर को इन लोगो ने प्राय: खत्म ही कर दिया है—इस सभ्यता की सबसे श्रद्धेय दिशा यही है, समझे अनिर्वाण। यानि कि तुम खुद ही अपने नौकर हो, खुद ही अपने महाराज हो।" मेरी पत्नी जरा किसी मीटिंग वगैरा के

सिलसिले मे बाहर गयी है। ससुराल के आदमी को देखकर काफ़ी खुश होती।"

कॉफी का कप हाथ मे लिए वेणीमाधव ने कहा "मुझसे बडी भूल हो गयी। तुम्हें राजवल्लभ साहा लेन के कुछ फ़ोटो लाने को लिख देना था। कुमार भी अपनी आँखो से देख लेता। मुझे भी पता नही चालीस सालों मे क्या-क्या बदला है।"

मेरी भी इच्छा हो रही थी कि वेणीमाधव का एक फोटो लेकर राजवल्लभ साहा लेन के पुराने लोगों के पास भेज दूँ। वे लोग देखें कि वह शर्मीला, अधमैली शर्ट पहने वेणीमाधव जिसकी माँ कागज के खोखे बनाया करती थी, आज कितना बदल गया है।

वेणीमाधव अब अतीत मे वापस लौट जाना चाहते है। वर्तमान के सुखी आश्रय से कष्टकर अतीत मे कभी लौटना सभी सक्सेसफ़ुल लोगों के लिए एक तरह का शौक है।

वेणीमाधव ने कहा "बचपन के वे दिन बड़े कठिन दिन थे। मेरी माँ के कमरे मे एमब्रॉयडरी किया एक लेख था—और मेघ, देख कोई करना न भय, पीछे उसके सूर्य हँसे, खोये शशि की खोयी हँसी, अँधेरे में ही फिर-फिर आए।"

मैने मन ही मन कहा हाँ, तुम्हारी बदली तो छँट चुकी है, सो दिए जाओ लैक्चर।

वेणीमाधव ने कहा "तुम्हारे पिताजी की बाते भी नहीं भूल सकता। उन्होने ही मुझे कहा था, तू पढ़ने मे तेज है, तुझमे प्रतिभा है, उम्मीद है, उम्मीद न छोडना, तू इस गोरखधंधे से निकल जा।"

मन ही मन पितृदेव को थेंक्स दिया। भाग्य से यह काम किया, तभी तो मेरे लिए फ़ॉरेन आना मुमकिन हुआ।

वेणीमाधव ने कहा "भारत के लोग इतने दारिद्र्य में भी कितने महान् हो सकते हैं यह बात दुनिया के लोगों को नही मालूम।"

मुझसे और नही रहा गया। मैंने कहा "गरीब ईमानदार होते है,

गरीब सरल होते है, गरीब सीधे-सादे, ये सब बाते नाटक-नॉवल मे ही लिखी जाती है। गरीब भी कम पाजी नही होते, मौका मिलते ही हाडों मे घुन लगाकर छोड देंगे।"

वेणीमाधव को भारत छोडे काफ़ी अरसा हो गया है, मुझे यह बात याद रखनी चाहिए थी। देखा वेणीमाधव चौक उठे। उन्हें मेरी बात से काफी तकलीफ़ पहुँची, यह मै उनकी आँखों की ओर देखकर समझ रहा था। जाएँ भाड़ में, देखिए न किस झमेले मे पड गया। इतने भोंदू और कच्चे मन को लिए तुम परीक्षा मे कैसे फ़र्स्ट हुए, विदेश आए, यहा नाम कमाकर महत्त्वपूर्ण आदमी बने ?

उन्हे खुश करने के लिए मैने कहा "मतलब यही कि गरीब बेचारो का क्या कसूर है ! गवर्नमेंट ने ही उन्हे खराब किया है। इस गवर्नमेंट की वजह से इंडिया की हालत खराब हो रही है।"

लेकिन यह क्या, खुश होना तो दूर की बात, वेणीमाधव और भी दुखी हो गए। कहने लगे, "मै जिस भारत को जानता हूँ वहाँ सारे दुःखों के लिए ब्रिटिश गवर्नमेंट को जिम्मेदार ठहराया जाता था। लेकिन अब तो भारत आजाद है। अब तो…"

इन सब बेकार की बातो को सुनने के बाद दिमाग की हालत क्या होती है, यह समझ ही सकते है। लेकिन वेणीमाधव को भारत प्रेम का मर्ज हो गया है। वे कहते रहे। "मै अपने बच्चो से कहा करता हूँ, दुनिया में भारत एक ही है। भारत के लोगो ने कई शताब्दियो के संघर्ष के बाद भी अपनी इंसानियत को भुलाया नहीं है। जिस रोज फिर से भारत नींद टूटने के बाद उठ खडा होगा उस रोज विश्व सभ्यता फिर एक नए आलोक से जगमगाने लगेगी।"

मै चुपचाप कॉफी पी रहा था और उनके चेहरे की ओर ताक रहा था।

वेणीमाधव ने कहा "भारत मे सब कुछ है, सिर्फ थोड़ी आग की कमी है। जिस रोज़ वह आग दहक उठेगी, भारत के पॉच लाख गाँवों मे उस

रोज कितना आश्चर्यजनक कुछ घटेगा, दुनिया के लोगों के लिए उसकी कल्पना करना भी मुश्किल है।"

मैं पूछने जा रहा था, उधर वे कब भारत गए है। और कुछ नहीं तो कांफ्रेंस, एक्सचेंज प्रोग्राम, यह सब तो लगा ही रहता है।

मैं सुनकर हैरान रह गया, "पहली बार जब से आया, अभी तक नही गया। इतने साल किधर से गुजर गए पता ही नही चला।"

और भी बाते होती, लेकिन तभी गाडी की आवाज सुनायी दी। जरा देर बाद ही एक विदेशिनी महिला और एक युवक अन्दर आए। युवक के चेहरे पर वेणीमाधव की छाप है।

दोनो हे-हे करते अंग्रेजी मे गिटपिट कर रहे थे, लेकिन अन्दर कमरे मे मुझे देखते ही चौककर खड़े हो गए। वेणीमाधव ने कहा "अनिर्वाण के बारे मे तुम लोगों को बतला चुका हूँ। लेकिन उससे पहले मीटिंग में क्या हुआ, यह बतलाओ ?"

महिला ने कहा "डार्लिग, हमारी एसोसिएशन से जो रुपया इकट्ठा होगा उसमे से आधी रकम इंडिया भेजी जाएगी, यह तय हुआ। हम बांकुडा के पास एक गॉव के बच्चो को एडॉप्ट करेंगे—उनके स्कूल के टिफ़िन का खर्चा यहाँ से भेजा जाएगा।"

लडके ने कहा "पिताजी, पता है टिफिन मे सिर्फ़ एक गिलास दूध और दो पीस ब्रेड-बटर दिया जाएगा। उसमे क्या होता है, आप ही कहिए।"

महिला ने कहा "दूध के साथ हम विटामिन और प्रोटीन भी देंगे।"

लडका सन्तुष्ट नही हुआ। उसने कहा "यह सब मैने खाकर देखा है। मुझे जरा भी अच्छा नही लगा।"

वेणीमाधव ने कहा "हम जब स्कूल मे पढते थे, तो छोले खाने के लिए दिल किया करता था। लेकिन पैसे कहाँ से लाते ?"

"पिताजी, ह्वाट इज़ 'छोला' ? लडके के सवाल पर ज़रा ग़ौर करने पर मैं जोर से हँस पड़ता।

वेणीमाधव ने कहा "डेलीशस, अभी भी उसका स्वाद मुँह मे लगा है। एक तरह की दाल की प्रिपरेशन है। बहुत कुछ करी टाइप की, साथ मे नारियल, मिर्च और नीबू का रस।"

"यू मीन लाइम" छोकरे ने जानना चाहा।

वेणीमाधव ने कहा, "हां, लेकिन इडिया मे रहते मै कभी भी रसोई-घर में नही गया, नही तो तुम लोगो को बतलाता कि छोले कैसे बनते है।"

मैने देखा यही मौक़ा है। मैने कहा "अगर कहें तो एक रोज़ यहाँ छोले बनाने की कोशिश की जाए। एक बार हम कई दोस्तों ने मिलकर घर की छत पर छोले बनाए थे।"

महिला ने मेरा सुझाव लपककर लिया। "तुम किसी भी रोज़ चले आओ, यही बनाए जाएँ, हम सब तुम्हारे ऍसिस्टेंट होंगे।"

वेणीमाधव भी बडी खुशी से राजी हो गए लेकिन साथ ही बोले, "हमारे मोहल्ले मे जो आदमी छोले बेचा करता था उसका नाम छेती था। दुनिया मे छोलो के लिए कोई नोबुल प्राइज़ होता तो वह उसी को मिलता।"

वेणीमाधव को तभी जैसे याद आया उन्होंने कहा, "अरे छोले तो बनते रहेगे, लेकिन अभी तक तुम लोगो का परिचय नही कराया। अनिर्वाण, अब तक इतना तो समझ ही लिया होगा कि आईलिन मेरी पत्नी है और यह ताड़ के पेड़ जैसा लम्बा लड़का, सॉरी युवक, मेरा पुत्र है। इसका नाम रखने को मैने इसकी माँ से कहा। इसकी माँ बोली ठीक है मै ही रखूँगी, लेकिन तुम मेरे लिए एक अच्छा-सा इंडियन नाम पसद कर दो। मैने इस पर यह 'भारतकुमार' नाम बतलाया। मै इसे 'कुमार' कहता हूँ और मेरी पत्नी पुकारती है 'इंडि' कहकर।

कुमार बडे मज़ से माता-पिता की बात सुन रहा था। अब उसने कहा "मिस्टर चटर्जी, जानते हैं? एकबार तय हुआ था कि मेरा नाम इंडियाराय रखा जाए। लेकिन बाद में माँ को ध्यान आया कि स्टेट्स में इंडियन के माने रेड-इंडियन होते है।"

मिसेज राय अपनी अमेरिकन इंगलिश के साथ बीच-बीच में दो एक बंगाली शब्द बोलने की कोशिश करती। लेकिन अटक जाती। कोशिश करती और ठोकर खाकर फिर अपनी इगलिश का पल्ला पकड़ती। कुमार की भी करीब-करीब यही हालत थी। उसे भी थोडी बगला आती है। वह जब बंगला बोलना शुरू करता है तो बडा मजेदार लगता है, कभी-कभी तो जैसे तुतलाने लगता।

कुमार बोला "आप तो बैगॉल से आ रहे हैं। आप इन दैट साहा लेन मे अमादेर···अमादेर···ह्वाट डू यू से···" वेणीमाधव कुछ कहने जा रहे थे···लेकिन कुमार ने रोक दिया···"प्लीज डोन्ट डैडी···मैं अभी याद किए लेता हूँ···फिर सिर के बाल खुजलाते हुए यस···पैतृक बाड़ी। ···फिर जेब से नोटबुक निकालकर कुछ देखकर बोला, "सॉरी···बाडी नही, पैतृक मिटे, पिताजी उस रोज़ यही वर्ड यूज कर रहे थे, मैने लिख लिया। हॉ तो आपने वह देखा है ?"

पिताजी बोले "कुमार उसके पास ही रहते है।"

फिर तो जैसे दोनों की खुशी का ठिकाना ही नही रहा। कुमार मुझसे तरह-तरह के सवाल करने की तैयारी मे था। लेकिन वेणीमाधव ने कहा "मिस्टर चटर्जी अभी काफी रोज न्युटन रहेगे और प्राय. ही यहाँ आयेंगे, यानी तुम लोगो के हाथ में अपनी जिज्ञासा शांत करने का भरपूर समय है।"

उस रोज़ मिसेज. राय और उनके पति दोनों मुझे दरवाजे तक छोड़ने आए। मिसेज बोली मेरी लड़की रंजा से तुम नहीं मिल पाए। तुमसे मिलकर उसे काफ़ी खुशी होती।"

मिस्टर राय ने पूछा "कोई तकलीफ़ तो नही है ? हो तो मुझे बतलाना। तुम्हारे पिताजी मुझे बहुत चाहते थे, कितनी बार तुम्हारे घर चाय और पूड़ी खाकर आया हूँ।"

जैसे प्राचीन युगीन तपोवन में आ गया हूँ। दूर पेड़ों की लाइन के

पीछे से उनकी ओर देखने पर लगा जैसे ऋषि दपति खड़े मुझे आशीर्वाद दे रहे है।

यह आशीर्वाद नाम की चीज़ मुझे ज़रा भी अच्छी नही लगती—इसके मायने इन्द्रियो के पहियो में ब्रेक लगाए बैठे रहो, अपने मन के बीच ज़रा साधु-संतो जैसा भाव लाओ। तो मै कौन से दुःख के लिए ऐसा करने जाऊँ ?

मै अपनी फ़ॉक्स-वैगन चलाकर अॅपार्टमेट लौट रहा था कि अचानक जिया-उर-रहमान दीख गया। जिया अपने ढाका का लडका है; एकदम कट्टर ढ़ाकाई। जिया को गाड़ी मे बैठा लिया। ज़िया बोला "क्या हाल है दादा ?"

"गुजर हो रही है भाई।"

जिया ने कहा "ढ़ाका से आज आम के पापड़ आए है, आपको एक खिलाऊँगा।"

"अरे अब उतनी-सी चीज़ मे मेरा भाग क्यो बैठाते हो ?"

"अपने बगाली दादा को बिना खिलाए कैसे खा सकता हूँ ? अरे टुकडे देश के ही तो हुए है ?"

जिया के साथ यही मुश्किल हे। रातदिन सिर्फ़ बगाली बगाली किया करता है। बगालियो का किस तरह भला हो, बंगाली किस तरह अपने पॉवो पर खड़े हो, बिस्तरे पर पडा-पड़ा भी यही सब सोचा करता। बुद्धू कही का ! मुझसे भी पूछता है, मै हाँ, हूँ करता रहता हूँ। कुछ नही तो भी सात-आठ करोड़ बंगाली बचे हैं। मै उन लोगों के बारे मे सोचकर क्यो अपना दिमाग़ खराब करूँ ? हर एक बगाली को अगर एक-एक पेसा भी दिया जाए तो जितने रुपयो की ज़रूरत पड़ेगी उतने मै सात जन्म मे भी नही कमा सकता। अनावृष्टि, बाढ़, दुर्भिक्ष, व्यावसायिक मंदी, कॉलरा, टायफाईड और दंगे-फसादों के बावजूद बंगालियो की सख्या बढ़ती ही जा रही है। सिर्फ़ भारत ही क्यो ? दूसरे देशो में भी क्या हो रहा है देखिये। अपना यह निमाई मुकर्जी ही जिस तरह टुलटुल का दिल

बहलाव करने के लिए सब कुछ भूलकर जुटा है, अगर अपनी कोशिश मे कामयाब होता है तो बंगालियो की संख्या और भी बढेगी ।

जिया से पूछा "और सुनाओ जिया, कैसी गुजर रही है ?"

"खास खराब नही । लेकिन इस जेनी को लेकर ज़रा मुश्किल में हूँ । जेनी अपने दोस्त और सहेलियो से कहती फिर रही है कि वह मेरे साथ 'स्टेडी' हो रही है, और किसी की डेट नही लेगी ।"

"लेकिन बहू के रूप मे खराब भी क्या है ! तपे सोने-सी लाल बहू पाकर तुम्हारी माँ निहाल हो जायेगी," मैं कहता हूँ ।

जिया कहने लगा "इन लडकियों के साथ डेट-फेट की जा सकती है, करना अच्छा भी लगता है, इनके चूमने का तरीका भी मजेदार है । लेकिन इसीलिए शादी कैसे की जा सकती है ?"

"मैने तुम्हारा केस समझ लिया । यानि तुम जिदगी भर बिस्तरे पर पडे अंग्रेज़ी नही बोलना चाहते, यही न ?"

"बिलकुल ठीक पकड़ा आपने दादा, आपकी जीनियस की बात ही कुछ और है । जेनी को समझाने गया था, हम लोगो के प्रेम को और भी घनिष्ट करने का वक्त अभी नही आया है ।"

मैने कहा "अरे जेनी के पीछे किसी छोकरे को लगा दो । डिवाईड एण्ड रूल ।"

जिया ने मेरी एक नही सुनी, अपने अॅपार्टमेंट के आगे गाड़ी रुकवा-कर प्राम के पापड ले आया । फिर पूछा "आपका काम कैसा चल रहा है ?"

"यह तो जानते ही हो कि सब्जैक्ट थोड़ा अटपटा-सा है—साम्प्र-दायिक दंगे ।"

"मै तो जो साला मिलता है उसी से कह देता हूँ कि बंगाली को छोड़ और कोई इस विषय के साथ न्याय नहीं कर सकता । अपने स्वार्थ के लिए अंग्रेज़ो ने दंगो की सृष्टि की, और उसमे बलि होना पडा बगालियों

को। इसलिए बंगालियो की ओर से आपको इसकी हिस्ट्री लिखनी ही होगी।"

जो दो-चार बंगाली आस-पास मे थे उनकी खबर रखने का जिम्मा जिया ने ही ले रखा है। जिया बोला, "इन्द्राणी सेन से परिचय हुआ है। उसके पति के लिए कोई काम ठीक कर दीजिए न।"

"क्यो, लगता है विरह-ज्वाला सही नही जा रही।"

"और एक बंगाली बढता," जिया को सिर्फ़ यही चिता थी। मैंने मन ही मन सोचा, विरह अगर इतना ही सता रहा है तो दिनोंदिन वज़न कैसे बढा जा रहा है ? इन कुछ ही महीनो मे इन्द्राणी काफी फूल गयी है।

वापस आते ही फ़ोन किया। मैने कहा, "देखता हूँ फोन करके काफ़ी डिस्टर्ब ही किया आपको मिसेस सेन। लगता है यहाँ के छोकरे काफी परेशान करते रहते है ?"

उधर इन्द्राणी देवी हँसी के मारे दुहरी हुई जा रही थी, यह मै फ़ोन पर ही समझ पा रहा था। "आपको मालूम है मिस्टर चटर्जी, यहाँ के अमेरिकन इडियन लड़कियो के पीछे दीवाने है।"

"बड़े पुण्य करके आयी है आप लोग। साड़ी के रहस्य का उद्घाटन करने के लिए ये लोग पागल है। जबकि धोती के लिए यहाँ की लड़कियों में लेशमात्र भी रुझान नहीं है।"

मैं जवाब देता हूँ।

"मज़ाक नहीं करती। लेकिन यहाँ के इंडियन छोकरे हम लोगों के मुँह पर कालिख लगवा रहे है। जिसे देखो वही डेट मे लगा है। इतना भी खयाल नहीं करते कि आखिर हमारे देश का ट्रेडीशन क्या है? वहाँ बीवी को छोड़कर और सभी के साथ पुरुष माँ, मौसी या बहन का रिश्ता मानता है।"

"आपका आदर्श देखकर अब लोगों की समझ मे यह बात आ रही है।"

"आप भी किस लडकी के साथ डट चला रहे है, मुझे पता है।"

यह सुनकर मिजाज बिगड़ गया। बात पूरी कर फोन रखने के बाद एक बात दिमाग मे आई। मेरे दिमाग में अगर एकबार कोई बद-माशी घुसने लगती है तो मै अपने आपको सम्हाल नही पाता।

इन्द्राणी सेन को फ्रेम में रखकर उनके आस-पास कुछ लड़को के बारे मे सोचने लगा। यह जो नारी चरित्र विशारद कार्ल मेरे पास बैठा है, उसके बारे में सोचा। युवतियों का कौन-सा स्विच दबाने पर क्या फल होता है, उसे सब याद है। इसे ही लगा दूँ पीछे। लेकिन उस वक्त मेरे दिमाग में कोई दूसरी बात ही घूम रही थी। मै जिया के बारे मे सोच रहा था।

ज़िया जिस तरह का युवक है, उसे सिर्फ लोभ दिखलाकर काम नही कराया जा सकता। वह बंगाली-उद्धार की खुमारी मे खोया है। इसलिए जरा आदर्श का टच देना पडेगा। मैने कहा, "मेरी एक शिकायत है। इन्द्राणी के बारे मे तुम लोग कुछ भी नही सोचते, यहाँ परदेश में बेचारी अकेली पड़ी है, जरा उसकी भी तो देखभाल करनी चाहिए।"

जिया का बगाली हृदय यह सुनकर रो पड़ा।

"जरूर दादा, यह तो करना ही पडेगा। हमारी बहन की तरह है।"

मैने डाट लगायी! "अपनी नही, परायी बहन।"

जिया जरा घबरा गया था। मेरे चेहरे की ओर देख रहा था। तभी मैने धीमे से विष ढाल दिया। "तुम्हारा इतना सुन्दर चेहरा देख-कर तो मुझे ईर्ष्या होती है। सुनो, इन्द्राणी देवी तो तुम्हारे लिए पागल है।"

"कहते क्या है दादा, हो ही नही सकता।"

"लेकिन तुम्हे छोड और किसी को इस बात का पता न चले। तुम्हारी इन बडी और खिची आँखों की प्रशसा जो सुनी है।"

"नामुमकिन दादा।"

"अरे एकबार आगे बढ़कर तो देखो। लेकिन जरा दिमाग लगाकर

होशियारी से आगे बढना पड़ेगा। उसमे पति को यहाँ लाने की फ़िक्र छोड़कर धीरे-धीरे इससे सपर्क बढ़ा लो। पाँच डालर की बाजी रही—तुम कामयाब होगे। नही तो यह पाँच डॉलर तुम्हारे रहे।"

जिया को इसके बाद देखा। चेहरे का रग ही जैसे बदल गया था। समझ गया कि हजरत जुट गए है। लेकिन मिसेज सेन अभी भी अमेरिकन युवक और युवतियो के आगे पश्चिमी सभ्यता पर नाक-भौह सिकोडे जा रही थी।

कुछ रोज बाद जिया जैसे मुझसे कतराने लगा था। लेकिन वह मिसेज सेन के अॅपार्टमेंट मे प्राय: ही देखा जाता। उन्हें सुविधा भी थी। दोनो एक ही विषय पर काम कर रहे थे—इसलिए उन लोगो का मिलना-जुलना स्वाभाविक ही था।

मिसेज सेन ने कहा था, 'जिया-उर-रहमान मुझे पहले कैसा-कैसा लगता था। आपसे कहने मे संकोच नही है, पाकिस्तानियो के बारे मे मेरी धारणा अच्छी नही है। इन लोगो की वजह से पिताजी को रिफ्यूजी बनकर आना पडा। लेकिन यह लडका रवीन्द्रनाथ का भक्त है। बहुत अच्छा गाता है। कह रहा है, यहाँ पर रवीन्द्रनाथ का एक नृत्य-नाट्य आयोजित करेगा।'

इसलिए इन्द्राणी को नाचना पड़ेगा। इसी के साथ गाने भी टेप करने पड़ेगे। इसीलिए उसकी दिलचस्पी है। उधर इन्द्राणी का जिक्र होते ही जिया के कान लाल हो जाते। पकड़े जाने पर मेरे आगे स्वीकार कर लिया, "आपने ठीक ही कहा था दादा।"

एरोप्लेन की सीट से मुडकर एक बार मिसेज़ सेन को देखा। आज इन्द्राणी सेन हम लोगो के साथ वापस लौट रही है—इसकी वजह भी मुझे मालूम है। जिया को पाँच डॉलर देने पड़े है। बात एक्सीडेंट तक

जा पहुँचेगी, यह नही सोच पाया था। अमेरिका में एबॉरशन काफ़ी मँहगा पडता है।

इसलिए वक्त रहते इन्द्राणी को भागना पड रहा है।

लेकिन जिया बुरी तरह पछता रहा था। कहने लगा "यह क्या कर बैठा दादा। मात्र भाषा का सुयोग लेकर एक बंगाली का नुकसान कर दिया। लोग अब मुझपर कैसे यक़ीन करेंगे। अपनी सस्कृति और भाषा से ज्यादा अपनी हवस को महत्त्व दिया। दादा, मुझे माफ़ कर दे। कलकत्ते के लोगो से कहिएगा, सारे पूर्व पाकिस्तानी मेरी तरह नीच नही है। वे लोग वाकई आदर्श को लेकर जीते है।"

कितनी नाजुक परिस्थिति मे पडना पड़ा है मुझे। जो किया, ठीक किया। भूल जाये, सो तो नही, आदर्श को पकडे बैठा है। इस सेंटी-मेटल बंगाली जाति का कुछ भी नहीं होगा—इण्डिया और पाकिस्तान दोनो ही जगह ठगे जायेगे।

अब जरा इन्द्राणी से बात कर आऊँ। 'पतिव्रता का पद' स्खलन' नाम से एक कहानी लिखने को जी चाह रहा है। इन्द्राणी मुझे देखते ही सीट से उठ आयी। हमने टॉयलेट के सामने की जगह में खड़े होकर बात की। इन्द्राणी अभी भी झुक नही रही थी। मैने कहा, "आखिर आपका विरह पूरा हो रहा है।"

नाजुक मुस्कराहट के साथ इन्द्राणी ने कहा, "वे दमदम आएँगे। मैं आपसे उनका परिचय करा दूँगी।" मैं वापस अपनी सीट पर चला आया। हँसी रोकने मे बड़ी तकलीफ हो रही थी।

ध्यान ही नहीं रहा कितनी देर अपने आपमें खोया बैठा रहा। अचानक देखा, हमारे बोइंग प्लेन के अधिकांश यात्री सो गए है। कुमार को भी देखा आपने दोनों हाथ गोद में रखे सो रहा है।

उसकी ओर देखने पर मुझे उस रोजवाली घटना याद आ गई जिस रोज मै छोले बनाने के लिए दुबारा वेणीमाधव के घर गया था। मिसेज राय इस उम्र में भी जोश और स्फूर्ति मे लबालब भरी थी।

सबने मिलकर मेरा स्वागत किया। प्रोफेसर उस वक्त लेबोरेटरी गए हुए थे। मिसेज राय ने कहा, "आओ आओ।"

मिसेज राय अंग्रेजी मे ही बात कर रही थी। दुखी होते हुए बोली 'मेरे पति की इच्छा है कि मैं अच्छी तरह बगला सीखू। लेकिन वैसा मौका ही नही मिला। बस उनसे कुछ वर्ड्स पिकअप कर लिए है।"

मिसेज राय गभीर और भली महिला है। कहने लगी "ये जब पहली बार यहाँ आए तो मैं यहाँ के आफ़िस की सैक्रेटरी थी। दो साल विदेश में रहने के लिए आए। इनके चेहरे की ओर देखकर समझ गई कि एक रोज और भी बडे होगे। इन्होने मुझे निराश नही किया। न्यूटन विश्वविद्यालय इनकी जान है। कई विश्वविद्यालयों मे नौकरी की कोशिश की लेकिन एक मात्र न्यूटन के डॉक्टर हार्टन ने इन्हे बुलाकर रखा। यह बात आज भी मेरे पति भूले नहीं है। मशहूर होने के बाद स्ट्रेनफोर्ड और कोलम्बिया से ऑफर आए, लेकिन मिस्टर राय नही गए।"

उस रोज एक और भी बात सुनी। वेणीमाधव राय की साधना की कहानी। किस तरह कुछ बनने के सपने ने उन्हे पागल बना दिया था। और किस तरह प्रतिभा और परिश्रम ने उन्हे सफलता की चोटी पर पहुँचा दिया। लेकिन लगता है वेणीमाधव कही पर अकेले है। आज भी अपने देश को नही भुला पाए है। आज भी हर वक्त भारत के बारे मे परेशान रहते है। हालांकि कानूनन उन्हे भारत के बारे मे सोचने की कोई जरूरत नहीं है। क्योंकि अब वे अमरीकी नागरिक है।

मिसेज राय से वह कहानी भी सुनी। परम कृतज्ञता के साथ वेणीमाधव राय ने इस विदेशिनी से विवाह किया। आईलीन न होती तो वेणीमाधव पता नही कहाँ बह जाते। इस परदेश मे उन्होंने ही वेणीमाधव को हिम्मत, साथ और सेवा दी। पति को और भी बड़ा बनने के लिए उत्साहित किया। मिसेज राय ने मुझसे पूछा था "आप लोगो के देश मे इंसान इतना गरीब क्यों है?"

मै इस बात का क्या जवाब देता। ग़रीबो के बारे मे चिंतित होना तो एक तरह् की विलासिता है। दादा गरीब, बाप गरीब, वे लोग खुद ग़रीब है, उन लोगों के बच्चे, नाती-पोते सब गरीब होगे—जहाँ तक मुझे मालूम है दुनिया का यही तो नियम है। लोकप्रिय होने के लिए दो-चार नेता गरीबो को जरूर सिर चढाते है।

मिसेज राय और उनके पति बात चलते ही इस सब के बारे मे सर खपाते। लेकिन भाई, तुम लोग गलती करते हो। दुनिया मे और भी बहुत-सी अच्छी-अच्छी चीजे है, जिनके बारे मे मगजपच्ची करने से फायदे हासिल किए जा सकते है।

मिसेज राय ने कहा "मेरी सास ने विधवा होने के बाद किस तरह् मिस्टर राय को पाला और पढ़ाया-लिखाया, आपको तो मालूम ही होगा। इसीलिए मेरे पति अपने-आपको भारत के गरीबो से अलग नही देख पाते।"

"ये आज भी अकेले मे खिन्न हो जाते है। उस पर मजा यह् कि किसी भी तरह् भारत जाने को राजी नही होते। कहते है, 'मै अपने पीछे का सेतु जलाकर आया हूँ। मेरा वापस लौटना नामुमकिन है।' हाँ आप इसकी वजह् उनसे न पूछ बैठिएगा।"

मिसेज राय ने कहा "मुझे आज भी वह् दिन याद है जिस दिन इन्होने अमरीकी नागरिकता अपनायी थी। आपको तो मालूम होगा कि इस देश की नागरिकता पाने के लिए कितने लोग लालायित रहते है; यहाँ की नागरिकता पाना है भी मुश्किल। लेकिन ये है कि इसे टालते ही रहे। बाद मे काफ़ी अड़चन होने लगी। मेरे बड़े लड़के की उम्र उन दिनों पाँच साल की थी। कॉलेज की लेबोरेटरी मे उन दिनो मिलिटरी विभाग का बहुत-सा काम था। लेकिन कानून के मुताबिक किसी विदेशी नागरिक को ये गोपनीय काम नही सौपे जा सकते थे। ये काफी दिनो तक सोचते रहे। एक रोज़ रात को देखा मेरे पति निश्चल पत्थर की तरह् आसमान के तारो की ओर ताक रहे है। मैं उनके पीछे जाकर खड़ी

हो गयी। मैने पूछा "आप किसी गहरी चिता मे है।"

इन्होने मुझे पास खीच लिया। "आईलीन शायद तुम तो गलत नही समझोगी। मुझे रोशनी चाहिए। मुझे रास्ता दिखलायी नही दे रहा।"

मैने कहा, "आपका दिल जिस बात की गवाही दे, वही कीजिए। आप जो कुछ भी करेंगे मुझे सहर्ष स्वीकार होगा। आप चाहे तो मै राजवल्लभ साहा लेन जाकर रहने को भी तैयार हूँ।"

इन्होने कहा, "कितनी अजीब बात है, मै अगर इस पेपर पर साइन कर देता हूँ तो दूर बहुत दूर सागर और महासागर पार जो देश है, जिस देश मे मैंने जन्म लिया है उसके साथ मेरा कोई नाता नहीं रह जाएगा। मै उस देश के लिए विदेशी हो जाऊँगा।"

मिसेज राय ने कहा "मै इन्हे अकेले छोडकर वापस आ गई। मै समझ गयी थी कि ये अकेले रहना चाहते है। काफी देर बाद कमरे मे वापस बिना कुछ कहे ये सो गये। तभी समझ गयी कि इन्होंने अमरीकी नागरिक होने का निश्चय कर लिया है। मे जानती थी कि इसके अलावा कोई रास्ता नही है। क्योकि सबसे ऊपर थी इनकी वैज्ञानिक साधना। अपने-आपके प्रति, अपने देश के प्रति और सारी मानव जाति के प्रति कर्तव्य मे कौन-सा सबसे ऊपर है, इस बारे में इनके मन मे अब कोई दुविधा नही रह गयी है।"

मिसेज राय कहती रही "वैज्ञानिक गवेषण का ऐसा संयोग इनको और कही नही मिलेगा। अगर ये और अमेरिका पूरी तरह मिल जाते है तो इसके लिए प्रयोजनीय किसी भी वस्तु का इन्हे अभाव नही रहेगा। खाना-पहनना और सुख-सुविधा में ही जिंदगी निकल जाती है। कुछ ही लोग इसी मे देश के बारे में सोचते है। और भी थोडे से कुछ लोग है जो इसी मे सारी मानव जाति के बारे में सोच लेते हैं। राष्ट्रसंघ और यूनेस्को में लोगो को मोटी तनखाहें देकर उनसे दुनिया के बारे मे चिंता करायी जाती है। जो लोग आज भी निस्वार्थ भाव से जाति के बारे में

सोच लेते है वे या तो कवि होते है या वैज्ञानिक।"

विज्ञान के क्षेत्र मे वेणीमाधव राय ने जो साधना की है, वह पूरी मानव जाति के लिए है। यदि यह सफल होती है तो इससे दुनिया के सब लोगो का भला क्या होगा।

मिसेज राय बोली "फिर भी जिस रोज मेरे पति ने शपथ ली, वह दिन मै नही भूल सकती। हाथ उठाकर सविधान के प्रति विश्वास प्रकट करना पडता है। उनका हाथ जैसे उठ ही नही रहा था। जैसे दाहिने हाथ को लकुग्रा मार गया था, जैसे विद्रोह की घोपणा कर दी हो। किसी और के लक्ष्य न करने पर भी मुझे समझने मे देर नही लगी, हाथ उठाने मे दो-एक सेकेड लग गए।"

उस रात प्रख्यात वैज्ञानिक वेणीमाधव राय एक छोटे बच्चे की तरह रो पड़े थे। पत्नी की सात्वना उन्हे शात नही कर पायी। वे कह रहे थे "आईलीन, आज से मै भारतीय नही हूँ।" आईलीन ने कहा "क्यों, आप भारतीय क्यों नहीं है!" आँसू पोछते हुए वेणीमाधव ने कहा "आईलीन तुम मुझे माफ करना। तुम सोचती होगी कि मै कितना अकृतज्ञ हूँ। यह देश मुझे आश्रय न देता, सुयोग न देता तो आज के इस वेणीमाधव की सृष्टि नही होती। यह ऋण मैं कभी भी अदा नही कर सकता, मै जानता हूँ। मैं जानता हूँ, भारत ने मुझे कुछ भी नही दिया। मेरी माँ कितनी तकलीफ उठाकर किस तरह मरी, वह तुम्हे मालूम ही है आईलीन। लेकिन फिर भी मै अपनी माँ को भारत से अलग करके नही देख पाता। जानती हो, मेरी माँ मुझे कितना कुछ देना चाहती थी लेकिन बेचारी पैसे कहाँ पाती?"

आईलीन ने मुझसे कहा "पता नही तुम यकीन करोगे या नही, उसी रात को मेरे पति ने मुझसे कहा था, वायदा करो कि कम-से-कम तुम मुझे गलत नही समझोगी। कम-से-कम तुम्हे इस बात का खयाल रहेगा कि मै भारत को कितना चाहता रहा हूँ। मैंने सिर्फ वायदा ही नहीं किया खुद भी प्रतिज्ञा कर डाली कि उनके साथ मै भी भारत से प्यार करूँगी।"

तभी से वेणीमाधव जैसे एक और ही आदमी हो गए। आज भी कभी कहते है, "आखिर मैने अपना देश क्यों छोड़ा ? रुपए के लिए ? अधिक सुख-सुविधाओ के लिए ? या इस पहाडी पर बगला बनवाने के लिए।"

सब बातें सुनकर इडियन लोग पिघलने लगेंगे। वेणीमाधव राय के बारे मे ऊँची धारणा बना लेंगे। वाकई बेचारे ने बडी मुसीबते उठायी है। माँ का इलाज नही करवाया। परिस्थितिवश अपनी नागरिकता भी बदलनी पडी। भारत के पचास करोड लोग नागरिकता लिए खूब देशोद्धार कर रहे है। महिलाये सोचेगी, आदमी भला है, बहू भी अच्छी मिली है। लेकिन मेरे दिमाग मे यह सब कुछ भी नही आ रहा था। मेरा दिल अंदर से बिल्कुल रेगिस्तान है, मै आसानी से नहीं पसीजता। ये सब किसेस इसीलिए सुनने पडते है क्योकि मुझे अपनी एक साल की फेलोशिप को एक और साल के लिए बढाना होगा, यह सब छोडकर राजवल्लभ साहा सैकेड बाई लेन लौटने की ज़रा भी इच्छा नही है। इसके अलावा रजा-वती से परिचय होने का लालच भी है। आईलीन ने भी अपनी फ़िगर सम्हालकर रखी है। वेणीमाधव देखने में भोंदू-जैसे होने पर भी उन्होंने बीवी अच्छी ही पसंद की है। भावुक और सीधे-सादे लोग इन मामलो मे काफ़ी उस्ताद होते है।

मैने प्रोफ़ेसर राय के घर छोले तैयार किए। मिसेज राय ने मेरा हाथ बँटाया। और कुमार ने भी काफ़ी दिलचस्पी ली। ज़रा देर बाद ही रंजावती भी आयी। रंजा को देखकर तो जैसे मेरा सर चकराने लगा। कार्ल कहा करता था, बिना मिश्रण के सौन्दर्य खिलता नही, बुद्धि और शक्ति का विकास भी नही होता। जिस देश में जितना मिक्सड् ब्लड होगा वहाँ सौन्दर्य भी उतना ही ज्यादा होगा। हाँ तो वेणीमाधव की रंजा के मामले में यह नियम पूरी तरह लागू होता है। हम बगालियो की तरह रंजा काफ़ी लम्बी थी। सुनहले बाल माँ से विरासत में मिले है, लेकिन दोनों आँखें एक दम 'मेड इन इंडिया'। उसके चेहरे, बदन और हाव-भाव

मे अमरीकी भाव ही ज्यादा था। बंगला ज़रा भी नही जानती। अपने कॉलेज और डासिंग पार्टियों के अलावा उसे किसी चीज़ से मतलब नही है।

रंजा ने कहा "आप ही मिस्टर चटर्जी है। डैडी तो कलकत्ते के किसी को देखते ही पागल हो जाते है। हमारी एथ्रॉपॉलॉजी मे कहते है अपना कलचर छोडकर किसी दूसरे अधिक शक्तिशाली कल्चर मे आकर मिलने पर ऐसा होता है।"

रजा ने पूछा "सुना है इंडिया में औरतें सारे दिन रसोईघर मे जुटी रहती है।"

मैंने कहा "बात झूठ नहीं है।"

रंजा की माँ ने तभी कहा "इस वक़्त उसे डिस्टर्ब मत करो, कुकिंग मे कॉन्सेन्ट्रेशन की ज़रूरत होती है। इडिया मे तो कुकिग भी देवा-राधना का एक अग है।"

मेरे छोले तैयार होते-होते वेणीमाधव भी आ गए। हँसते-हँसते कहने लगे "तुम्हारे इन छोलों की बदौलत आज एक छात्र को डॉक्टरेट मिल गयी। आज डॉक्टरेट की परीक्षा थी। आखिरी केन्डीडेट से कुछ और भी सवाल करने चाहिएँ थे, लेकिन छोलों की बात सोचकर उसे ऐसे ही छोड दिया। ज्यादा सवाल करने पर पता नही क्या नतीजा होता।"

चाय के साथ छोले खाते-खाते वेणीमाधव ने लड़के की राय जाननी चाही। लडके ने कहा "ग्रेट। हालाँकि झाल जरा तेज है।"

वेणीमाधव ने कहा "हमारे एक प्रोफेसर का कहना है, झाल सहने का बूता लिए बगैर इंडिया पर शोध नही हो सकती। क्योकि ज़रा इंटीरियर में जाते ही मिर्चो का राज्य शुरू हो जाता है।"

कुमार ने कहा "अच्छा इस छोले शब्द की उत्पत्ति कैसे हुई? यह संस्कृत शब्द है?"

लग रहा है यह लडका मुझे मुश्किल में डालेगा। भारत के बारे में इसकी दिलचस्पी का कोई अंत नही है। वेणीमाधव ने मुझसे कहा "मै

सालो से बाहर ही बाहर हूँ। मेरी बडी इच्छा है कि तुम सप्ताह में दो तीन रोज आकर इसके साथ बातचीत करो, भारत के बारे मे इसे वतलाओ। तुम्हारा कुछ वक्त तो बर्बाद होगा, कुछ डॉलर देकर मैं उसे पूरा कर दूँगा। सोच लेना, प्राईवेट ट्यूशन कर रहे हो। एक जमाने मे मैने भी ट्यूशन किए है, माँ जिन दिनों बीमार थी इन ट्यूशनो का पैसा ही हम लोगो का एकमात्र भरोसा था।"

मैंने देखा बुरा क्या है? अगर कुछ डॉलर और मिल जाये तो शनि-रविवार की डेट्स और भी मजेदार हो सकती है। डेटिंग मे सब कुछ अच्छा है, सिर्फ इस खर्च को छोडकर। अमेरिकन लडकियाँ मौका लगते ही मोटी रकम निकलवा देती है। क्रिश्चियन इस बारे मे जरा समझदार थी। लेकिन रोज रसगुल्ला खाने से भी जी भर जाता है। अकेली क्रिश्चिन से दिल नही भरता! मैंने और भी कितनी ही लडकियों मे मेल-जोल बढाया। लडकियाँ मुझे पसद करती है। क्योंकि मैं बेशर्मी के साथ उन्हे फुसला लेता हूँ। मेरे दिल मे जो भी रहे, ऊपर से मै लडकियों की ऐसी बडाई करता हूँ कि लडकियाँ पिघल जाती है। यह गुण मुझे परमात्मा की कृपा से ही प्राप्त है, नही तो विद्यासागरजी की पुस्तक से पंचेन्द्रियो के बारे मे जो बात सीखी थी वह इन लोगो की सेवा के लिए बेकार है।

साथ ही मै समाज सेवा कर रहा हूँ। लेकिन त्याग मुझसे नही होता। मल-मूत्र त्यागने के अलावा मै और कुछ भी स्वतः प्रेरित होकर नही कर पाता। मै ऐसी समाज-सेवा करता हूँ जिसमे दूसरे के लाभ के साथ अपना भी लाभ हो। वह जो कोने की सीट पर छोकरा बैठा है, उसका नाम सौमित्र सेन है—बाप ने कितनी मुश्किलों से म्युनिस्पेलिटी में नौकरी करके तुम्हे पढाया, वडानगर से न्युटन भेजा, और तू है कि 'ऐंने' के साथ बँध गया।

मुझे टुलटुल से पता चला। टुलटुल को हर बात का पता रहता है। उसने कहा "सौमित्र के घर की हालत के बारे मे मुझे मालूम है।

कई सारे तो भाई है। यह भाई अगर किसी लायक हो जाए तो दूसरे भाइयो का कोई हिल्ला बैठे। ऍने के चक्कर मे पड़ने पर सौमित्र को इस सफ़ेद हथिनी का पालन करना पडेगा। घर के लिए वह किसी काम का नही रहेगा।"

मैने पूछा "तुम्हे मालूम कैसे हुआ ?"

टुलटुल बोली "लडकियाँ बहुत कुछ जान लेती है। लड़कियो के होस्टेल में, वह चाहे कलकत्ता हो या न्युटन ही हो, लडकियाँ किस तरह दिल खोलकर पर चर्चा करती है वह आप कहाँ जानते हैं। मुझे इम्तहान में पास होने की फ़िक्र न होती तो एक अच्छा ख़ासा मोटा-सा नॉवेल लिख डालती।"

टुलटुल लडकी पर मुझे एक बात का पूरा भरोसा है कि उसकी बुद्धि काफ़ी तेज है। नही तो सैकेड क्लास मैट्रिक और लो-सैकेड क्लास एम. एस-सी. पास कर यह किस तरह न्युटन आ सकती थी ? यह जो निमाई मुकर्जी की उसपर कृपा है। सुना है यह भी कि टुलटुल की कॉमनसेंस की ही करामात है। इस कॉमनसेंस नाम की चीज को भगवान जरा सहज लक्ष्य बनाते और सारी लडकियो के बीच थोडा-थोड़ा बॉट देते तो इस दुनिया का इतिहास कुछ और ही होता।

यह बात किसी अमेरिकन के आगे न कह बैठिएगा, वे लोग नही मानेगे। उनके लिए चारा भी नही है। अमेरिका मे जितना पैसा है उसका अधिकाश हिस्सा महिलाओं के पास है, सो सारे पुरुषो के नकेल पड़ी है।

मैंने टुलटुल से कहा "तुम मुझे ऍने से मिला दो फिर सौमित्र का उद्धार करने का जिम्मा मेरा है।"

ऍने को देखते ही मेरी सिर चकराने जैसी हालत हो गयी। सौमित्र के हाथ चीज़ ख़राब नही लगी थी। मै जिस रोज़ उसे पहली बार डेट के लिए ले गया तो मुझे 'बोधोदय' की याद हो आयी, जहाँ पिताजी ने लाल पेन्सिल से निशान लगा दिया था और जिदगीभर अच्छी तरह याद रखने के लिए कहा था—'हम अपने चारो ओर जिन सब वस्तुओं को देखते

है, ये सारी वस्तुएँ किसी न किसी मनुष्य की होती है। जो वस्तु जिसकी है, वह व्यक्ति परिश्रम करके उसे प्राप्त कर लेता है।'

सौमित्र ने परिश्रम करके जिस वस्तु को प्राप्त किया है उसमे मुझे हिस्सा बँटाना पड रहा है। मैने हिस्सा बँटा लिया यह बात मै साफ-साफ ही कह रहा हूँ। लेकिन किस तरह, यह कृपया न पूछे ! कहा था न कि हर लडकी के एक स्विच होता है, वह कहाँ पर है इस बात का पता लगते ही काम फ़तह है। मैने सिर्फ प्रेम का नाटक ही नही किया, सौमित्र के खिलाफ़ तरह-तरह से ऐँने के कान भी भरे, और करता भी क्या, आप ही कहे। बडानगर के एक परिवार को तो डूबते से बचाया, बदले मे ऐँने जैसी खूबसूरत और स्वस्थ बालिका के बारे मे जानकारी हासिल की।

टूलटुल सब समझ रही थी। कहने लगी "अनिर्वाणदा, आपकी एक्टिग खूब अच्छी हो रही है। ऐँने ने इसबार सौमित्र की डेट नही ली। आपकी हिम्मत की भी बलिहारी है। हालाँकि इतना नीरस विषय लेकर काम कर रहे है 'कम्युनल रॉयट'। आपको तो अपना विषय चुनना था 'रॉयट ऑफ लव'"।

पहले तो सोचा वेणीमाधव राय के घर पैसे नहीं लूंगा। डॉलर लेने को जी तो बहुत कर रहा था, लेकिन हया-शर्म भी आखिर कोई चीज है ! जो भी हो डॉलर के इस देश में उन्ही की बदौलत तो आना हुआ है। लेकिन फिर मैने देखा कि इस अजीब देश में बिना डॉलर के पत्ता भी नही हिलता। बिना डॉलर लिए लड़का बाप के कमरे मे रोगन नही करेगा। लड़का अगर हेयर-कटिग सैलून का मालिक है तो बिना डॉलर के बाप के बाल नही काटेगा। एक घटे के लिए बच्चे की देखभाल करने के लिए बहन को डॉलर देने पड़ेगे। चर्च तक मे पैसे का खेल है—लिफ़ाफ़े पर किसने कितना दिया का हिसाब हो रहा है। मालिको ने डॉलर के ऊपर बड़े-बड़े हर्फों में लिख रखा है "इन गॉड वी ट्रस्ट—" हम भगवान में यक़ीन करते है। यानी सक्षेप मे इस विशाल देश मे डॉलर ही डॉलर

है, जितने समेटते बने उतने समेट लो। और रोजगार के मामले म 'फेको कौड़ी चुपडो तेल' तुम कौन पराए हो ?

मैंने एक युक्ति निकाली। वेणीमाधव से कहा, "आपसे पैसे कैसे ले सकता हूँ। आप अपने ही मौहल्ले के है, पिताजी भी आपको कितना चाहते थे।"

खुशी से गद्गद् होकर वेणीमाधव ने साथ ही साथ आईलीन को बुला भेजा। "आईलीन, सुनो इसकी बातें। पैसे लेना नही चाहता। भारत की यही विशेपता है। वहाँ पैसा वडी गदी चीज़ है। रामकृष्ण परमहसदेव ने कहा है, "पैसा मिट्टी, मिट्टी पैसा।"

आईलीन भी गर्व अनुभव कर रही थी, इधर मै इस बीच नर्वस हो गया। ये लोग कही वाकई मे राजी न हो जायें।

इसके बाद की आईलीन की वात सुनकर जैसे मुझे पसीने-पसीने करके बुखार उतरा।

"तुम्हारे प्रस्ताव को हम लोग काफ़ी ऐप्रिशिएट करते है। लेकिन यह परदेश है। यहाँ एक घंटे के लिए रेस्टोरेंट म काम करने के लिए या बेबी-सिटिग करने के लिए तुम्हे पैसे मिलेगे। इसीलिए तुम्हें डॉलर तो लेने ही पड़ेंगे।"

सीधे-सीधे लेने के संकोच से भी आईलीन ने बचा लिया। हर सप्ताह एक लिफाफ़े मे डालकर आईलीन मुझे डॉलर दे देती। और वह डॉलरों का लिफाफा में वीक एण्ड मे ख़ाली कर देता। वह जो क्रिश्चियन नाम की लडकी है, उसके साथ मैने कैसी रासलीला की उसकी रिपोर्ट कार्ल और अपनी पड़ोसन ओल्गा को देता रहा हूँ।

ओल्गा मुस्कराते हुए कहती, "ऑल दि बेस्ट।"

और कार्ल बड़े अनुभवी डॉक्टर के लहजे मे कहता, "तुम पूरे गधे हो। अरे, फ़ॉक्सवैगन मे बैठकर डेटिंग का पहला दौर चलता है। तुम हो कि तीसरे दौर मे आकर भी उसी बेबी कार को लिए बैठे हो।"

मैं अभी भी कई मानो में पूरा गधा था, उसी रोज़ समझ मे आया।

कार्ल ने कहा, "अरे मुझे फीस देकर 'टेकनीकल नो हाऊ' हासिल करो। अच्छा बतलाओ इस देश मे गाड़ियाँ इतनी बड़ी क्यों होती है ? पी-एच० डी० के लिए मेरा विषय होगा, 'दि रोल ऑफ़ सेक्स इन ऑटोमोबाईल डिजाइनिग'। जिस गाडी के पीछे सोया न जा सके, अमरीकी युवक-युवतियो के लिए उसकी कोई कीमत नही है।"

मैने कहा, "सुहागरात के पलग जैसी गाड़ी खरीदने मे कुछ रोज़ और लगेगे। अभी इतने पैसे कहाँ है ?"

कार्ल ने कहा, "रुपया कमाकर भोग करना उन्नीसवी सदी का तारीका है। अब यह तरीका बिलकुल सड़ चुका है। अब तो पहले भोग कर लो फिर रुपये चुकाओ, और अगर इसकी भी हिम्मत नही तो गाडी किराए पर ले लो। अखबारों मे और टेलीविजन पर किराए पर गाडियाँ देनेवाली कम्पनियाँ इतने विज्ञापन क्यो देती है ? न्यूटन मे गाड़ी लेकर न्यूटन मे ही वापस कर सकते हो, नही तो जहाँ जी चाहे वहाँ भी वापस दे सकते हो।"

चुनाचे अगली बार मै एक नयी गाडी किराए पर लेकर ही क्रिश्चियन को लेने पहुँचा। क्रिश्चियन सब कुछ समझकर भी नासमझ बनी रही। लडकियो का यह दिखावा हर युवक को बर्दाश्त करना पड़ता है।

आज यह, "टाउस" गाड़ी किसलिए लाया हूँ यह जानते हुए भी उसने पूछा, "यह नयी गाड़ी कब ख़रीदी ?"

"ख़रीदी नही है, तुम्हारे लिए किराए पर लाया हूँ।"

"क्यो ?" क्रिश्चियन ने सवाल किया।

अपनी हँसी को दबाकर मैंने जवाब दिया, "हे सुन्दरी, तुम्हारे दोनो पाँव कितने लम्बे-लम्बे है। छोटी गाड़ी में तुम्हे तकलीफ़ जो होती है।"

उसके बाद हम जंगल के पास उसे छोटे से रेस्टोरैट मे जा पहुँचे। वहाँ डिनर और डान्स का दौर पूरा करने के बाद निकल पड़े। आज क्रिश्चियन को क़रीब-क़रीब ज़बर्दस्ती कई पेग ह्विस्की पिला दी थी।

ह्विस्की की मादकता उसके पूरे शरीर में छलक रही थी। उसका बदन जैसे डगमगा रहा है। और एक आदिम युगीन पशु मेरे मन के गहन वन मे से बाहर आकर उसकी ओर भूखी नजरो से ताकने लगा है। क्रिश्चियन सब जान-बूझकर भी पछतावा नही कर रही है। अपनी ऊपर खुली आँखों से मेरी ओर देखकर मीठी झिडकी लगाई, "यू नॉटी इडियन।"

"यह इडियन विडियन क्यों? दुष्ट पुरुष कहो न क्रिश्चियन।"

"क्यो तुम क्या इंडियन बने रहना नही चाहते?"

स्टियरिंग पर हाथ रखे मेरे अन्दर का कवि भी दौड लगा रहा है। "क्रिश्चियन, तुमने तो फिलॉसफी पढी है। मेरे मन मे इस बात से निखिल मानव अनुभूति सक्रिय हो गयी है।"

सिगरेट का कश लेकर उसने कहा, "इसीलिए तो तुम मुझे पसंद हो। पाशविक क्षणो मे भी तुम पूरी तरह ऍनिमल जैसा व्यवहार नही करते। तुम्हारे अन्दर एक पोएट काम कर रहा है।"

क्रिश्चियन के चुम्बन-धन्यवाद को नतमस्तक होकर ग्रहण किया था। ये लह्मे मुझे वडे अच्छे लगते है। मै पूरी तरह ऐनजॉय करता हूँ, और बारबार उसकी उम्मीद करता हूं।

इसके बाद किराए की गाडी को जंगल के अन्दर घुसा दिया। घना जंगल लेकिन निर्जन नही। आसपास और भी दस पाँच गाडियाँ थी, हालाँकि ड्राइवर की सीट पर कोई भी दिखलाई नही दे रहा था। लेकिन हमने आपस मे एक-दूसरे को छोड और किसी को डिस्टर्ब नही किया।

यूनिवर्सिटी मे अपने ऑफ़िस में बैठे-बैठे चिता की है। क्रिश्चियन मुझे जो इतना बढ़ावा दे रही है जरूर विवाह की आशा मे सोचती होगी

कि मेरे दिल को बाँध लिया है। करीब आधा दर्जन दूसरी लडकियाँ भी ऐसा ही सोच रही है। मैंने उन्हे भोगा है, लेकिन इसीलिए उनमें से किसी से भी बँधा नही हूँ। दिल देने पर अँगूठी भी बदल दी जाए यह बेकार की जिद है ?

वड़े गुरु, पडित और समाज के अगुआ लोग सदियो से कहते आए है कि अपनी इच्छाओं का दमन करो। लेकिन किस तरह इस पापी इच्छा को जजीर से बाँधा जाय यह बात कोई भी नही बतलाता। यह तो मै भी समझता हूँ कि औरत, धन और भोग के मामले में लोभ न करने से ही शाति मिल सकती है। लेकिन मेरी कोई भी इन्द्रिय मेरी बात सुने तब न ! और बलिहारी है अपने इन मॉरेल गार्जियनों की, कोई 'तो हाऊ' नही देगे खाली लैक्चर झाडे जायेगे—अपने आपको सयत रखो, अपने दिल की आग से अपने को शुद्ध करो।

अरे भाई, इतना आसान नही है, और क्या सिर्फ़ नारी-मास की भूखी तरह-तरह की इच्छाये ही मन के अन्दर कुडली जमाए बैठी है !

मेरा जी बहुत कुछ करने को चाहता है। मैं चाहता हूँ। मेरे नाम के साथ देश विदेश की बहुत-सी डिग्रियाँ लिखी जाये। मैं चाहता हूँ, वेणीमाधव राय की तरह मै भी हावर्ड या कैलिफार्निया में प्रोफेसर हो जाऊँ। मुझे अपनी अन्तर्दृष्टि से देखना अच्छा लगता है कि मोटी-मोटी किताबों की एक लम्बी-सी कतार है और हर एक किताब में लेखक की जगह लिखा है डॉ० अनिर्वाण चटर्जी। मैं चाहता हूँ कि ये सारी किताबे हजारो की संख्या में बिके, दुनिया के किसी विश्वविद्यालय मे अगर एक रोज़ के लिए रुक जाऊँ तो वे लोग अपने आपको धन्य माने। मै चाहता हूँ कि यू० एन० ओ० मुझसे विभिन्न विषयो पर परामर्श ले। मेरे विश्वविद्यालय के नाम यू० एन० ओ० के सेक्रेटरी जनरल खुद पत्र लिखे—कि इन्हे छः महीने की छुट्टी दे दी जाए, एशिया में साम्प्रदायिक दंगो की रोकथाम के लिए राष्ट्रसंघ को एडवाइज देने के लिए हमें डॉ० चटर्जी की सेवाओं की आवश्यकता है। मै चाहता हूँ कि भारत मे मेरा

नाम लेते ही लोग श्रद्धा से सिर झुकाले। लेकिन मैं उनके लिए कुछ भी नही कर पाऊँगा। मै किसी के लिए भी, चाहे वह विश्वविद्यालय हो चाहे राष्ट्रसघ हो, कुछ भी नही कर पाऊँगा।

यही जो मेरी फैलोशिप का काम है, धर्म, भाषा, जाति और वर्ण के आधार पर दगा, उसका कोई काम आगे नही बढ रहा है। मेरे प्रोफ़ेसर डॉ० स्मिथ की बडी इच्छा है। बेनहिल फ़ाउन्डेशन जो इतने डॉलर ढाल रही है, इसकी वजह उन लोगो का विश्वास है कि साम्प्रदायकि दंगे और हगामो के बारे में काम होना चाहिए। जैसे अनिर्वाण चटर्जी की विस्तृत रिपोर्ट प्रकाशित होते ही दुनिया भर मे सारे रॉयट बद हो जायेगे। जो लोग रॉयट करेगे, जो लोग दूसरे के सीने पर छुरी रखेगे, गोली चलायेगे, दुकानो मे आग लगायेगे, असहाय नारी और शिशुओ पर अत्याचार करेगे, वे लोग निर्वाण चटर्जी का प्रबन्ध पढकर सन्यासी हो जायेगे। वैसे अपनी एप्लिकेशन मे मैने यही सब लिखा था कि इस काम से मानव जाति का बडा उपकार होगा, सिर्फ अर्थाभाव की वजह से इस काम मे हाथ लगाना सभव नही हो पा रहा है।

इस कथन मे अतिशयोक्ति हो सकती है। लेकिन ऐसा हुए बिना पेट्रोल मैगनेट बेनहिल का रुपया नही मिलता। मैने भी तो भाई बेनहिल की हिस्ट्री पढ़ी है। किस तरह यह करोड़ो की रकम कमायी गयी है यह भी जानता हूँ, और तुम्हारे लड़के को जापानी अगर युद्ध के दौरान नही मार डालते तो तुम कभी भी यह खैरात नही करते। क्योंकि तुम्हारी फाउन्डेशन के पास बहुत से डॉलर है, इसलिए दुनिया के सारे मगल का भार तुम्हारे कधों पर आ पडा है। सब साले दुनिया की मगल कामना चाहते है। क्यों साहब, दो-एक छोकरे, जो जिन्दगी का थोड़ा जायका लेना चाहते है, जरा सुखभोग करना चाहते है, उनके लिए कुछ डॉलरो का इंतजाम कर देने से दुनिया रसातल मे चली जाती? आप शायद कहें, सुख कौन नहीं चाहता। ऐसा है तो जाँचकर देख लो कि किसमे

सुख भोगने की आकांक्षा सबसे अधिक है। उसी को फ़ैलोशिप देनी चाहिए।

मुझे एक सुविधा है, परीक्षा नही देनी पडेगी। वेणीमाधव राय ने लिख ही दिया है, 'कलकत्ता विश्वविद्यालय का यह प्रतिभाशाली युवक एम० ए० पास करने के बाद डॉक्टरेट का प्रत्याशी नही है—यह गम्भीर काम करना चाहता है।' परीक्षा बहुत ही बुरी चीज है—किसी भी सभ्य समाज में परीक्षा नाम की चीज नही होनी चाहिए, ऐसा मेरा विश्वास है।

मै इसी उधेडबुन मे फॅसा था कि जिया आ पहुँचा, "क्यो दादा, बडे गहरे सोच मे पडे है?"

दूध-सा सफेद झूठ बोल-मारा, "एक बडे गभीर चेप्टर की योजना बना रहा हूँ।"

जिया बगाली बगाली करके पागल है। "बगाल के रॉयट के बारे मे खूब अच्छी तरह से लिख रहे है न दादा? दुनिया की एक इसी जाति ने अच्छी तरह समझ लिया है कि दगे-फसाद कर-करके इन लोगों ने अपना कितना सर्वनाश कर लिया है।"

मैंने जिया को उकसाया, "बगाली हर बात जरा देर से समझते है। ऐसे वक्त मे जाकर चैतन्य होते है जबकि करने को कुछ भी नही रह जाता। यही जो इन्द्राणी देवी की इच्छावाली बात, मै नही कहता तो तुम इस बात को तब जाकर समझते जबकि करने को कुछ भी नही रह जाता।"

जिया के कान लाल होने लगे। "दादा इस वक्त सीरियस बात हो रही है। बगाल मेरे लिए सबसे ऊपर है। बगाल मेरी माँ है, बॅगला भाषा मेरी माँ की भाषा है। देख लीजिएगा एक दिन यह बगाल कितना आगे बढ़ता है—दुनिया के लोग फिर एक रोज बंगाल की पूजा करेंगे। आपको, मुझे और हर बंगाली को इसके लिए कोशिश करनी पड़ेगी।"

मैने कहा "युवक, तुम ढाका जाकर बंगालियों के उत्थान की कोशिश

करो। इंडिया के बंगालियो को इसमे मत घसीटो। हम कलकत्ते के लोग मर चुके है। सिर्फ डेथ सर्टिफ़िकेट इश्यू नही हुआ है इसलिए दाहक्रिया नही हो पा रही।"

ज़िया मेरी बात पर नाराज नही होता। उसने कहा "मरा हाथी भी लाख टके का होता है—कैलकेटा इज कैलकेटा। फिर भी आपसे कहे देता हूँ, बंगालियो को जोर-जबर्दस्ती करके दबाने की कोशिश की गयी तो आग भडकेगी। और वह आग होगी विप्लव की आग। आपका इस दगे की किताब से काम नही चलेगा, आपको कुछ और भी लिखना पडेगा।"

मैने कहा "हे जिया साहब, जहाँ तक मेरा खयाल है तुम लोग बचपन मे कलकत्ते रहते थे। कलकत्ते का रॉयट काफी कुछ खोकर अब ढाका जा पहुँचा है।"

"आपने ठीक ही सुना है दादा। लेकिन यह क्यो ? ढाका आकर देखता हूँ निरीह और गरीब हिंदुओ पर हमले हो रहे है। नोआखली मे जो नरककाड हुआ था उसके बारे मे तो जानते ही होगे। बिहार मे फिर उसका बदला लिया गया। नतीजा क्या निकला ? कमजोर के ऊपर अत्याचार हो रहा है। अगर इतने ही वीर हो तो अंग्रेजो को मारकर क्यो नहीं भगा दिया ? तुम लोग जागोगे यही सोचकर तो कितने लोगो ने लाटसाहब पर गोली चलायी, शस्त्रागार लूटे, बम गिराए। लेकिन नीद नहीं टूटनी थी, नही टूटी। वे लोग फाँसी पर लटक गए। करोडो लोगो ने भेडों की तरह इस सरकारी नरहत्या को सहा। बहुत हुआ तो अख़बारो के एडिटोरियल पढकर अपने आँसू पोंछ लिए। लेकिन यही तक ? उसके बाद बीवी के साथ सोने के लिए कमरे के दरवाजे की कुडी चढा ली।"

ज़िया ने कहा, "दादा, आप ऐसी रिपोर्ट लिखिए कि बगाली जाति फिर से जाग उठे। मैं आपको पद्मा की हिल्सा खिलाऊँगा।"

जिया ने और भी कहा "लिंडा नाम की लड़की की याद है आपको? दो-एक बार डेट-वेट पर भी जा चुकी है मेरे साथ। उस रोज बंगालियों

को बदनाम करने लगी । वह और भी दो-एक बंगाली लड़कों से डेट ले चुकी है । कहने लगी "ये लोग समझते है कि अमेरिकन लडकियाँ सस्ती है, डेटिग के बाद ही सोने चली जायेगी ।" मैने कहा "तुम बगाली शब्द निकालकर माफी माँगो । छोकरी राजी नही हुई । मैने साफ़ कह दिया, तब ठीक है, हम लोगो की डेट यही खत्म । मै जा रहा हूँ ।" छोकरी अब बंगाली मुसलमान जिया-उर-रहमान को सीख देने के लिए इडियन सिख मिस्टर कपूर के साथ घूमती है । कहती है, सिख हो जाएगी ।

उड़ान भरने के बाद मे कई घंटे गुजर चुके थे । हम लोग उड रहे है इस बात का भी खयाल नही रहा । अचानक एअर हॉस्टेस की आवाज सुनाई दी, हमसे सिक्योरिटी बैल्ट बाँध लेने का अनुरोध किया जा रहा है, हम लोग कुछ ही मिनटो मे टोकियो एअरपोर्ट पहुँचने वाले है ।

बैल्ट बाँध लेने के बाद मैं बाहर की ओर ताक रहा था । महासागर के सीने पर क्रमश एक टापू शक्ल ले रहा है । प्लेन जैसे-जैसे नीचे उतर रहा है, मकान नजर आ रहे है । प्लेन के अन्दर उचककर फर्स्ट क्लास की ओर ताका । यही एक मौका होता है जब फर्स्ट क्लास के देवी-देवताओं को देखा जा सकता है—क्योंकि प्लेन उतरते वक्त पर्दा सरका लिया जता है ।

एक बडी चील की तरह दो बार एअरपोर्ट के ऊपर चक्कर काटकर प्लेन तेजी से रनवे की ओर बढा और फिर जमीन स्पर्श करते वक्त हल्का सा झटका देकर जतला दिया कि जमीन और प्लेन के बीच आठ हवा भरे रबर के पहिए भी है ।

यहाँ कई लोगो को चढ़ना-उतरना था । हम ट्रान्जिट लाउंज मे बैठकर आधे-घंटे तक एअरलाइन्स के पैसो से कॉफी पान करेंगे । लाउज मे एक ड्यूटी-फ्री शॉप थी जहाँ से हम लोग जापानी माल ख़रीद सकते

है। सुमित्र उस ओर भागा। उसे जापानी मोतियों की माला खरीदनी थी।

तभी टुलटुल दिखलायी दी, मैने पूछा "कहाँ जा रही हो ?"

उसने कहा सुमित्र पीछे पड गया कि उसकी भावी बीवी के लिए एक माला पसद कर दूं। आपको पता है अनिर्वाणदा, हजरत हर वक्त भावी बीवी का फ़ोटो मनीबैग मे लिए फिरते है। इसी महीने की पन्द्रहवी तारीख को शादी है। अभी लडकी को देखा तक नही है। उसके पिताजी ने ही सब कुछ ठीक कर दिया है।

मै भी एक ही लट्ठ ठहरा। सोचा एक बार इन हजरत को एंनी की याद दिला दूं। छोकरा मुझे ज्यादा पसद नही करता। फौरन कतरा जाता है। लेकिन बच्चू मुझसे दूर रहना ही तुम्हारे हक मे अच्छा रहेगा। अभी भी तुम्हारी जेब की उस लड़की को—जो तुम्हारी बीवी होने जा रही है—तुम्हारे हाथ से निकलवा सकता हूँ। सिर्फ़ एक टेलीफोन की बात है। तुम्हारे बारे मे एंनी की राय मेरे सूटकेस मे है। बंगाल की सुन्दर और पढी-लिखी लड़कियाँ आज सस्ती नही रह गयी है—लड़कियों के बाप इस बात को जान चुके है।

टुलटुल से पूछने जा रहा था, "तुम्हारे क्या हाल है ?"

टुलटुल लडकी काफ़ी समझदार है। कितनी जल्दी से चटपट डॉक्टरेट कर ली। मै कहने जा रहा था, "तुम्हारे कोई प्राणनाथ बहुबाजार मे है, यह बात इन्द्राणी ने बतलायी थी। वो दमदम आने वाले होगे तुम्हें रिसीव करने।"

लेकिन पूछने से पहले ही निमाई मुकर्जी आ पहुँचे। निमाई मुकर्जी टुलटुल को अपनी मिल्कियत मानते है। टुलटुल भी चालाक ठहरी। फौरन घूमकर खिसक ली। उसने कहा "निमाईदा आप अनिर्वाणदा से बात करिए। मै सुमित्र के लिए मोतियों की माला पसन्द करके अभी आयी।

निमाई मुकर्जी का दिल टूट गया। उन्होंने कहा "तुम अपने लिए

कुछ नही खरीदोगी ?"

"न बाबा। अमेरिका मे रहकर बिलकुल कंजूस हो गयी हूँ। माला खरीदकर डॉलर खराब करने है।"

निमाई मुकर्जी का दिल और भी छटपटाने लगा। मै सामने नही होता तो जरूर ही कहते, "टुलटुल, मेरी इच्छा है कि तुम्हे एक मोतियो की माला भेंट करूँ।"

बैक मे निमाई मुकर्जी के नाम इतने डॉलर है कि माला खरीदने से उन्हे कोई फर्क पड़नेवाला नही था। लेकिन बेचारे मुझसे जरा सहमते है। वे मुझे एक लापरवाह लफगे और गुडे के रूप मे जानते है।

निमाई मुकर्जी को एक बार एक चिट्ठी मिली थी। किसीके हस्ताक्षर नही थे। उसमे लिखा था "हे अध्यापक तुम बुढ़ापे के द्वार पर खडे अपनी लडकी की हमउम्र एक किशोरी के प्रति क्यो आकृष्ट हो गए हो! तुमने उसे अपने खर्चे पर यहाँ बुलाया है, उसे डॉक्टरेट दिलवाने मे भी मदद की, यह सब सच है। लेकिन इसीलिए कोई भी लड़की तुम्हारे जैसे बूढ़े खूसट के गले मे माला डालने को राजी नही हो सकती। टुलटुल के प्रेम की माला पहनने के लिए जिन गुणो की आवश्यकता होती है, तुममें नही है। टुलटुल का लोभ छोडकर स्वदेश पधारो और किसी अधेडा से विवाह करके आ जाओ।"

इद्राणी ने ही बतलाया था, जानते है फौरन बात फैली। निमाई मुकर्जी को गुमनाम खत किसने लिखा? निमाई मुकर्जी ने कहा है, इतना डर्टी डस्टबिन जैसा मन किसका है?

मेरा कसूर सिर्फ इतना भर था कि मैने चुटकी ले ली, "डस्टबिन तो खुद निमाई मुकर्जी के मन मे है।" ख़बर घूमती-फिरती निमाई मुकर्जी के पास जा पहुँची। और उनकी धारणा हो गयी कि चिट्ठी का लिखनेवाला मै ही हूँ। लेकिन निमाई मुकर्जी को शायद मालूम नहीं है कि मै गुमनाम खत लिखनेवाला कायर नही हूँ। ज़रूरत होने पर सीधे फ़ोन उठाकर ये सारी बातें झाड़ सकता था।

मुझे जो चीज़ बिलकुल अच्छी नही लगती यह है निमाई मुकर्जी का यह सज्जनता वाला मुखौटा। मानों बगाल के युवक-युवतियो के भले के लिये बेचारे कितने परेशान हैं, अपने देश की सस्कृति का विदेश मे प्रचार करने के लिए कितने आग्रहशील है। इसीलिए तो पिछली बार जब इडिया आने पर टुलटुल को देखा, एम० एस-सी० पास करके लडकी को आगे पढने का मौका नही मिल रहा है, तो उन्होने खुद ही न्यूटन मे सारा इन्तजाम कर दिया। अरे साहब, टुलटुल अगर देखने में खराब होती, या वह तुम्हें पसन्द न आती तो देखता कि तुम कैसे उसके लिए इतना कुछ करते। तुम्हारे साथ मुश्किल यह हुई है कि मेमों को देख-देखकर तुम्हारी रुचि बदल गयी है। तुम पेड़ का भी खाना चाहते हो और उसके नीचे का भी समेटना चाहते हो। तुम देखने मे मेम जैसी बगाली लडकी चाहते हो लेकिन उम्र मे वह एकदम बच्ची हो। टुलटुल को पटा लेने पर इस बुढापे मे तुम्हारे सुखो की कोई परिधि नही रह जायेगी—जैसी शिक्षा, वैसा ही स्वास्थ्य, सौदर्य, सरल स्वभाव और तिस पर इतनी कच्ची उम्र। लेकिन यह क्यो भूल जा रहे हो कि आज बगाल मे भी दूल्हेजुओ का बाजार भाव बहुत ही कम हो गया है, रुपया खर्च करने से ही नारीरत्न की उपलब्धि नही होती।

टुलटुल के गार्जियन के रूप मे तुमने उसे लडकों से ज्यादा मेलजोल बढाने नही दिया, उसके घूमने-फिरने पर भी नज़र रखते रहे। अमेरिका मे बैठे तुम श्याम बाज़ार की रईसी करना चाहते हो। हमे, इसमें भी कोई आपत्ति नही थी। लेकिन जो रक्षक वही भक्षक बन जायगा, मुझे बस यही बात पसद नही है। असल मे टुलटुल तुम्हारे प्रति कृतज्ञ है, लेकिन वह तुम्हे पसंद नही करती। यह बात तुम्हारी समझ मे नही आयी। फिर भी तुमने पीछा नही छोडा। इसी प्लेन से वापस जा रहे हो। क्योकि तुम्हारे मे साफ़-साफ़ कहने की हिम्मत नहीं है इसलिए कलकत्ते पहुँचकर किसी को बिचौली बनना पड़ेगा।

लेकिन अफसोस कि ऐसा नहीं होना है—टुलटुल यहाँ आने के पहले

ही एक लडके से पक्की बात कर आयी है। वह डॉक्टर है और ईडन हॉस्पिटल मे लेबर-ड्यूटी करता है। उसके पास पैसे नही है, तुम्हारे से उसकी तनख्वाह भी कम है लेकिन उसकी उम्र है। निमाई मुकर्जी, अब मैं तुम्हे कैसे समझाऊँ कि पैसे देकर उम्र नही खरीदी जा सकती।

हालाँकि तुमने गुमनाम खत पाने पर मुझपर शक किया। मुझसे सीधे-सीधे पूछते तो मै कहता "दादा, मैने नही लिखा।" लेकिन तुममे वह हिम्मत नही है। तुम अन्दर ही अन्दर सुलगने लगे। मै जानता हूँ कि आज मुझे जो अपनी मर्जी के खिलाफ वापस जाना पड रहा है इसके पीछे भी तुम्हारी कृपा है।

मै तो पूरी तरह निश्चित ही था कि मुझे एक साल का एक्सटेंशन और मिल जाएगा। या नही तो पढाने का ही कोई काम जुट सकता है—क्योंकि दुनिया मे जिन कुछ मनीषियों ने दंगो पर गवेषणा की है, मै उनमे से एक होने जा रहा हूँ। मै जरा मेहनत करके अगर अपना प्रबन्ध पूरा कर लेता तो 'मैगेसस पुरस्कार' के लिए कोशिश करता। देखिए न, मै कितना समझदार हूँ। और कोई होता तो नोबुल पुरस्कार की आशा करता। यह सब सोच रहा था और अपना काम छोडकर मै दूसरे सारे काम बखूबी किए जा रहा था कि बम फटा। मेरे प्रोफेसर, काम के पीछे पागल उन डाक्टर स्मिथ ने मुझे बुला भेजा।

डॉक्टर स्मिथ ने कहा "चटर्जी, तुम काफी बुद्धिमान और दूरदर्शी हो। तुम्हें देखे बगैर ही, किसी की बात का यकीन कर हम लोगों ने तुम्हे लिया था, यह बात शायद तुम्हे याद होगी। हम लोग और एक साल के लिए तुम्हारी टर्म बढ़ाने के बारे मे विचार कर रहे थे। लेकिन उसी वक्त एक खबर पाकर हम लोगों को काफी निराशा हुई। तुम्हारी एप्लिकेशन में लिखा है कि तुम एम० ए० पास हो, तुमने सर्टिफिकेट की कॉपी भी भेजी थी। लेकिन किसी ने खबर दी है कि यह बात सही नही है। गजट मे भी उस साल के उत्तीर्ण छात्रो की सूची मे तुम्हारा नाम नहीं मिल रहा है। यह ख़बर भी आई है कि तुम्हारा सर्टिफ़िकेट जाली था। ऐसे मामलों

मे नॉरमली जेल होती है। तुम्हें पुलिस के हाथों मे दिया जा सा सकता है। लेकिन इससे डा० राय की पोजीशन ऑक्वर्ड हो जाएगी। डॉ० राय के पास भी गया था। पहले तो यक़ीन ही नही कर रहे थे। काफी देर गुम रहने के बाद बोले 'हरेन बाबू का लडका होकर यह काम कैसे कर पाया ?" विश्वविद्यालय के दो-एक जने तुम्हे पुलिस मे देना चाहते थे। लेकिन डॉ० राय ने कहा, मेरी व्यक्तिगत लज्जा के अलावा भारत की भी क्षति होगी। भविष्य मे इडिया के छात्रो को परेशान होना पडेगा। उन लोगों का खयालकर डॉ० राय ने मुझमे अनुरोध किया कि तुम्हे चुपचाप छोड दिया जाए। तुम्हारा टर्म तो पूरा हो ही रहा है।"

मै आँख दिखला सकता था, लेकिन एम० ए० परीक्षा वाकई मैं पास नही कर पाया था, यह बात भी झूठ नही थी। उन दिनो तरह-तरह के झमेलो की वजह से चित्त ठिकाने नही था, दो-एक प्यार-मोहब्बत के चक्कर भी चल रहे थे। पढाई ठीक से नही कर पाया वैसे ज्ञान मुझमे कितने ही एम० ए० पास लोगो से ज्यादा ही है। लेकिन मैने और कुछ भी नहीं कहा। बात बढ जाने पर अभी पुलिस को बुलाकर जेल भेज दिया जाएगा। इसके अलावा अमेरिका के जो अखबार हैं, फोटो वगैरह छापकर वर्ल्ड न्यूज बनाके छोडेंगे। पासपोर्ट खोलकर देखा मेरे विसा की मियाद भी पूरी हो गई थी। यूनीवर्सिटी के लिखित अनुरोध के बिना ये लोग रहने नही देंगे।

स्मिथ ने कहा "चटर्जी, तुम काफी भाग्यवान हो। यह बात मै और डॉ० राय को छोडकर और कोई नही जानता। राय ने मुझसे विशेष अनुरोध किया है, कि मै इस चार्ज को ऑफीशियली टेक-अप न करूँ।"

अब आप समझ गए होंगे कि क्यो मैं टिकट खरीदकर वापस इंडिया लौट रहा हूँ। हर कोई यही जानता है कि मेरी फ़ैलोशिप की अवधि पूरी हो गई है। एक जने को छोड़कर जिसने स्मिथ को गुमनाम खत लिखा था। मै निमाई मुकर्जी की ओर ताक रहा हूँ।

निमाई मुकर्जी कैसे सीधे-साधे बने बैठे है। मैं अभी इसी वक्त

इनका रंगीन सपना चूर-चूर कर सकता हूँ। मै इनसे कह सकता हूँ कि टुलटुल के बारे मे वह गुमनाम चिट्ठी किसने लिखी। लेकिन मै अभी नही कहूँगा। दमदम पहुँचकर, कस्टम्स का झमेला निबटाकर बाहर आते ही कहूँगा। चिट्ठी, खुद आपकी सपनो की रानी टुलटुल ने लिखी थी। आप बेचारी टुलटुल को बहुत परेशान करते थे। आपको मालूम था कि टुलटुल दिलीप सेन नामक डाक्टर की अमानत है। बचपन मे क्या 'बोधोदय' मे नही पढ़ा "जो वस्तु जिसकी है। उसका उसी के पास रहना उचित है।"

यहाँ टोकियो एअरपोर्ट के लाउन्ज में निमाई मुकर्जी की नाक पर एक घूँसा जमा दिया जाय तो कैसा रहे? नाक एकदम जापानी हो जाएगी। लेकिन तभी टुलटुल और सुमित्र वापस आ गए। वे लोग माला खरीद चुके थे। रानीगंज की एक अनजान लड़की को घूस देने के लिए करीब सौ निरीह सामुद्रिक सीपो को अकाल मृत्यु का ग्रास बनना पड़ा।

इधर प्लेन मे लौटने के लिए एनाउन्स होने लगा। हम लोग उठ खड़े हुए।

एरोप्लेन मे बैठा हूँ। कुमार से बातचीत नही हुई। वह ट्रान्जिट लाउन्ज मे एक जापानी स्कॉलर के साथ परिचय कर रहा था। टोकियो विश्वविद्यालय के इन स्कॉलर से पत्र-व्यवहार था। खबर मिलने पर आए थे।

एरोप्लेन मे आकर फिर से कमर मे बैल्ट कस ली। कैप्टेन बदल गया है। एअर हॉस्टेस भी दूसरी है—पहले से कही ज्यादा खिली और खूबसूरत। बीच-बीच मे हॉस्टेस बदले बगैर लम्बी यात्रा में प्लेन बड़ा बोरिंग लगता है। मिजाज ठीक नही है, नही तो इन परियो से थोड़ी देर दिल बहलाया जाता। कार्ल लड़का इनमें से एक-आध के साथ डेट जरूर करेगा। उसमे गज़ब की क्षमता है। दो-चार मामूली-सी बात करके ही अपना काम बना लेता है। यह भी एक आर्ट है, समझो।

ढंग से प्रपोज़ न कर पाने पर पिट जाने की सम्भावना ही अधिक रहती है।

रनवे को दौड पूरी कर विमान फिर आसमान की ओर उठने लगा। सिर्फ दो स्टॉपेज और है—हांगकाग और वेकाक।

लगता है कुमार को मेरे बारे मे मालूम नहीं है। उसने पूछा "मास्टर साहब, आप तो कुछ रोज़ के लिए और भी रुकने को कह रहे थे ?"

मैंने कहा "सेहत ठीक नही चल रही। इसके अलावा माँ की इच्छा है कि मै वापस लौट आऊँ। माँ वेचारी और कितने दिन है ?"

"मास्टर साहब, पिताजी कहते है, माँ को कभी तकलीफ न देना। मेरी दादी उन दिनो सीरियसली बीमार थी। पिताजी के पास एक रुपया भी नही था। पिताजी उधर रुपये का इतजाम करने के लिए दो वर्तन लेकर निकले। दादी ने कहा, रहने दे। लेकिन पिताजी ने नही सुना। डेढ घटे बाद जब पिताजी वापस लौटे तो देखा माँ नही है। पिताजी कह रहे थे आपके फादर ने दादी के दाह की व्यवस्था की।"

मेरे और कुमार के बीच ये वाते कई बार हुई है। कुमार कहता "मास्टर साहब, आपको मालूम है, पिताजी से सुना है भारत मे लाखो लोग बिना इलाज मर जाते है। हालाँकि वहाँ के लोग आलसी नही है, मेहनत करना चाहते है लेकिन रास्ता नही खोज पाते।"

मैंने इन सब बातों को लेकर कभी सिर नही खपाया। सिर्फ हाँ-हूँ करता रहता। कुमार ने कहा था "मिस्टर चटर्जी पिताजी ने आपको मास्टर साहब कहकर पुकारने को कहा है। दो भाषाओं को मिलाकर यह मधुर शब्द बड़ा अच्छा लगता है।"

इसके बाद हम दोनो तरह-तरह की बातें किया करते। कुमार अपनी बगला ठीक करता। हमारे समाज आचार-व्यवहार के बारे में सवाल करता।

कुमार कहता "आपको मालूम है मास्टर साहब, दादी के मरने के बाद पिताजी ने घर का अपना हिस्सा बेच दिया। उसी रकम को लेकर

विलायत चले आए—वहाँ कुछ रोज कामकाज करके कुछ और रुपये कमाए और फिर से पढाई मे जुट गए। इसके बाद यू० एस० के इस रुटन शहर मे आ गए। पिताजी से कितनी बार कहा है कि हम लोग तुम्हारी राजवल्लभ साहा लेन देख आये। लेकिन पिताजी हमेशा सीरियस हो जाते, कुछ कहते नही थे।"

मिसेज राय मेरा काफी खयाल रखती। कहती, "कुमार को तुम अच्छी तरह से सिखा-पढा दो। मैने इसके पिता से वायदा किया है कि इसे हम लोग पूरा इण्डियन बना देगे। इसमे लगन है, इसे अपने पिता की चिताधारा विरासत मे मिली है। मिस्टर राय उससे पूछा करते थे, "हमारा भारत बडा गरीब देश है, बडी तकलीफें है वहां। तुम तक-लीफे उठा सकोगे ? जरा सा लडका तो था ही उन दिनो, लेकिन चुपचाप सुना करता और फिर हँसने लगता। अब यह लड़का सचमुच तकलीफो से नही डरता—मैने अपने बच्चो को मक्खन के पुतलो की तरह नही पाला है।"

वेणीमाधव से मुलाकात होते ही मै फँस जाता बात करने के लिए। भारत को छोड दूसरा कोई विषय नही था उनके पास। कभी-कभी घर के एक कोने मे बैठे बगला गीतो के रिकार्ड सुना करते। उनका सबसे प्रिय गीत था।

"आॅर रेखोना आधारे
आमार माझे तोमार
आपनारे देखते दाओ"

मुझे देखकर इशारे से बैठने को कहते, मै भी गीत सुनता। गीत पूरा होने पर सौम्यमूर्ति वेणीमाधव पूछते, "कैसा चल रहा है, कोई तकलीफ तो नही है।"

फिर कहने लगते "पिछले कई रोज से सोच रहा हूँ, भारत की सबसे बडी प्रॉबलम कौन-सी है ?"

मैंने कहा "जनसंख्या वृद्धि। भारत में रोज ढेर सारे बच्चे पैदा होते है।"

वेणीमाधव ने कहा "इससे भी बड़ी एक प्रॉबलम है, वह है भारत के अपेक्षाकृत भाग्यवान लोग अपने देश से प्रेम नहीं करते। भारत मे दो तरह के भाग्यवान लोग है—धनी भाग्यवान और शिक्षित भाग्यवान। लेकिन शिक्षित मध्यवर्ग मे भी जिम्मेदारी की भावना कहाँ है! धनी लोगो के सिर दोष थोपकर ये लोग अपने आप में मस्त रहते है, फ़ुटबॉल, क्रिकेट, सिनेमा या संगीत के नशे मे डूबे रहते है। कोई-कोई सोचता है कि मैदान में बड़ी-सी मीटिंग करके और हर तीसरे रोज हड़ताल करा देने से ही लोगों के सारे दुःख-दर्द दूर हो जायेगे।"

मैं हैरत से वेणीमाधव के चेहरे की ओर देख रहा था। वे कहते रहे "मैं आज एक विदेशी हूँ मुझे बोलने का अधिकार नही है लेकिन भारत के असली चेहरे के बारे मे शिक्षित भारतियो को भी जानकारी नही है। असली भारत मूढ़, बुझा हुआ और गरीब है, उसके पास न भाषा है, न शक्ति, और तो और दुनिया मे कहाँ क्या हो रहा है इसकी भी जानकारी नही है। ये मध्यमवर्गवाले जब तक उस भारत के लोगों को अपने भाई की तरह नही मानेंगे, उन्ही को पहले मरना होगा (युगो मे अकाल पड़ने पर गाँवो के लोग ही मरते है) तबतक भारत की नींद नही टूटेगी, उसका उत्थान नही होगा। भारत के पास सब है। इतने बढ़िया साधन और किसी के पास नही है, सिर्फ उसे जगाना है।"

मैंने कोई विरोध नही किया। क्योंकि इस वक्त बहस मे पड़ जाने पर क्रिश्चियन बेचारी अकेली बैठी रहेगी। उसे अपने एँपार्टमेंट में बुलाया था, अपने एँपाटमेंट की एक चाबी मैंने उसे दे रखी है।

मेरी समझ में यह बात किसी भी तरह नही आ पाती कि इण्डिया को लेकर आखिर वेणीमाधव को इतना सिरदर्द क्यों है? अच्छे-भले बालबच्चों के बीच अमेरिकन नागरिक की हैसियत से जिन्दगी काट रहे हो!

कुमार को पढाना, यानी गप्प लगाना। वेणीमाधव राय ने इस छोकरे को एक मूविंग भारतीय विश्वकोश बना दिया है। भारत का इतिहास, धर्म, संस्कृति और अर्थनीति को वह जैसे घोंटकर पी गया है। उससे बात करते डर लगता है—कब भूल पकड ले।

भारत की सामाजिक स्थिति के बारे मे भी कुमार को काफी दिलचस्पी है। पूछता है इण्डिया मे माँ अपनी सतान के मंगल के लिए कितने व्रत-उपवास करती है, लेकिन लडके माँ के सम्मान मे कोई स्पेशल दिन ऑबज़र्व क्यो नही करते ?"

मैने सिर खुजाते हुए कहा "क्यो मातृश्राद्ध तो है। माँ को मुखाग्नि देने के बाद कई रोज नगे पाँव करीब-करीब संन्यासी की तरह रहना पडता है। हम उसे अशौच कहते है।"

मिसेज राय हमारी बाते सुन रही थी। बोलीं "हाउ इन्टरेस्टिग" मेरे मरने पर कुमार भी ऐसे ही करेगा, अपना सिर मुँडालेगा।"

कुमार ने पूछा, "ज़िन्दा रहते नही करते तो मरने के बाद करने से क्या फ़ायदा ? सिर खुजाते हुए मैंने कहा, "जीवित रहते माँ जानती है कि लडके सिर्फ जी जलाते रहेगे। यही रिवाज है।"

इस पर वेणीमाधव ने जवाब दिया "कुमार, हर देश की माँएँ सहनशील होती है—सतान को सिर्फ़ देती ही रहती है। भारत मे हर रोज़ पुत्र काम पर जाते वक्त माँ को प्रणाम करते हैं, आशीर्वाद कामना करते है।"

कुमार आश्चर्य से बोला "हाउ स्वीट।"

मैने बात को आगे बढ़ाना ठीक नहीं समझा। स्कूल मे रिजल्ट निकलने वाले दिन को छोडकर मै कभी माँ के पाँव नहीं छूता था। वह भी इसलिए कि हिसाब मे थोड़ा कच्चा था। और पिता-माता के लिए खाम ख़्वाह सिर मुडाना मुझे पसन्द नही है। आजकल तो कितने ही लोग बाल मुड़ाने की जगह उसकी कीमत अदा कर देते है।

यह क़ीमत अदा करने का रिवाज इंडिया मे अच्छा है। आधुनिक

मानव सभ्यता के लिए भारत का सर्वोच्च अवदान। जिसे मानने को जी नही चाहता उसके बदले कुछ पैसे दे दो। पैसे से भगवान भी पसीज जाते है। आजादी के बाद तो हम और भी आगे बढे है। क़ीमत अदा करने का यह रिवाज जो अब तक सिर्फ धर्म और सामाजिकता के बीच सीमाबद्ध था, उसे हमने व्यवसाय, वाणिज्य, शासन, राजनीति और न्याय-रीति क्षेत्र मे लागू कर दिया है। मुझे तो ऐसा कुछ बुरा भी नही लगता। मैने कुछ रुपए ख़र्च कर आई० ए० की परीक्षा के सवाल आउट करा लिए थे। रुपये देकर बी० ए० की परीक्षा के दौरान हॉल मे किताब से नकल की। कुछ और ज्यादा रुपये देकर एक ऐंसर बुक पूरी की पूरी बदल दी—फलस्वरूप मुझे बी० ए० सर्टीफिकेट मे फायदा हुआ। खुद गवर्नर ने झिलमिलाता गाऊन पहने मुझे डिग्री दी। दुनिया के किसी हरामजादे मे यह कहने की हिम्मत नही है कि मै बी० ए० पास नही हूँ। एम० ए० की परीक्षा मे रेट को लेकर गडबड़ी हो गई, बात बिगडते-बिगडते मिज़ाज इतना खराब हो गया कि कीमत अदा नही की जिसके नतीजे मे गार्ड ने मुझे एग्जामिनेशन हॉल से निकाल दिया और मै एम० ए० पास नही कर पाया। अतएव मै एम० ए० नही हूँ। थोडे से रुपये खर्च नही किए इसलिए इतने दिन बाद भी विदेश मे मुझे मुसीबत मे फॅसा दिया गया। हालाकि मै चैलैन्ज करके कह सकता हूँ कि देश के विद्वान और ज्ञानी लोग जो कीमते चुकाकर हम लोगो के सिर पर बैठे है—उन्हे राष्ट्रसघ के तत्त्वावधान मे स्कूल फ़ाइनल की परीक्षा मे बैठाया जाए। देखे कितने पास होते है।

कुमार से ये सब बाते नही कहीं। छोकरे को भारत मे दिलचस्पी है इसीलिए तो अपने राम को कुछ अर्थलाभ हो रहा है। इडिया पर अभी भी कुछ लोगों की श्रद्धा और कृतज्ञता है इसीलिए हमे बिना पैसे उधार गेहूँ वगैरह मिल रहा है। इंडिया अगर चालाक हो जाए तो मेरे बचपन के दोस्त मंटू के पिता की तरह सिर्फ़ धुप्पलबाजी करके विश्व बाज़ार में काफ़ी दिनों तक काम चल जाए।

लेकिन वेणीमाधव की ओर ताककर देखिए। उनकी समझ मे ये बाते नही आयेंगी। विदेश आने के बाद देखता हूँ इस तरह का स्वदेश-प्रेम बढ़ जाता है।

वेणीमाधव कहते है 'मैं शायद तब तक जिन्दा न रहूँ लेकिन तुम लोग देखोगे कि भारत ने अपना गौरव वापस पा लिया है भारत के बारे मे इतने लोग जो उदासीन है उसकी वजह ईर्ष्या है। उन्हे मालूम है कि भारत उन्हें पीछे छोड जाएगा। और जिस दिन भारत सचमुच जाग उठेगा उस रोज़ पृथ्वी की सभ्यता का एक नवीन अध्याय शुरू होगा।"

कुमार ने सवाल किया था, "If India dies who lives ? If India lives who dies ? यह बात किसने कही है।

कुमार मेरी ओर देख रहा था। कौन यह फालतू की बात कहकर मुझे मुसीबत मे फँसा गया।

वेणीमाधव ने मेरी ओर देखकर कहा, "स्वामी विवेकानंद ने कहा है न ?"

मैने जानकार की तरह गभीरता से कहा, 'हाँ ऐसा ही तो लगता है।"

असल मे मुझे पता नही था। कोटेशस की किताबों मे जगह हथियाने के लिए कितने ही लोग कितना कुछ बेसिर-पैर का कह गए है, वह सब याद रखना हमारे जैसे आधुनिक युवको के लिए मुमकिन नही है। हम अपनी उस एनर्जी को जोक्स रटने मे लगाते है—जिन्हें सुनकर लडकियाँ हँसते-हँसते दोहरी हो जाये, और पास खिसककर कहें दो-एक जोक्स और भी हो जायें अनि। दो-एक जोक्स और भी सुना पाने पर नकद फायदा होता है। सो तो नही, इंडिया मर गया तो दुनिया का क्या होगा ? और दुनिया के नक्शे से इंडिया के पुछ जाने पर दुनिया का क्या आता-जाता है। दुनिया जैसे चल रही है ठीक वैसी चलती रहेगी। कितने देश इसी तरह पुछ गए, इतिहास के सफे खोलकर देखो न भाई। लेकिन किसके सर मे दर्द हो रहा है ? सबसे बड़ा सवाल है मैं बचता

हूँ या नही। अपनी पाँच सजग इंद्रियो के साथ अगर मै बचा रहता हूँ तो ठीक है। अपनी दिली बात तो भाई मैं इसे ही मानता हूँ। लेकिन ज्यादातर इंडियन मानने को तैयार नही होंगे। उनकी जवान पर एक बात होगी और पेट में दूसरी। पढाने के बाद भी वेणीमाधव ने मुझसे बैठने का अनुरोध किया। कुमार किसी काम से चला गया था। वेणीमाधव कहने लगे "एक जमाना था जब विवेकानंद की वातो पर मुझे हँसी आती थी। लेकिन आज नहीं हँस पाता। मुझे विश्वास है कि भारत के पास दुनिया को देने के लिए कुछ है। लेकिन यह बात भारत से बाहर आने पर समझ मे आती है—विवेकानद भी यह सत्य शायद अमेरिका आने के बाद समझ पाए थे।"

"इसीलिए तो भारत का हर आदमी फॉरेन जाना चाहता है। भारत का हर विख्यात आदमी फॉरेन जाकर ही विख्यात हो पाया। और विवेकानंद तो भारत को अमेरिका का प्रीति-उपहार है?"

जब तक आप इंडिया में थे, कदम-कदम पर तकलीफे उठानी पड़ी, दो वक्त ठीक से खाना भी नसीब नही हुआ। आज आप विदेश मे आने के बाद प्रतिष्ठित है, देश के लोग आपका नाम लेकर काम बनाते है। आज आपको अगर नोबुल प्राइज मिल जाए तो देखिएगा आपके देशवासी आपका नाम ले-लेकर उछलने लगेंगे। अखबारो में, रेडियो पर, मीटिंगों में, सरकारी दफ्तरों में आपकी प्रशंसा मे गीत गाए जाएँगे।"

लेकिन वेणीमाधव कोई खास प्रसन्न नही हुए। उन्होंने गभीर हो कर कहा, "गरीबों के घर ऐसा ही होता रहा है। जानबूझकर कोई ऐसा नहीं करता। निराशा के बीच आशा की किरणें देखकर वे लोग जरा जरूरत से ज्यादा हो-हल्ला कर बैठते हैं। हम आज भी अपने ऊपर यक़ीन करना नही सीख पाए है, इसीलिए बाहरी लोगो के बड़ा कह देने पर ही हमें तसल्ली होती है।"

मैंने कहा, "भारत के बारह बज रहे है। सिर्फ एक बात समझ में

नही आती कि इन हालातो मे भी भारत आप जैसे लोगो को कहाँ से पैदा कर पाता है ?"

वेणीमाधव को संतोष नही हुआ। उनकी आँखे भर आई। उन्होने कहा "मेरे जैसे हजारो आदमी भारत मे पैदा होते है। उन लोगो को सयोग नही मिलता, आवश्यक शिक्षा नही मिलती, कोई बढावा भी नही देता। इसलिए वक्त से पहले ही सूख जाते है।"

मैने मन-ही-मन कहा "तुम्हारा यह मर्ज ठीक होनेवाला नही है। भारत-प्रेम तुम्हारे लिए एक तरह का शौक है। अगर इतना ही प्रेम है तो वापस राजवल्लभ साहा सेकेन्ड बाई लेन मे लौट जाओ न !

ये सारी बाते इस प्लेन मे बैठे-बैठे कुमार को ओर देखकर आ रही है। कितने रोज इन लोगो के घर गया और पढाने का नाम करके भारत के बारे मे गप्पे हाकता रहा। भारत के बारे में उसे कुछ बतलाना मेरे लिए सभव नही है। किताबे और पत्र-पत्रिकाएँ पढकर भारत के बारे मे कुमार मुझसे कही ज्यादा जानकारी हासिल किये बैठा है।

प्लेन की नई परिचारिकाये सचमुच काफी सेवापरायण थी। कानून की परवाह किए बगैर वाजिब दामो पर मुझे ड्रिक्स सर्व किए जा रही है, और मै चढा रहा हूँ।

उधर निमाई मुकर्जी कैसा साधु बना बैठा है ! प्लेन मे चढने के बाद से एक पैग भी नही हुआ। टुलटुल के आगे अपना इमेज बनाने मे लगे है हज़रत। कुछ भी हो आखिर घरेलू बगाली लडकी ही तो है—अगर शराब चढाते देखकर मुकरने लगे। मेरी बडी इच्छा हो रही है कि जाकर निमाई मुक़र्जी का चुम्बन लूँ और कहूँ "अमेरिका से निकलवा दिया है इसीलिए अपने कन्हैया से प्यार नही करूँगा ?" उसके बाद एक सवाल पूछूंगा, "टुलटुल की क़सम खाकर कहो तो, कि शराब पिए बग़ैर यह चिकनी-चुपड़ी सेहत कैसे बना रखी है ?" हो सकता है

इसके बाद दो-दो हाथ हो ले। लेकिन मै भी भाई राजवल्लभ साहा लेन का हूँ, एक ज़माने मे वेस्ट एंड क्लब जाकर बॉक्सिग की प्रेक्टिस कर चुका हूँ।

लेकिन इसी बीच हांगकाग उतरने का वक्त हो गया। कमसिन जापानी कलियाँ अपनी मीठी-मीठी अग्रेज़ी में बैल्ट बाँधने का अनुरोध कर रही थी। लेकिन भाई मै खुद अपने-आप बैल्ट बॉधनेवाला नही हूँ। तुम्हे आकर बाँधनी पड़ेगी।"

कुमार सो गया था। हांगकांग में झटका खाकर प्लेन के रुकने से हड़बड़ाकर उठ बैठना चाहता था। लेकिन मैने देखा कि मुझे कुमार को लेकर ही बाहर निकलना चाहिए। अचानक अगर एक घूँसा जमाकर निमाई मुकर्जी के चेहरे की ज्यॉग्रॉफी बदलने को दिल कर आया तो बेकार का बखेड़ा खड़ा हो जाएगा। हजरत की मजाल तो देखिए! टुलटुल की हिस्ट्री जान चुके है, अब इस बुढापे मे उसकी ज्यॉग्रॉफ़ी जानना चाहते हैं। मुझे अचानक कोई फ़ितूर सवार हो सकता है। कुमार रहेगा तो मुझे सम्हाले रखेगा।

कुमार को करीब-करीब खीचकर लाउंज मे ले आया। उसे पास बैठाकर कॉफी लाने का आर्डर दिया। फोकट की कॉफ़ी मिलेगी। एअर-वेजवाले दामाद की तरह यात्रियों की खातिर कर रहे है। क्यों न करे इतनी एअरलाइन्स के रहते उन्ही से टिकट ख़रीदकर उन्हे धन्य जो किया है। कॉफ़ी का कप सामने रखे हिसाब मिलाने की कोशिश कर रहा हूँ—किस रोज़ प्लेन बोर्ड किया था, आज कौन-सा वार है? बारबार घड़ी में टाइम चेंज करते-करते सारा हिसाब गडबडा रहा है। कुमार ने पूछा, "मास्टर साहब, आपका कुछ खो गया है क्या?"

ज़रा नशे की ख़ुमारी थी, बीच-बीच मे जेब टटोल रहा था इसी-लिए कुमार ने यह सवाल किया। मैंने कहा, "देखो न, दुनिया की हालत ज़रा देखो। आज जापान आते वक्त रास्ते में जैसे ही अन्तंदेशीय तारीख़ रेखा पार की फ़ौरन कलैण्डर में एक तारीख़ बढ़ा देनी पड़ी। था बुद्ध,

पूरा का पूरा दिन हड़प लिया गया ।"

कुमार ठहका मारकर हँसने लगा। "आप शायद इसीलिए हिसाब नहीं मिला पा रहे हैं ?"

यह छोकरा इंडिया किसलिए जा रहा है इस बात का पता लगाना ज़रूरी है। नाम से जितना भी इंडियन हो, देखने में पूरा अमेरिकन ही लग सकता है। सो इंडिया के इंडियनों से, माने जो लोग गोरी चमडी-वालों को देखकर गदगदायमान हो जाते है, काफ़ी सम्मान पा लेगा।

कुमार से पूछ ही बैठा, "जानते हो मै क्यों वापस जा रहा हूँ ?"

बेचारा सचमुच कुछ भी नही जानता था। बोला "अपना कामकाज तो आपने पूरा कर ही लिया है। घर का लड़का घर वापस आता है तो कोई नही पूछता कि क्यों जा रहे हो ?"

यह पता चलने पर कि इसे कुछ भी नही मालूम काफी राहत मिली। अब मैंने पूछ लिया, "तुम इंडिया मे कब तक रुकोगे ?"

कुमार हँस पडा। फिर बोला, "काफी लम्बा किस्सा है। प्लेन में लौटने के बाद आपको सब बतलाऊँगा।"

इसी बीच एक चीनी हॉस्टेस आकर प्लेन मे वापस जाने को कह गई। अब प्लेन उडान भरनेवाला था। कुमार साथ ही साथ उठने जा रहा था। मैंने उसे रोककर कहा, "अरे थोडी चीनी हवा और खा ली जाए। एअरलाइन्स वाले बेकार मे ही हडबडी मचाते है।"

उसके बाद भी शायद काफी देर तक बैठे थे, हम लोग। क्योंकि एअरलाइन्स का एक आदमी हम लोगों को ढूँढता आया। हम लोग भी भागे। और इस हडबडी मे ही एक गडबडी हो गई। प्लेन की सीढी के पास शायद कोई चीज पडी थी—उस पर पाँव फिसलने से कुमार गिर पडा। मैं इस घटना के लिए बिलकुल भी तैयार नही था। खुद को सम्हालने के बाद उसे खीचकर उठाया। उस जैसे बदन को खींचने में कम मेहनत नही होती है।

बेचारे कुमार ने उस हालत में भी मुझे शुक्रिया अदा किया। फिर लगड़ाने लगा।

मैंने पूछा "चोट आई है?"

"नहीं, ऐसी कोई बात नही है।"

मैंने कहा, "समझ लो, यहाँ पर तो डॉक्टर-वाक्टर मिल भी जायेंगे।"

कुमार ने कहा, "नही, ऐसी कोई बात नहीं है।" वह मेरे कंधे का सहारा लिए अंदर आया।

गुरुनितम्बिनी विमानबालिका फिर से बैल्ट बाँधनेवाली रटी-रटायी गत दुहराने लगी। कैप्टन की ओर से नए यात्रियो का स्वागत किया गया। आसमान मे कितनी ऊँचाई से जाना है बतलाया—यह सब सुनते-सुनते मेरे कान सड़ने लगे हे।

मैं कुमार के बारे मे सोच रहा हूँ। मैं दूसरो के बारे मे सोचने का आदी हूँ, ऐसी बात नही है। अपने बारे मे ही सोच नही पाता। फिर भी नज़रो के आगे अगर किसी का पाँव रपट जाए तो थोड़ा-बहुत सोच लेना पडता है।

हमारा विमान फिर शून्य मे उठ आया है। कैसा भले आदमी जैसा तैर रहा है, कौन कहेगा कि बाहर से देखने पर कानों मे रुई ठूँस लेनी पड़ती! ज्यादा नहीं, दस मील प्रति मिनट की रफ्तार से यह बोइंग दानव भाग रहा है।

कुमार की ओर देखकर लगा कि उसे काफ़ी तकलीफ है। लेकिन छोकरे ने अपने मुँह से स्वीकार नही किया। मैं होता तो अब तक इसी बहाने खूबसूरत हॉस्टेस को बुलाकर विक्षत स्थान के आसपास उसके नर्म हाथो को फिरवा लेता।

मैंने कुमार से पूछा, "दर्द ज्यादा है क्या?"

कुमार ने स्वीकार नही किया।

इसी बीच डिनर का वक्त हो गया। सामने टेबुल लगाकर एक परी उस पर हलकी-सी प्लास्टिक की ट्रे रख गयी। प्लेन में यही मजा है—हर चीज मजबूत लेकिन हल्की होनी चाहिए, पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण को ठेंगा दिखलाकर प्लेन को ऊपर लाने के लिए पाईलट हर समय वजन का खयाल रखते है। यह जो ललना मुझे सर्व कर रही है जरा उसे देखिए, कैसी गुडिया जैसी शक्ल है, इतनी गुरुस्तनी लेकिन फिर भी कैसे हल्की-सी तितली की तरह इधर से उधर आ-जा रही है।

अरे ऐ, कुमार, अमाँ जरा इधर भी देखो यार, देखकर दर्द कम होगा। जिस बार मेरा पाँव फिसला था, अपनी टूटी फीमर के दर्द को भुलाने के लिए कितनी सुन्दर-सुन्दर लड़कियों के बारे मे सोचता था। ऐसी चिंता वेदनानिग्रह गोली का काम करती है, यह बात इस युवक को समझाना जरूरी है। इतने रोज से अमेरिका मे है और इतनी मामूली बात नही जानता, यह भी आश्चर्य की ही बात है? लेकिन कुमार इसी बीच फिर वही नेहरू की 'डिसकवरी ऑफ इंडिया' खोलकर बैठ गया है।

मेरी इच्छा हो रही थी कि कुमार से साफ-साफ कह दूँ, बच्चू यह एकदम फ़ालतू किताब है। अरे भीष्म पितामह से लेकर कृष्ण, बुद्ध महावीर, शंकर और विवेकानंद जैसे लोग जो नही कर पाए, तुम इलाहाबाद में पैदा होकर केम्ब्रिज मे पढकर और मैदानो मे बडी-बडी मीटिंगें झाडकर इस इंडिया की डिसकवरी करने चले हो! बेचारे गाधीजी जैसे आदमी को भी इंडिया को खोजते-खोजते अपनी जान से हाथ धोना पडा। अरे बच्चू इंडिया इतनी सीधी चीज नही है। भगवान को भी इसके पीछे काफ़ी मशक्कत करनी पड़ी है।

डिनर मे कुमार ने लगभग कुछ भी नहीं खाया। लेकिन मैंने कुछ भी नही छोड़ा। जितना खाया जाए खा लेना अच्छा है, इंडिया का एक वक्त का खाना बचाने में भी फ़ायदा ही है।

मेरे बगलवाली सीट खाली है। कार्ल पता नहीं क्या सोचकर हाँग-

कॉग उतर गया। छोकरे ने हॉगकॉग की नाइट के बारे में एक किताब पढ़ी थी, शायद उसी से शौक चर्रा उठा। प्लेन को ये लोग ट्राम-बस समझते है—हावड़ा स्टेशन से भवानीपुर जाने का टिकट कटवाया, अचानक मन मे आया और उतर पड़े एस्प्लेनेड। और बलिहारी है इन अमरीकी प्रकाशको की भी। टूरिस्ट किस देशके किस शहर मे, किस मकान या इलाके मे, कितनी कीमत पर कैसी साथिन प्राप्त कर सकते है, इसकी खोज मे भी किताब लिखा मारी।

अब कुमार के साथ जरा जमकर गप्प लडायी जा सकती है।

कुमार किताब गोद मे रखे प्लेन की सीलिंग की ओर ताक रहा है। मैने पूछा, "क्या सोच रहे हो ?"

कुमार ने मुस्कराकर जवाब दिया "पिताजी की बाते याद आ रही है।"

दूसरा कोई अमेरिकन यह बात कहता तो मैं फौरन कहता, "क्यों बेकार बनने की कोशिश कर रहे हो। यह क्यो नही कहते कि गर्ल-फ्रेंड की याद आ रही है, चेहरा आखों के आगे घूम रहा है और दिल चर्र-वर्र कर रहा है।" लेकिन कुमार के चेहरे पर एक ऐसा सरल भाव है कि उसमे यह सब कहने की इच्छा नही होती।

मैने कहा, "पिताजी के साथ होने पर तुम्हें काफी मजा आता, यही बात है न।

"मां तो है ही, लेकिन जो कभी नही होना है। पिताजी के लिए इंडिया आना कभी भी सम्भव नहीं हो पाएगा।"

कुमार की बात सुनकर मैं चौंक उठा। तब क्या वेणीमाधव राय भी अन्दर ही अन्दर ऐसा कुछ कर बैठे है कि उन्हे कभी भी इंडिया आने के लिए वीसा नही मिल सकेगा। जिस तरह अनिर्वाण चटर्जी का नाम अमेरिकनों की ब्लैक-लिस्ट मे नोट हो गया है। उस बुढऊ स्मिथ ने जरूर कोई लैटर गवर्नमेंट को लिख दिया होगा जिसका सब्जैक्ट होगा, अनिर्वाण चटर्जी।

कुमार ने अब बोलना शुरू किया, "पिताजी इंडिया को दिल से चाहते है, यह बात मै बचपन से जानता हूँ। इंडिया के बारे मे मेरी यह दिलचस्पी भी मुझे अपने पिताजी से ही मिली है। मेरी माँ ने उसके लिए काफी बढावा दिया। माँ कहा करती थी—पता है तुम्हारे पिताजी को बचपन मे कितनी तकलीफ़े उठानी पडी है। तुम्हारी दादी बडी अच्छी थी। बे-सहारा विधवा होते हुए भी उन्होने लडके को बडा बनाने का सपना देखा।

मैंने पूछा, "फिर ?"

कुमार ने कहा, "हमारे घर के पास मिस्टर यूमोफ्यूलस का आली-शान बगला देखा है ?

देखा क्यों नही है ? ग्रीक है। बूढऊ यूमोफ्यूलस को भी देखा है। बैचलर आदमी है। एक ज़माने मे काफी खूबसूरत रहा होगा। उसकी चेहरे की उठी हड्डियों की ओर मेरी नजर चली जाती। देखने पर लगता एकदम अडियल है। जो कह देगा करके छोडेगा।

कुमार ने कहा "यूमोफ्यूलस अकल के साथ पिताजी की खासी पटती थी। पिताजी विज्ञान के आदमी और यूमो सामान्य पढा-लिखा लेकिन पक्का व्यापारी। दोनो करीब एक ही साथ अमेरिका आए थे। यूमो इतने अरसे से यहाँ थे लेकिन उनकी अंग्रेज़ी वैसी की वैसी रही। वही टूटा-फूटा उच्चारण 'ट' की जगह 'त' बोलते और एक-एक अग्रेज़ी शब्द के लिए अटकते।"

"लेकिन पिताजी को इससे खास परेशानी नही होती थी। बुढऊ का जब जी चाहता हमारे घर चले आते, फिर दोनों घटो बात किया करते। मतलब यूमो ही ज्यादातर बोलते रहते और पिताजी चुपचाप बैठे सुनते।"

कुमार जरा रुका। फिर कहने लगा, "मोहल्ले में यूमो बदनाम थे। इतना कमाते थे लेकिन खर्च करने के नाम राम का नाम। अपने कपड़ों

तक पर कोई खर्च नहीं करते थे। वैसे पिताजी इन बातों पर कान नहीं देते थे।"

"इसके बाद ही की घटना है। देखा एक रोज यूमो आकर पिताजी के कमरे में घुसे। पिताजी ने माँ को भी बुला लिया। मैं ऊपर कमरे में पढ़ रहा था। काफी देर बाद घर से यूमो को आपने निकलते देखा।"

मां ऊपर आयी। मैंने पूछा, "बात क्या है? यूमो अंकल आज तो जैसे जम ही गए थे।"

मां ने बतलाया, "यूमो आज हम लोगों से विदा ले आए थे। यूमो अमेरिका छोड़कर जा रहे हैं।"

"क्यों?" मैंने हैरानी से पूछा।

मां ने कहा, "ये यूमो भी अजीब आदमी है। आज अपनी राम कहानी सुना रहे थे। तैश में एक सूट डालकर एक रोज क़िस्मत आजमाने के लिए निकल पड़े। बाद में जीवनधारा में बहते आ पहुँचे न्यूटन। अपने आपसे प्रतिज्ञा की थी कि एक न एक रोज़ वापस ग्रीस लौटेंगे। लेकिन खाली हाथ नहीं, साथ में होंगे— पूरे एक मिलियन डॉलर। उसके बाद कितने साल गुजर गए। अपने व्यापार में यूमो ने भूत की तरह मेहनत की। पिछली शाम के सात बजे कहते हैं उनका सपना साकार हुआ— यूमो पूरे दस लाख डॉलर के मालिक हो गए। यूमो कह रहे थे काफी देर हो चुकी है। जब प्रतिज्ञा की थी तो नहीं सोचा था कि इतना वक्त लग जाएगा। बीच में तो आशा ही छोड़ दी थी—सोचा था, सपना कभी भी पूरा न होगा। ऑलमाइटी ने आखिर दया कर ही दी। अब मैं एक रोज भी नहीं रुक सकता। अपनी सारी जायदाद आदि बेच दी है। दस लाख डॉलर लेकर मैं ग्रीस में अपने गाँव वापस लौट जाऊँगा।"

माँ ने फिर कहा "है न आश्चर्य की बात। यूमो के मन में इतनी बड़ी योजना थी किसे पता था। अपने देश का खयाल कर ही बेचारे इतना सोच-समझकर खर्च करते थे।"

कुमार कहता रहा "माँ की बात पूरी होने पर मैं नीचे आ गया

था। देखा, पिताजी ने बैठनेवाले कमरे मे प्राय अँधेरा कर रखा है। सिर्फ एक टेबुल-लैंप टिमटिमा रहा था।"

धुँधली रोशनी मे कुमार ने देखा, पिताजी पत्थर के बुत की तरह गुम बैठे बाहर की ओर ताक रहे है। कुमार को लगा पिताजी काफी विचलित है। आगे बढकर कुमार ने पुकारा, "पिताजी।"

वेणीमाधव ने जैसे किसी अँधेरी गुफ़ा मे से जवाब दिया, "कौन ? कुमार! आओ बैठो!"

पिताजी को कुमार ने कभी इस तरह विचलित नही देखा था। उन्हें देखकर जैसे उसकी छाती फटी जा रही थी। वह अपने पिता को बहुत चाहता है। कुमार ने अपने पिता का हाथ पकड़कर पूछा, "पिताजी क्या सोच रहे है ?"

वेणीमाधव ने अपने आवेग को काबू मे रखने की बेकार कोशिश करते हुए कहा, "कुमार, आज मुझे अपनी मा की याद आद आ रही है।"

"वह तो बीच-बीच मे आएगी ही। फिर ऐसी मां!"

विश्वविख्यात वैज्ञानिक वेणीमाधव राय ने कहा, "इतने रोज़ से मॉ की तसवीर धुँधली-धुँधली-सी थी, आज वह बिल्कुल साफ़ दिखलाई दे रही थी। पिताजी मै जब छोटा था, चल बसे थे। माँ ने ही मुझे पाला। माँ बेचारी के पास स्नेह छोड और कुछ भी नहीं था। मां कहा करती थी—गरीबो के आँखें और हाथ छोडकर कुछ भी नही होना। इस तरह पढाई-लिखाई करना कि कोई भी तुझमे मुकाबला न कर पाए। तुझे काफ़ी बडा बनना है।"

मै चुपचाप सुना करता। मॉ कहती, "सिद्धेश्वरी मां के आशीर्वाद से तू अगर कुछ बन गया तो मुझे मरकर भी तसल्ली रहेगी। मॉ कहा करती थीं—'अगर कभी बड़ा हो पाए तो हमेशा गरीबों के दुखों का खयाल रखना। उनके बारे मे भी थोड़ी चिंता करना।"

लंबी सास लेकर वेणीमाधव ने कहा, "माँ कहती और मैं सुनता।

मैने क्या सोचा था कि मेरी माँ को इलाज के बगैर मरना पड़ेगा ? माँ की हालत काफी रोज़ से ख़राब थी लेकिन मुझे नही बतलाया ? मेरी परीक्षाएँ ख़राब हो जायेंगी और इसके अलावा मैं रुपए कहाँ पाऊँगा ? बीमारी के शुरू के दिनों गंगाधर बाबू के होम्योपैथिक दवाख़ाने में जाती थी। गंगाधरबाबू रिपन कॉलेज मे वाइस-प्रिंसिपल थे और बाकी के समय मे मुफ्त दवा बाँटा करते थे । माँ ने जब चारपाई पकड़ ली तो दवा लाने के लिए मुझे भेजा। गंगाधर बाबू ने कहा था, "तुम्हारी माँ की हालत ठीक नही लग रही है । ख़ून, थूक वगैरह टैस्ट कराने पड़ेंगे और इसके अलावा अच्छी ख़ुराक चाहिए ।

"लेकिन यह सब आएँ कहाँ से ? काफी पैसा चाहिए । दो-एक ऐलोपैथिक डाक्टरों के पास गया । उन लोगों ने बतलाया, "लगता है टी० बी० है । राजरोग की तो भाई राज-चिकित्सा ही हो सकती है । रुपयो का इंतजाम कर पाओगे ? इससे तो किसी सैनेटोरियम में कोशिश करो, अगर कोई फ्री बेड मिल जाए । कितने लोगों के दरवाजों पर चक्कर लगाए, कितनी कोशिशें की, किसी तरह माँ का थोडा-बहुत इलाज हो जाए ।"

कहते-कहते पिताजी बुरी तरह टूट रहे थे । उनकी मा जैसे बगल वाले कमरे मे पड़ी अर्थाभावसे विना इलाज मर रही हो । उन्होंने कहा, "माँ की मौत पर मैं एकदम पत्थर हो गया था । जरा भी नही रोया । माँ की मृतदेह को स्पर्श कर, उनका सर अपनी गोद मे रखकर प्रतिज्ञा कर डाली, जिस देश मैं मेरी माँ का इलाज तक नही हो पाया, उसे भी छोड दूँगा और कभी वापस नही आऊँगा । कभी नही ।"

कुमार ने देखा पिताजी की आँखे भर आयी है । इतने रोज़ बाद बुढापे के दरवाजे आकर वेणीमाधव अपने आँसुओं से मन को शांत कर रहे हैं ।

वेणीमाधव ने कहा, "यह मेरा अपनी मर्जी का निर्वासन है । ख्याति धन-सम्पत्ति मुझे सभी कुछ मिला है । सिर्फ़ मेरी माँ मुझे वापस न

मिल पायी । एक मौका आया जब सोचा, बच्चो की तरह मुझे चट से इस तरह की प्रतिज्ञा नही ही करनी चाहिए । लेकिन माँ को स्पर्श कर मैंने जो कह दिया वापस नही ले सकता । मै अब भारत नही देख पाऊँगा । भारत मेरी माँ की तरह है, चाहे जितना भी लूँ, माँ मेरी वापस नही आ सकती ।"

प्लेन ने जरा झटका खाया । घडी की ओर ताककर देखा, कलकत्ते पहुँचने मे ज्यादा वक्त नही रह गया था । हॉस्टेस कामकाज निबटाकर पिछली सीटो पर थोडी देर के लिए निद्रासुख उठा रही है ।

मैं आखे फाड़े कुमार की ओर देख रहा हूँ और उसके पिताजी की कहानी सुन रहा हूँ ।

कुमार ने कहा, "मै बिना कुछ कहे ऊपर चला आया । पिताजी को इस वक्त अकेले कहने देना ज्यादा ठीक रहेगा ।"

माँ ऊपर बुनाई कर रही थी । मेरा गभीर चेहरा देखकर बोलीं, "इडी, तेरी आखे छलछला क्यो रही है ?"

मैने जवाब दिया, "आज पिताजी को रोते देखा, यूसो अकल को वापस लौटते देखकर पिताजी काफी विचलित हो गए है ।"

माँ मेरी ओर ताकती रही । मेरी माँ की मुस्कराहट कितनी मीठी है, जानते है न ? माँ को पिताजी की माँ के बारे मे बतलाया, लेकिन देखा उन्हे सब कुछ पता है ।

उसी तरह बुनाई करते हुए माँ ने कहा, "इडी, तुम तब बिल्कुल छोटे थे तो तुम्हारे पिताजी से मैने वायदा किया था, तुम जो नही कर पाए तुम्हारी सतान वही करेगी । इडिया जाकर वह मानव-सेवा करेगी ।"

माँ ने मेरी ओर देखकर कहा, "तुम्हे इडिया पसंद है न ?"

मैने कहा, "बहुत पसन्द है माँ ! और हाँ, पिताजी कहते है न कि इडिया मे सब कुछ है, सिर्फ़ एक चिनगारी की जरूरत है । करोडों अध-खाए और भूखे, कमज़ोर और रोगी इंसान फिर जाग उठेंगे ।"

माँ ने कहा, "तुम्हे तो उसी तरह् बडा किया है। विश्वविद्यालय मे विज्ञान लेकर पढाई की है। तुम्हारा जी चाहे तो भारत जा सकते हो — वहाँ के जीवन के साथ एकाकार होकर उन्हे प्यार कर पाओगे ? उनसे कह पाओगे कि मेरे आँख-कान और रग देखकर यह न सोचे कि मै विदेशी हूँ। मेरे पिता का नाम वेणीमाधव राय है। राजवल्लभ माहा सैकेण्ड वाई लेन मे जिनका जन्म हुआ, जिनकी माँ मोहल्ले मे महाराजिन का काम करती थी, लाई फुलाती और कागज के खोखे बनाया करती। अगर इतने पर भी कोई पूछे, तुम लोग तो अमेरिका मे काफी मजे मे हो, तो फिर यहाँ क्यों ? तब कह देना, पिताजी ने भेजा है।"

कुमार ने कहा, "पिताजी ने सब कुछ मेरे नाम कर दिया। उनकी सारी जिन्दगी।"

मैं यानी श्री अनिर्वाण चटर्जी कानो मे सब सुने जा रहा हूँ, लेकिन हर वात मन मे नही पैठने दे रहा। इन बातो के मन मे पहुँचते ही आदर्श-वाद घुस आएगा और यह साला आदर्शवाद पूरा घर का भेदी विभीषण है। आपको चैन से बैठकर इद्रियसुख भोगने नही देगा। हर वक्त कोई खिटखिट लगाए रहेगा।

कुमार ने अब सीट छोड़कर उठने की कोशिश की। लेकिन पैर की तकलीफ काफी बढ गयी थी। कलकत्ते पहुँचते ही डॉक्टर को दिखलाना पडेगा। हड्डी न फ चोट पहुँचना कोई बडी बात नही होगी। मै इस हालत मे होने पर हॉस्टेस को बुला भेजता। उसके कधे पर हाथ रखकर आहिस्ता-आहिस्ता बाथरूम जाता। मेरा पोज विख्यात राष्ट्र-नेताओ की तरह होता, जो बूढे होते ही सुन्दर लड़कियो के कधे पर हाथ रखकर चलते है। एक बूढे खूसट की ही 'ब्रा' के 'स्ट्रैप' को पकडकर खीचने की आदत थी।

मैने कुमार से कहा, "मेरे साथ आओ।" मेरे कधो पर हाथ रख-कर ही उसे टॉयलेट जाना पडा। इतना अच्छा मौका हाथ से निकल जाने दिया। इस नासमझ को खिडकी के बाहर सिर्फ अँधेरा ही अँधेरा नजर आ रहा है। दुनिया मे जैसे अँधेरे को छोड़ और कुछ भी नहीं है।

मुझे जरा मूड बनाने की इच्छा हो आयी। हैंडबैग में एक छोटी-सी चपटी-सी बोतल पड़ी थी, उसी को निकालकर दवा की तरह नीट ही पीने लगा।

इस तरह पीने का भी एक अलग मजा है। गले से सरकते-सरकते एक किक मारती है। याने एक तरल लात झाडती है, और उसे ही चट से हजम करने में असली मजा आता है।

गले में थोड़ी-सी ह्विस्की ढाल दो, सिर्फ एक तरल लात खाने के के लालच में मेरा जी चाह रहा है कि मैं लातों की मार खाकर जमीन पड़ा छटपटाता रहूँ, और मेरी ओर देखे बगैर कोई मुझ में और लातें जमा जाए।

हाथ में बँधी घड़ी की ओर देखा—टाइम-टेबुल में कलकत्ता का स्थानीय समय अंकित था। मेरी घड़ी में अभी तक जापानी समय था। कलकत्ते से कुछ घंटे आगे। जैसे प्लेन देर कर रहा हो। हिसाब लगा-कर देखा कलकत्ते पहुँचने में खास देर नहीं थी। हम लोग करीब-करीब आ पहुँचे थे।

एअर हॉस्टेस छोकरी के रंगढंग देखकर भी लग रहा था कि लैंडिंग होनेवाली है। प्लेन उतरने से पहले हॉस्टेस अपनी गृहस्थी समेटने लगती है। इसके बाद सट् से बाथरूम में घुसकर नाक पर जरा-सा पाउडर और होंठों पर थोड़ी लिपस्टिक लगाती है।

सीनियर सुन्दरी मेरे सामने से कॉकपिट की ओर जा रही है। मैंने आँख मारी। लेकिन छोकरी ने नहीं देखा। मुझपर क्यों नजर पड़ने लगी भाई, खुद कृष्ण कन्हैया ने कॉकपिट में बुला भेजा है। छोकरी वहाँ जो घुसी तो निकलने का नाम ही नहीं लेती। ऐसा कौन-सा काम आ पड़ा। असल में मज़ाक चल रहे होंगे। शायद कलकत्ते में छोकरी की ड्यूटी पूरी होनेवाली होगी और ड्यूटी के बाद का वक्त किस तरह गुजारा जाए इसी की प्लानिंग हो रही होगी।

मैं उसी ओर नज़र लगाए रहा। छोकरी के बाहर निकलते ही

रोकूँगा। मुझे उसकी जरूरत है। मेरी छाती के अन्दरवाली नली में जलन हो रही है—मुझे थोडे पानी की जरूरत है।

छोकरी टट्टू घोडे की तरह टापें मारती बाहर आयी। बड़ी खुश-खुश नजर आ रही थी। मैंने पानी माँगा। पानी ले आयी। गिलास आगे बढाकर बोली, "सब लोग सो रहे है। तुम नही सोए ?"

मैंने कहा, "इन मरी आँखो मे नींद ही नही आ रही ?"

युवती ने मेरे हाथ से गिलास वापस लेते हुए कहा, "लगता है काफी रोज बाद अपने देश लौट रहे हो ? इससे बहुत बार उत्तेजना रहती है, नीद नही आती।"

मैं उससे पूछने जा रहा था, "कॉकपिट में कैप्टन के साथ क्या गुप-चुप चल रही थी। लेकिन उसने कहा, "अब चलती हूं। लैंडिंग एना-उन्समैंट करना है। कलकत्ते मे इस वक्त पानी बरस रहा है।"

हमारी बातो के बीच ही सीट पर बैल्ट बाधनेवाली रोशनी जल उठी। उसके बाद ही कुमारी की घोषणा, "इस वक्त रात का एक बजा है। हम कुछ मिनटो के बाद कलकत्ते उतरनेवाले है। आप लोग सीट-बैल्ट कस लें। आप मे से जिन्हे कलकत्ते उतरना है, वे लोग कृपया अपना एम्बारकेशन कार्ड तैयार रखें।"

पालतू कुत्ते की तरह कमर में बैल्ट कसकर तैयार हो गया। प्लेन के अन्दर एक साथ बहुत-सी खट-खट आवाजें हुईं। बहुत से लोगों ने बैल्ट बाँधकर दुबारा आँखे बन्द कर लीं। दोपहर रात गए जितना सोया जाय सो लो। इसके अलावा कलकत्ते मे उतरना ही कितने लोगो को है। ज्यादातर लोग तो कराची होते हुए बेरूत चले जायेंगे।

बोतल के किक खाकर जरा खुमारी-सी चढ आयी थी। मैं छोटी-सी खिडकी से बाहर की ओर ताक रहा हूँ—कब कलकत्ते के दर्शन होंगे। कितने ही लोगों से सुना है, आसमान से कलकत्ता बहुत अच्छा दिखलाई देता है। पायलटों का कहना है 'रात का कलकत्ता लैंडिंग के वक्त एक न भूलनेवाला दृश्य है। हर रात को जैसे दीवाली मनायी जाती है।'

अब कुछ रोशनियाँ दिखलाई दे रही है। ठीक जैसे सिनेमा दिख रहा हो। एक लम्बे फ़ेड-आउट के बाद अंधेरे पर्दे पर फेड-इन हो रहा है, कई रोशनियाँ दिखलाई दे रही है।

सोचा, कुमार को जगा दूँ। वह अपने अरमानों के कलकत्ते को देख ले। इन लोगो का मिलन हो। लेकिन बेचारा सोकर अगर दर्द से छुटकारा पा रहा है तो क्यो नाहक उसे तकलीफ़ दूँ।

कलकत्ते की रोशनियाँ अब करोडो दीपपुजों की तरह दीख रही है। इसमे की कुछ रोशनियाँ ज़रूर ही राजवल्लभ साहा बाई लेन की होगी। हज़ारों राजवल्लभ साहा लेनों को मिलाकर ही तो यह कलकत्ता बना है। दूर से इस झुड को कलकत्ता कहते है। नीचे आने पर कलकत्ता कही दिखलाई नही देता। तब या तो श्यामबाजार दिखलाई देता है या बागबाजार या श्यामपुकुर या कासुन्दी या भवानीपुर या रासबिहारी। हो सकता है कुमार इन सब बाजारो और लेनों को जोडकर कलकत्ते का हिसाब लगा ले। लेकिन भाई, यह अपने बूते का रोग नही है।

मुझे और ही चिता सताए थी। जरा ठीक-ठाक करना पडेगा। इसके बाद अमेरिका मे जो आदते डाल आया हूँ उनका कोई इतजाम करना पडेगा। यहाँ स्पोर्टिग स्पिरिटवाली बात नही है। सब कुछ मिलेगा लेकिन पैसे फेकने पर। पैसे के बदले तुम्हे इद्रिय-सुख देने के लिए हजारो लडकियाँ कानून को ठेगा दिखलाकर पुलिस की परवाह किए बिना बैठी है। धार्मिक स्थान है न, इसीलिए यहाँ बिना पैसे कुछ भी नही होता, कोई कुछ भी नही जानता। बगैर पैसे दिए तुम मंदिर मे भगवान के पास भी नही जा सकते। पैसा होगा तो सुन्दर लडकियो के बाप तुम्हारे बाप के पावो मे अपनी लड़कियों के फ़ोटो लिए लोटेगे। पैसा होने पर सिनेमा के पोस्टरो पर तुम्हारा नाम रवीन्द्रनाथ से भी ऊपर लिखा जाएगा। दुनिया का सारा नंबर एक माल यहा इस इडिया मे, भगवान के इस ख़ास महल में, पैसे होने पर तुम्हे मिल जाएगा।

मुझे अच्छा लग रहा है। एअरोड्रोम पर इस वक्त दर्जनों लोग इरा

प्लेन के मुसाफिरो का स्वागत करने के लिए खड़े होंगे। ज़रा देर बाद जैसे ही बोईंग ७०७ दमदम की जमीन छुएगा, कितने नाटक खेले जायेंगे। निमाई मुकर्जी टुलटुल के माँ-बाप के पास खडे होकर अपना रग जमाने की कोशिश करेंगे। इन्द्राणी सेन भी अपने पति के सामने तरह-तरह की एक्टिंग करेगी। और मै साला देख-देखकर हँसूंगा। अच्छा ही हुआ कि ह्विस्की जरा ज्यादा हो गई। नही तो भली चंगी हालत में यह सब देखकर वाकई दिमाग खराब हो जाता। ये सारे मजे देखने के बाद अपना खेल शुरू करना पडेगा। इंडिया मे किसी को पता नहीं चलना चाहिए कि अनिर्वाण चटर्जी अमेरिका मे ग़च्चा खाकर भाग आया है।

फिर से कोई धंधा देखना पडेगा। देखते-देखते कितने साल गुज़र गए। और कुछ साल बाद ही तो आँखो मे जाली पड़ जाएगी, खून और पेशाब मे शूगर हो जाएगी। प्रोस्ट्रेट ग्लैड्स बढने लगेगे। रक्तचाप ताड़ के पेड के सिरे पर जा पहुँचेगी, इन्द्रियाँ मारवाडी कपनी की बनाई गाड़ी की तरह झझरा हो जाएँगी, सिर्फ परेशान करेगी, किसी काम नही आएँगी। इसलिए भाई उससे पहले ही जरा ऐश की माईलेज बढा लूँ, नही तो बुढापे मे अफसोस की सीमा नही रहेगी।

कुमार तभी मेरी ओर मुडा। फिर मेरी ओर देखता रहा। "मास्टर साहब क्या सोच रहे है ?" उसने पूछा।

"वह सब तुम्हारी समझ में नहीं आएगा। तुम्हारे आगे दूसरा ही सपना है। तुम्हे अब काफ़ी मुसीबतों का सामना करना है।"

मुझे चुप देखकर कुमार ने कहा, "बडी उत्तेजना-सी हो रही है। कुछ देर बाद इंडिया की ज़मीन पर पाँव रखने को मिलेगा जहाँ मेरे पिता का जन्म हुआ था। मास्टर साहब माँ-पिताजी को एअरपोर्ट से ही एक पत्र लिखूँगा।"

"हाँ, ज़रूर लिख देना।"

"आपके बारे मे भी लिखूंगा। सारे रास्ते आपने मेरा कितना खयाल रखा।"

मुझे याद आया, मेरी जेब मे आईलिन की लिखी चिट अभी तक पडी है — कुमार का खयाल रखना। मैंने कहा, "हाँ, लिख देना कि जो बन पडा देश के प्रति अपना कर्त्तव्य निभाया। लेकिन तुम्हारे पिता ने अपनी जन्मभूमि के लिए उससे कही ज्यादा किया है।"

प्लेन अब चील की तरह शून्य मे कलाबाज़ी खा रहा है। इस कलाबाजी के माने ही है घूम-घूमकर रनवे का सिरा खोजना। उसके बाद ही हवा भरे रबर के मोटे-मोटे पहिए तेजी से टारमैक के रनवे का चुम्बन करेंगे। लम्बे विरह के बाद आलिंगन। उसके बाद विहंग रुकेगा और फिर हम लोग उतरेंगे।"

मैंने कहा, "कुमार तुम्हारे पॉव की हालत अब कैसी है?"

लेकिन उसका जवाब नही सुन पाया। अचानक एक कान फाड़ने-वाली आवाज सुनाई दी। लगा जैसे तीखी आवाज़ की आरी से हमारे टुकडे-टुकडे हो जाएंगे। धक्का कितना भयानक था, यह बात अगर सेफ्टी-बैल्ट न होती तो शायद और भी अच्छी तरह पता चलता। पेट के पास असहनीय यत्रणा से सारा बदन थर्रा गया। कुछ देर के लिए जैसे होश-हवास खो गए। उसके बाद सुना 'आग, आग'।

पुरुष, नारी और शिशु हर गले से आग-आग की आवाज़ फैल गई।

कैप्टन कॉकपिट से चीख रहा था—हम गहरे अँधेरे मे दुर्भाग्य से रनवे से भटककर और कही उतर आए है। आप लोग एमर्जेसी विडो खोलकर फौरन नीचे कूद जाइए।

अन्दर धुँए के गुबार भर गए है। अन्दर, बाहर हर जगह दर्दनाक चीखे और चीखें। सारी बत्तियाँ गुल हो गई है। टॉर्च जलाकर दो-चार लोगों ने लात मारकर एर्मजेन्सी विन्डो खोल ली। बाहर अँधेरे में यात्री एक के बाद एक कूदने लगे।

सेफ़्टी-बैल्ट खोलकर मै भी टटोलता आगे बढ़ने लगा। लेकिन मुझे

बडी हँसी आ रही है। अँधेरे मे एक भोंदू-सा आदमी घबडाई आवाज़ मे कह रहा है, ज़रा रास्ता छोडिए—प्लीज़। निमाई मुकर्जी की आवाज है। जिबह होने से पहले बकरे की तरह गिड़गिड़ा रहे है मुकर्जी। विडो के पास जाकर कूदते डर लग रहा है। मुझे अचानक न जाने क्या सूझा, पीछे से ज़ोर की एक लात जमा दी। मुझे भी मजा आया और निमाई मुकर्जी की जान भी बच गई। और भी कई लोग चटपट कूद गए।

ना ी और शिशुओं की चीख़ो से कैसी एक भयानक परिस्थिति हो गई'। फिर भी लग रहा है जैसे यह सब जैसे किसी अंग्रेज़ी सिनेमा की शूटिंग हो। हर क्षण लोग कूद रहे है। नीचे से भी चीखे सुनाई दे रही है।

और धुआँ क्रमश जैसे और भी घना होकर मेरे फेफडो को जकडे ले रहा है। उसी अनुपात मे जैसे मेरे बचने का आग्रह बढ रहा है। मुझे कूदना ही पड़ेगा। मैने भी कूदने का निश्चय कर लिया।

मुसीबत, लगता है अकेली नहीं आतीं। खुद भी जान कैसे बचाऊँ सोच ही रहा हूँ कि छाती के पास जैसे एक बिच्छू घुस आया। वही सुर-सुर कर रहा है। साले बिच्छु को और कोई वक्त नही मिला। इस मुसीबत के वक्त परेशान करने आ गया है।

एअर हॉस्टेस छोकरी अभी भी विडो के पास खडी ड्यूटी बजा रही है। लोगों को नीचे कूदने में मदद कर रही है। मुझे देखकर बोली, "यंगमैन, डर की कोई बात नहीं है? कूद पडो, आग क्रमश बढ रही है। किसी भी क्षण पूरा प्लेन फट सकता है।"

"लेकिन मेरी जेब मे बिच्छू घुस आया है। जहरीला बिच्छू!"

छोकरी मेरी बात समझ नही पाई। उसने कहा, "कम ऑन! जमीन पर कूदकर बिच्छू निकाल लेना।" कहकर वह खुद कूद पडी।

मेरा सिर चकरा रहा है। धूर्तराज अनिर्वाण चटर्जी के पॉकेट मे ही साला बिच्छू घुसा है। जेब मे बिच्छू तो था नही जेब में तो वेणी-

माधव की पत्नी आईलीन की चिट थी "कुमार इंडिया जा रहा है। —उसके पिता की इच्छा है कि और देरी न की जाए। उसका ख्याल रखना।"

मेरा सिर बुरी तरह घूम रहा है। मैं अपनी नजरों के सामने वेणीमाधव, आईलीन, द्रुमोप्यूलस और वेणीमाधव की मृतशय्या पर पड़ी, माँ को देख रहा हूं। लेकिन कुमार नहीं है। कुमार कहाँ है? याद आया उसके पाव में तो चोट थी। मेरी वजह से ही तो हांगकांग में उसका पैर जख्मी हो गया। वह भी तो नहीं निकल पाया होगा।

मैं गुंडे-बदमाश टाइप का लड़का रहा हूं। मुझे दुनिया में किसी का डर नहीं है। साँप और बाघ की भी परवाह नहीं करता। लेकिन बचपन से ही बिच्छू से बड़ा डर लगता है। बचपन में एक बार बिच्छू ने काट जो खाया था। उसके बाद मे ज्यादा उद्दंडता करने पर पिताजी कहा करते थे, 'ठहर तो सही बिच्छू को बुलाता हूँ'।

मेरा जी जोर-जोर से रोने को कर रहा है। मेरी देह सामने की ओर बढ़कर कूद पड़ने को कह रही है। और बिच्छू है कि पीछे जाने की जिद पकड़े है। आगे बढ़ते ही काट खाएगा। बिच्छू के काटने पर कैसा दर्द होता है, मुझे अभी तक याद है। बिच्छू के डर से मुझे फिर वापस आना पड़ रहा है। अँधेरे और जहरीले धुएँ को चीरता मैं वापस अपनी सीट पर आ पहुँचता हूँ। मेरी आँखें, मेरी पूरी देह जली जा रही है। मैं अंधकार में भटक रहा हूँ—कुमार कहाँ है। कुमार क्या कूद पड़ा है? कूदेगा कैसे? उधर उस कोने में बेहोश पड़ा है। वेणीमाधव और आईलीन की उम्मीदों का सहारा इंडी!

यह साली किस मुसीबत में फँसा मैं! मेरी जेब में एक बड़ा-सा बिच्छू छटपटा रहा है। मेरे चूँ-चपर करते ही काट खाएगा। वैसे मैं जिन्दा रहना चाहता हूँ। लेकिन बिच्छू मुझे डस रहा है। भारत के लिए मुझसे कुछ करने को कह रहा है। इससे तो मैं कुमार को क्यों न घसीट लाऊँ। छोकरियों की संगत में अपने शरीर पर काफ़ी अत्याचार

करने के बावजूद अभी भी थोड़ा दम है।

मेरे सिर मे असहनीय दर्द हो रहा है—जैसे एक साथ सैकड़ों हथौडो से पीटा जा रहा हो। जैसे अपनी मर्जी से एक जलते फर्नेस के अदर घुस आया हूँ। मैने कुमार की अर्धचेतन देह को उठा लिया है। उसे घसीटते-घसीटते एमर्जेन्सी विन्डो की ओर बढ रहा हूँ।

कुमार कह रहा है, "मास्टर साहब मुझे छोड़कर भागिए, नही तो आप भी मुसीबत मे पड जाएँगे।"

लेकिन मेरी जेब मे बैठा बिच्छू मुझे अभी भी कोंच रहा है—जरा भी इधर-उधर की कि काटा—मै इस हालत मे भी समझ रहा हूँ। बिच्छू कह रहा है, "तुम्हे अपने पिता की बात याद नही है? हरेनचन्द्र के लडके हो न?"

बिच्छू ने मेरे मुंह से कहलवा लिया, "कुमार, इडिया को मेरे से ज्यादा तुम्हारी ज़रूरत है।"

आग और भी फैल गई है। हाँफते-हाँफते मै विन्डो के काफ़ी नज़-दीक आ गया हूँ। मुझे काफी खुशी हो रही है। बिच्छू भी खुशी से चीख रहा है। अँधेरे में रोशनी की राह खोजने निकला, मै व्यर्थ होकर जैसे खुद ही मशाल हो गया हूँ।

कुमार पता नही क्या कह रहा है। मुझे सुनायी नही दे रहा। मै उसे घसीट रहा हूँ। लेकिन मेरा दम घुटा जा रहा है। मैने कुमार को बाहर धकेल दिया। और जेब मे बैठा बिच्छू साथ ही साथ कहाँ गायब हो गया?

मेरे चारो ओर आग है। मै अभी ज़िन्दा रहना चाहता हूँ लेकिन रास्ता नज़र नही आ रहा—हर-हराकर मेरे ऊपर छत गिर पडी है, रास्ता बन्द हो गया है। अचानक मुझे पिताजी का चेहरा दिखलाई दिया।

दहकती आग की लपटों ने हरेनचन्द्र की संतान को अपनी चपेट मे ले लिया है। देह की अकथनीय यंत्रणा के बीच जैसे मुझे अचानक

'बोधोदय' हो रहा है। दूर खड़े मेरे पिताजी और माँ देख रहे है, उनका अनिर्वाण दीपशिखा में परिवर्तित हो रहा है।

दैनिक अख़बार से…

दमदम के नजदीक ध्वंस हुए बोइंग विमान के एक सौ यात्री सौभाग्य से बच गए। इस प्लेन के विशेष यात्री अमरीकी समाजसेवी कुमार राय ने मुझे बतलाया है कि मुझे बचाने की कोशिश करते हुए मेरे सहयात्री अनिर्वाण चटर्जी ने अपने प्राण खोए। इसी प्लेन के एक और यात्री अध्यापक निमाई मुकर्जी का कहना है कि श्री चटर्जी दुर्घटना के दौरान शराब के नशे मे पूरी तरह अप्रकृतिस्थ थे।

० ० ०